६५६

1864

राम राम

...कीवल्लभौ बिजयेते ❀

श्रीस्वामी अग्रदास जी महाराज कृत

अष्टयाम पदावली

संग्रहकर्ता—
श्रीसीताराम रहस्य विकासक
आचार्य प्रवर अनन्त श्रीस्वामी अग्रदेवजी के वंशावतंस
अनन्त श्रीस्वामी सियाशरणजी महाराज (मधुकर)
तच्चरणारविन्द भ्रमर

१०८ श्रीस्वामी जानकीशरण जी
महाराज (मधुकर)

प्रकाशक—
बाबू बिश्वनाथ (श्री वैदेही शरण जी)

सुपुत्र—बाबू श्री ईश्वरी प्रसाद
(श्रीजनक नन्दनी शरण जी) श्रीवैष्णव
सारानगर। बीकानेर। राजस्थान

सं० २०१५

अ१८३

भूमिका

श्री सम्प्रदाय रहस्याचार्य प्रधान श्री अनन्त कोटि श्री स्वामी अग्रदेवाचार्य महाराज के भाव में बिलीन अवस्था की यह पर बाणी से अपने स्वरूपावेश के रंग से प्रगट हुये हैं। इन बाणियों में प्राकृतिक छन्दों वा मात्राओं का दोषारोपण नहीं हो सकता है। क्योंकि वेद तो--त्रैगुण्य बिषय है जैसा कि गीता अध्याय दो श्लोक ४५ में कहा गया है-भाव के अन्दर तुरीयावस्था प्राप्त हो जाने पर फिर आत्म परमात्म साक्षात्कार सुख की धारा में जो जो भगवत्लीला दर्शन होती हैं वहीं प्रारब्ध शरीर के जबान से उच्चारण हो जाने पर लोक पावनी अमृतधारा बन जाती है। अन्यथा संसार के अनाथ जीवों को गुरु वर्ग कैसे उद्धार कर सकेंगे ? क्योंकि विपरीत बुद्धि से संसार में मोहित हुये मनुष्यों को भगवत सन्मुख करना आचार्यों की येही बाणियों का काम है अज्ञान अन्धकार दुःखमय संसार से निकाल कर ज्ञान प्रकाश आनन्दमय शृष्टि में चेतन आत्माओं को ले जाने का गुरुवर्गों के हाथ में यही एक मात्र उपाय है। श्री गोस्वामी जी ने विद्याभिमानियों के अभिमान को नष्ट करके जीवों को भगवत सन्मुख किया है। और अग्रस्वामी जी ने भगवत सन्मुख जीवों को अपने नित्य प्रीतम के पास का सुख आनन्द दिया है। यही बाणी प्रमाण है। इन अमृत बाणियों का मैंने बहुत जगह से संग्रह किया है। परन्तु मुख्य संग्रह मुझे एक बहुत पुरानी प्रति जो कि चिरान स्थान छपरा के महाराज श्री स्वामी जीवा राम (युगल प्रिया)

जी के शिष्य श्री जानकी बिहारी शरण जी का संग्रह किया पुराना लेख जिस में प्राचीन सभी पूर्वाचार्यों के पदों का संग्रह मेरे पास यह पोथी है। जिसको मैं केवल दूर से देखने मात्र के लिये दिखा सकता हूँ क्यों कि यह पोथी अति जीर्ण अवस्था में रुई के समान कमजोर कागज हो गया है। यद्यपि इस पोथी का लेखन काल सम्बत १९२८ बि० कार्तिक अमावस्या रविवार का है तो भी अरक्षित अवस्था में मुझे मिली है। अस्तु और भी मैंने जहाँ तहां के फैले पदों को विचित्र रूप में भी पाया है सब का संग्रह करके एकत्रित किया है। बहुत दिन से मेरी इच्छा होने पर भी श्री युगल सरकार ने आज अपने कृपापात्र इन बाबू श्री ईश्वरी प्रसाद (श्री जनक नन्दनी शरण) जी को अपनाया है। सभी सम्प्रदाय पूर्वाचार्यों के भावाभिमानी रसिक वैष्णवों की यथार्थ सेवा को दिया है। इस सेवा का फल इन बाबू को येही पदों का स्वाद प्राप्त होवै, यही आशीर्वाद है। धन्य हैं ? जगत में मनुष्य शरीर का फल भगवत तत्व प्रवर्तक आचार्याभिमान प्राप्त हो।

इस पदावली में श्री अग्र स्वामी जी के पदों की प्रधानता है। जो कि संख्याओं से संयुक्त है। अतिरिक्त और भी बहुत से आचार्यों व महात्माओं की वाणी भी उपयुक्त जगह पर दे दी गई है।

जानकी शरण मधुकरिया

श्री चारुशीला बाग, श्री जानकी घाट श्री अयोध्या जी।

श्रीसीताराम चरण चिन्ह ।

श्रीराम चरण चिन्ह चितु सब बिधि सुख छाजै ।
रघुबर के चरण कमल अंकन जुत निरखु अमल ॥
धारे पद चिन्ह राम संतन हित काजै ।
श्रीराम चरण दाहिन सोइ सीता पद वाम चिन्ह ॥
दिश चारि स्वस्तिकाष्ट कोण श्री बिराजे ॥ १ ॥

हल मूसल सर्प बाण अंवराष्ठपद्म यान ॥
बज्र जव उर्द्ध रेख कल्पबृक्ष छाजैं ॥
अंकुश ध्वज मुकुट चक्र सिंहासन दंड चमर ।
छत्र पुरुष मालाजव दक्षिण पद भ्राजें ॥ २ ॥

गो पद छिति घट पताक जम्बूफल अर्द्ध इन्दु ।
शंख षट कोण त्रय गदा जीव विन्दु राजै ॥
सरजू शक्ति सुधाकुंड त्रिवली मीन पूर्णचन्द्र ।
बीन वेनु धनुष तूण हंस चन्द्रिकाजै ॥ ३ ॥

सीय राम चरणौ शुभ चिन्ह अष्ट चालीस नित ।
चिंतत शिव नारद सनकादिक अहिराजै ॥
श्रीरामचरन ध्यान धरत गोपद इव जगत तरत ।
विरति ज्ञान भगति भरत सजत सत समाजै ॥ ४ ॥

अयोध्या

श्री रामानन्द सम्प्रदाय रसिक पूर्वाचार्यों के मतानुसार

श्री सीताराम जी के मुख्य अष्ट पार्षद

जै मिथिलाधिप नन्दनी जै अवधेश किशोर।
जैति चारुशीला अली सकल सखिन शिर मौर॥ १॥
जै जै जै हनुमान श्री श्रीप्रसाद अवतार।
चारुशिला सर्वेश्वरी तींन रूप निजधार॥ २॥
जै 'श्रीसुभगा भरत' तन सेवा समय सुधार।
'महाबिष्णु' अवतार महि 'सनक' 'सुशीला' चार॥ ३॥
जै 'विमला' अरु 'लक्ष्मणा' 'लक्ष्मण, रूपहुँ धार।
'नारायण' पुनि 'शेष, तन सेवा समय बिचार॥ ४॥
जै 'हेमा' 'श्री, 'रिपुदमन, तीन रूप सुख सार।
दम्पति सेवा सुरुख लखि 'भौमा; 'सुक मुनि धार॥ ५॥
सूर्य अंश 'सुग्रीव, 'शिव' 'शंकर्षण, अवतार।
जैं 'अतिशीला, प्यारी पिय सु 'वरारोहा, धार॥ ६॥
जयति 'बिभीषण, 'भीषणा, विश्वमोहनी, शक्ति।
'पद्मसुगन्धा' लाड़िली लाल प्रिया वर भक्ति॥ ७॥
'भूशक्ती' 'भूधरण की 'सुलोचना' सिय प्यारि।
जयति 'जृम्भणा' 'हरिप्रिया' 'जाम्बवान' तनुधारि॥ ८॥
जयति क्षमावति क्षेमदा 'क्षेमा' क्षमावतार।
अंगद विद्या वारिधर 'वागीशा' वर चार॥ ९॥
वसु पारषद रसाल हिय रसिकन आँख सुचार।
लखै लखावत लक्ष लख अक्ष आँख अधिकार॥ १०॥

॥ इति॥

❀ श्री सम्प्रदाय रहस्याचार्य स्वामी अनन्त ❀
१००८ श्री अग्रदेव जी महाराज

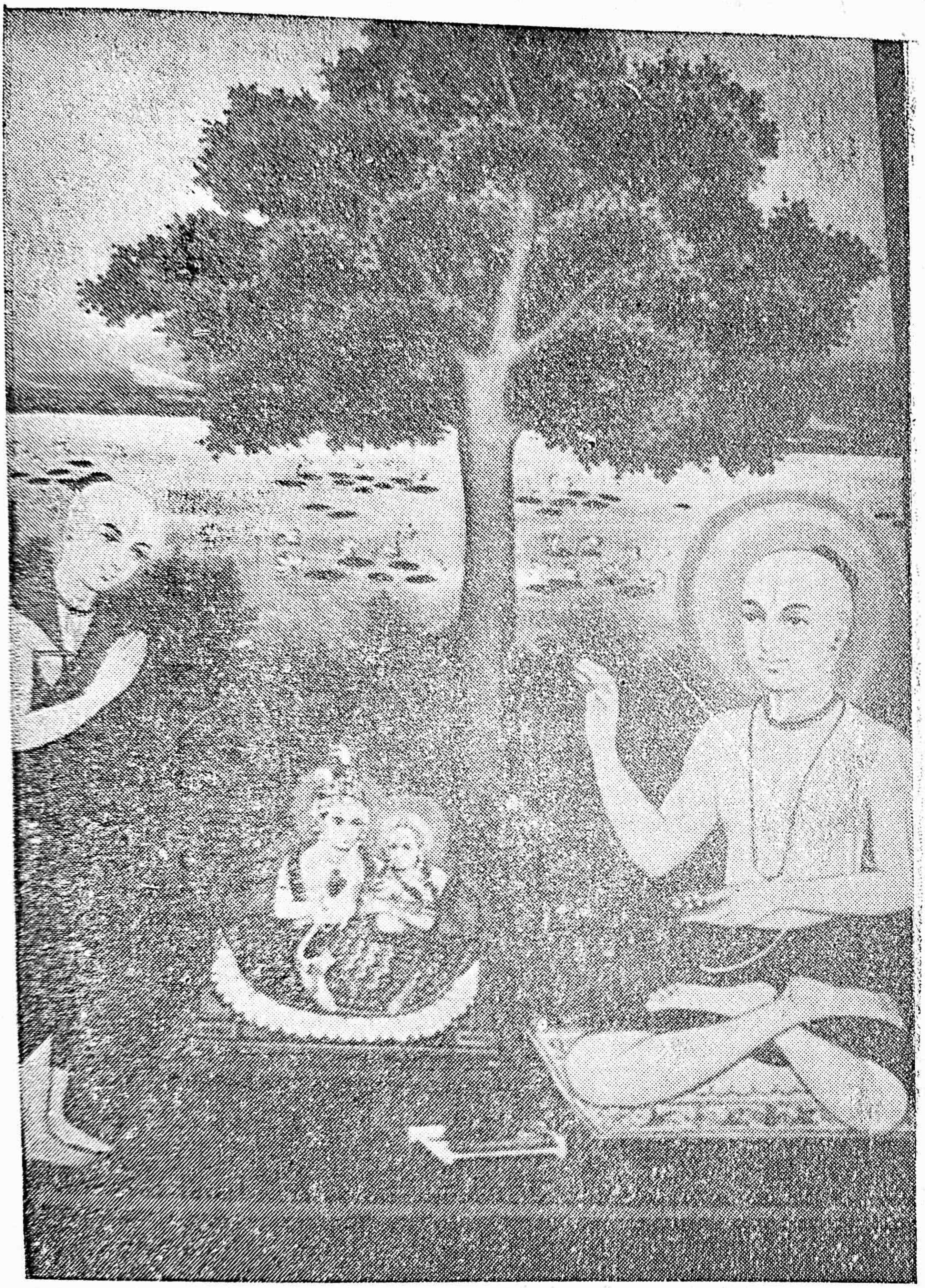

सेवा में—सर्वज्ञ शिरोमणि भक्तमाल रचयिता—
१०८ श्री स्वामी नाभा (नारायण दास) जी

श्री अग्र स्वामी अष्टयाम पदावली

प्रातः उत्थापन

बाजत कोशलेश जु के द्वार।
घनरव दुन्दुभि शंख सहनाई रैन रही बड़ि चार ॥
उठो सखी अब मज्जन करिये सजि सोरहो शृँगार।
भूषण रचि अंग धारि कै चलिये चारुशिला दरबार ॥
महल २ प्रति जागि उठी सब निज २ सौज सम्हार।
रसिक अली परिकर स्वामिनि ढिंग बैठत करिके जुहार ॥

—०❀०—

चलीं सखि रंग भवन को जात ॥
परिकर स्वामिनि संग विराजत गज गामिनि के व्रात ॥
नेह भरी रस छाकी अँखियां दर्शन को अकुलात ॥
रसिक अली पिय प्यारि रूप गुण गावत पुलकित गात ॥

—०❀०—

शैनभवन के द्वार प्रातही चारुशिला सखि जन्त्र बजावैं।
रूपविलाश बिनोद विविधि सुख सहचरिहरषि २ हियगावैं।
सुनिमृदुगान मनोहर बचननि सारिकासिय रघुवरहि जगावैं।
जागो मेरे प्यारे सियावर रसिक अली दर्शन अब पावैं।

—०❀०—

भोर भयो जागिय पिय प्यारी रघुवर जनक दुलारी ॥
उदित अरुण दुति तिमिर विगत निशि मुदित नदत नभचारी।
रैन शैन बश नींद नैन लखि मुख दुति दिव्य तिहारी ॥

चोरी चन्द्र उड़गण दीपक छोड़त सो भय भारी।
सौरभ स्वास नासिका मुखगत ताहि लेन अलि भारी॥
गुन्जत पुन्ज २ कुन्जन में सुमन सुगन्ध बिसारी।
चित गति चिन्तक चतुर चारिका सब विधि सौंज सुधारी॥
निज २ थल ठाढ़ी गुन गावत सेवन शील अपारी।
कोटिन उमा रमा सचि शारद अवर अमित सुर नारी॥
निज २ लोकनि ते सब आईं करन उपायन धारी।
सुर गन्धर्व यक्ष किन्नर नर पन्नग सिद्ध कुमारी॥
रमणी रघुनन्दन तव सिय ढिग आई करन जुहारी।
मोर चकोर हंस पारावत सारस युग सुक सारी॥
शैनभवन दिशि चितई रहे मुख वचन कहत पिय प्यारी॥
रसिक अली मृदु गान सुनत पिय जागि जगावत प्यारी।
मृदु कर कंज केश कबरी के बन्धन कशत बिहारी॥

—०❀०—

सोइ गइ प्यारी भोर भयो जगावत प्रीतम प्यारो।
करसरोज फेरत मृदुगातन मुद्रित नैन निरखि सुख भारो॥
लै लै कर कर धरत हीय पर नेह बढ़ो उर अधिक उदारो।
कीजै रस बतिया उठि प्यारी सोइ रही का नैन उघारो॥
प्रीतम बचन बाल रविकर छुइ प्यारी दृग सरोज उजियारो।
बदन सरोज बिलोकि उठी हंसि प्यारो हंसि कह बसन सम्हारो॥
लै दर्पण ढिग आइ अली इक वदन विलोकत रति सुखसारो।
श्री चारुशिला उत्थापन आरति करत रसिक उर मोद अपारो॥

—०❀०—

श्री अग्रपद (१) रागललित—

रजनी अल्प राम उठि बैठे सोइ गई सीता ह्वै गयो भोर।
बार बार विधु बदन विलोकत मानो पीवत सुधा चकोर॥
हरे हरे चुम्बत चमकन डर कर सों चिबुक चारु टकटोर।
जागि परी जानकी ताहि छिन आलस पगे नयन की कोर॥
बहुरि अंक आरोपि पिया को गौरस्याम शोभित इक जोर।
अग्रअली ऐसी छबि छाड़े धिक जाके आवै उर और॥

श्री अग्रपद (२)

गावति श्रीप्रसाद सिय प्यारी छबि छकि मतवारी॥
वींण बजावति मधुरे स्वर सों मधुर ताल सुठिकारी।
सुनि जागे पिय प्यारी प्रीतम आलस भरे खुमारी॥
विनदुकूल बैठे पलँगा पर काहू सुधि न सम्हारी।
प्यारी लट छुटि सोह उरज पर जनु नागिन दुतिकारी॥
भरि अनुराग परस्पर दोउ अधरामृत रस पियत खिलारी।
दन्त नखोछत दोउ अँग झलकत मनु युग द्विरद बैठि लड़ि भारी॥
कबहुँ प्रेम भरि लपटि झपटि दोउ करि विपरीत क्रिया रसकारी।
प्रीतम प्यारी को कह प्यारे प्यारो प्रीतम को कहि प्यारी॥
चारुशिला सुख पाय अग्र अलि यह सुख झाँकति झांझरि द्वारी।
जाहि न यह सुख निरख्यो नैनन जप तप योग व्यर्थ श्रमकारी॥

श्री नाभापद

जागे रघुनाथ जानकी आलस भारी॥

सर्मित है सुरत राग अरुन लोचन अति जम्हात-
ग्रीवा भुज उभै मेलि प्रीतम पिय प्यारी ॥
लटपटि शिर पाग लाल कुमकुम बिन्दु मध्य भाल-
वर्षा रितु दिन कर मानो अर्भक उन्हारी ॥
जालरंध्र निरखत मुख कुवरी नक वेसरसों अटकी लट-
श्री कर प्रिय आपने सँवारीं ॥
सुन्दर सुहागनि जश पूरिरह्यो विश्वामध्य स्ववश किये-
रामचन्द्र नहिं त्रिभुवन अस नारी ॥
गौर श्याम मनोभिराम वारि फेरि कोटि काम-
जीवन फल देखि २ नाभौ वलिहारी ॥

—०❀०—

आज सखी दम्पति राजत भोर ।
दशरथ सुत अरु जनक नन्दनी विश्वविलोचन चोर ॥
अलसानी दीन्हे गलबहिंया अति सनेह दोउ ओर ।
मायल करत करत हिय घायल चपल चखन की कोर ॥
नयन कटाक्ष हास मृदु उज्जल बाँकी भौंह मरोर ।
रामप्रसाद प्रिया प्रीतम दोउ विलसत नवलकिशोर ॥

श्री अग्रपद (३)

भोरभये नव रंग महल में राजत जनक लड़ैती लाल ॥
श्याम गौर अंशन भुज दीन्हे कछु आलस युत नयन बिशाल ॥
प्रेम मगन दोउ उरझि रहे हैं कनक लता जनु डार तमाल ॥
अग्र सहचरी तन मन वारत उझकि झरोखै झाकति बाल ॥

श्री अग्रपद (४)

उठे दोउ अलसाने परभात ॥

दशरथ सुत श्रीजनकनन्दनी सौंधे भीने गात ॥
बिमलादिक सखि चवर दुरावति हरषि निरषि मृदुगात ॥
अग्र अली को श्रीरज दीजै सकल भुवन के तात ॥

श्री अग्र पद (५)

आरति हरन आरती राम की।
सुरतरु सुधा धेनु चिन्ता मणि वरषा पूरण काम की ॥
दीपावलि प्रतिबिम्ब अंगमें शोभा सब सुख धाम कीं ॥
अग्र अली वरनै युग चन्द पर जानकि जीवन नामकी ॥

श्री अग्र पद (६) राग देवगन्धार—

जीति आइ कामकेलि रामरंग राती।
जागी निशि चारियाम बार २ जम्हाती ॥
पल दे पद धरति धरनि अधर सुधा माती।
मन्डल भुज जोरि मोरि अँग अँग अँगुड़ाती ॥
टुटे उर हार चिकुर कंचुकि उलटाती।
अधरनि छत कल कपोल वनी पीकि पाँती ॥
नख सिख हरखात गात बानी तुतराती।
सीता छबि निरखि २ अग्र अलि जुड़ाती ॥

—०❀०—

श्री अग्र पद (७) रागललित—

रजनी जागे भामिनी आवत संग मधुप उचरत जय गान।
डग मगात पग परत धरनी, पर राम अधर रस किनो पान॥
आलसभरे एँड़ात जानकी मुदित मगन राखो पिय मान।
अंग २ ओधाहि देत सुख सर्वस अर्पि लियो रति दान ॥

सुवसकिये सुन्दरवर रघुपति त्रिभुवन युवती नहिंन समान
सहचरि सबै विलोकि विवश भई अग्र अली बलि वारति प्रान ॥

बाग विहार

बाग में विहरत राज कुँवर फुल बंगले छये नये वे ॥
जुही निवारी औ गुलक्यारी बेला फूलि रहे ।
खस खस की लागी टटिया सीतल भये गरमि गये वे ॥
सिय सुकुमारी पिय फुलवारी लता विता ननये वे ।
हौद हजारन प्यार भरे कल जल विच कमल छये वे ॥
सिया रसिकअलि अतर गुलावन सरस सुगन्ध भये वे ।
रुचि सो सींचति हैं सखियाँ मन भावत भये भये वे ॥

बशो यह सिय रघुवर को ध्यान ।
श्यामल गौर किशोर वयस दोउ जे जानहु के जान ।
लट लटकत लहरत श्रुति कुन्डल गहनन की झमकान ।
आपस में हँसि २ के हेरत खात खवात पान ।
जहँ वसन्त नित मह मह महकत लहरत लता वितान ।
विहरत तहँ दोउ सुमन बाग में अलि कोकिल कर गान ।
यह रहस्य सुख रस को कैसे जानि सकत अज्ञान ।
देवहुकी जहँ मति पहुँचत नहि थकि गये वेद पुरान ।

हिंडोल

श्री अग्र पद (८) देखो भूलत राघो डोल ।

जनकसुता लीन्हे संग शोभित गौर श्याम तन लोल ॥
हीरा पन्ना लाल पिरोजा रतन खचित वेमोल ।
क्रीडत राम जानकी दोऊ बाजौ दुंदुभि ढोल ॥
हँसत परसपर प्रीतम प्यारी आनन्द बढ्यो सचोल ।
अग्र अलि सुनि र सुख पावति बोलहि मीठे बोल ॥

—०❀०—

जै रहै अवधेश ललन मिथिलेश लली की जै रहै ।
पिय साँवरे सोहैं घटा सिय दामिनी सी छा रहै ।
बातैं मधुर रस रहसि के आनन्द जल बर्षा रहै ।
अति रंगभरे झूलै दोऊ दोउ ओर सखिय झुलावहीं ।
झोका सरस झुकि झूमि झुमि भूषण झमा झम बजि रहैं ।
चहुँ ओर से नागरि खड़ी बाजें सुमधुर बजावहीं ।
कोउ तान लेति तरंग सो चातक मयूरसि होइ रहै ।
तिरछी नजर हंसि हेरि हेरि फुलगेंद की चोटैं चलैं ।
श्री प्रेम अलि यह चाहती नित नैन में छाये रहैं ।

दतुवन

राम सिया पग धोवति अलियाँ ।
निजकर कमल सनेह सुरलियाँ ॥
मनुरवि किरण सुवर्ण सुपात्रनि कुडमल कर पंकज मनु कलियां ॥
विगसि मलति धोवति हिय लावति चूमति शीश नैन परसतियाँ ॥
मृग मद मलय कपूर सुकेशर सुरभित जल झारी कर धरिया ॥
अरुण पीत पुनि अरुण नील दल र विधु किरण कमल छबि छलिया ॥

गोद राखि सौन्दर्य चरण दोउ चिन्ह बिलोकति निज सुख थलियाँ ॥

श्री अग्र पद (९)

दतुबन करत दोउ मिलि जोरी ।
दशरथ सुत श्री जनक किशोरी ॥
मृग मद मलय कपूर सुवासित युगल दातुवन सखि दइ कोरी ।
इक प्यारी इक प्रीतम के कर मज्जन लगे दन्त सुख सोरी ।
हँसि २ मज्जन करत परस्पर बातैं करत मधुर मुसुकोरी ।
दन्तावलि झलकत दोउन के छिटकि रही कर चन्द करोरी ।
दोउ के दन्त धोवावत हँसि २ अग्र अली सन्मुख रस बोरी ॥

श्री अग्र पद (१०)

दन्त धावन—दतुवन करत सिया रघुराई ।
सुन्दर सुखद रसीली दतुवन रदन धरत छबि छाई ॥
जीभी कर जल परसत दोऊ मुख प्रक्षाल अंगुछाई ।
अग्र अली उरभी चितवनि में मन्द मन्द मुसुकाई ॥

मंगल

श्री अग्र पद (११)-मंगल करि शृंगार सुतन मंगल मई ॥
मंगल थार सजाई द्रव्य मंगल मई ॥
मंगल यूथ बनाई सखिन मंगल मई ॥
मंगल कर लिये सौज चली मंगल मई ॥
पहुँची हेमनिवास जहां मगल मई ॥
निज २ सखि लिये वाद्य बजावत रस मई ॥
गावन लगि बहु नारि राग मंगल मई ॥

आलस युत सिय प्यार जगे मंगल मई ।
सखि सब झाँझरि माह विलोकति सुख मई ॥
देखत युग विपरीत रहस मंगल मई ।
विनदुकूल झलकात गात सब रस मई ॥
लखि सखि सब सुख सिन्धु मगन मंगल मई ।
बैंठे दिय गलबाहि रूप मंगल मई ॥
पुनि दइ परश खोलि भांकि मंगल मई ।
सखि सब रूप निहारि वारि तन मन दई ॥
पुनि दोउ को बैठाइ चौकि रतनन मई ।
मंगल द्रव्य दिखाई प्यारी प्रीतम नई ॥
पुनि कोउ के श्रृंगार करी मंगल मई ।
मंगल भोग लगाइ शेष सखियन लई ॥
आरति करि पट वारि वारि मंगल मई ।
अँग अँग छबि अवलोकि सखिन वलि २ गई ॥
मंगलमय यह ध्यान अग्र जे गावई ।
पिय प्यारी रस महल टहल सुख पावई ॥ ११ ॥

श्री अग्र पद (१२) सुगन्धा छन्द—

मंगल आरति करि सखि राम रिझाइ कै ।
भूषण कछुक उतारहिं प्रभु मन पाइ कै ॥
कोइ सखि पट पहिरावहि दूसर छोरि कै ।
अष्ट कमल दल मणि चौकी दुइ जोरि धै ॥
द्वौ चौकी वसु २ सखी टहल चतुरि बड़ी ।
अष्ट कोण दल २ पर आयसु लखी खड़ी ॥

वागीशा, माधवी, प्रियाहरि, मनजीवा ।
नित्या, विद्या, सविद्या, कूटरूपा—सीवा ॥
आठौ मुख्य ढिगन ह्वै खड़ी सोरह सखी ।
अवरनि ते लै देहिं आठ कहँ मन लखी ॥
सिय चौकी पर मुख्य आठ सोरह सखी ।
जस रघुवर सेवा महँ तस सिय के लखी ॥
विमला, उतकर्षणी, क्रिया, योगा, प्रवी ।
इशाना, ज्ञाना, सत्या, सेवा करी ॥
आठ आठ जे मुख करहिं मन की लखी ।
समय समय सब लिहे अपर कोटिन सखी ॥
परम मुख्य सखि पाँच सुशीला, लच्छमना ।
हेमा, अतिशीला, सुचारुशीला मना ॥
पांचहुँ की आज्ञा सुसर्ब सेवा सुखी ।
अर्घ देति सखि अग्र राम सिय की रुची ॥

—०❀०—

रंग भरि जोड़ी सदा चिर जीवो ।
सदा विहार करो रंग मन्दिर रंग किशोर किशोरी ॥
सदा सुहागल के अनुरागिनि रंगे रहो बड़ भाग बढोरी ।
प्रिय के प्राण वसो सिय सुन्दरि सियमन स्याम वसोरी ॥
पियकी चाहसु चात्रिक लौं रहो सिय की मया स्वाति बर्षोरी ।
सिय मुख चन्द सुधा रस द्रवो नित पिय के नैन चकोरी ॥
हमरे नैन प्राण की सर्वस अधिक २ सुख रस सरसोरी ।
कृपा निवाश उपास महल की टहल लगी सो लगोरी ॥

तेल उबटन

श्री अग्र पद (१३) कवित्त—

श्री प्रसाद प्यारी और प्यारे और चारुशीला अंगन-
सुगन्धमय उबटनो लगावती।
दोउन के खुलेगात अंगन छवि झलमलात मानो शशि-
कोटि सुधा किरण को लजावती॥
निरखि २ सुभग गात आनन्द उर में नमात कोटिन-
रति काम आली दोउन पै वारती।
कोमल कर में सुधार उबटनो लै वार वार दोउन-
सखि हाथ अग्र देति रस भावती॥

श्री अग्र पद (१४) उबटन—

सिय प्यारे को (सखियां) लगावति उबटन।
पद्म राग मणि की चौकी पर दुग्ध फेन सम बिछे बिछावन॥
तापर स्यामा स्याम बिराजे कोटि मदन रति द्युतिन लजावन।
अति सुगन्धमय तैल नगायन तामें और मिलाय सुगन्धन॥
शिरष कुसुम हूं ते अति कोमल अंग २ सुकुमार निरखि तन।
लै उबटन कर चहत लगावन करन कठोर समुझि हिय धरकन॥
अति भयभीत सहमि सखि लगवति लखि अद्भुत-
छवि वारति तन धन।
कोइ सखि प्रीतम अंग लगावति अग्र लगावति प्यारिसुभगतन॥

श्री अग्र पद (१५)

उबटन करत रँगीली अलियां॥

युगल अली दोउ चरन लगावति अंग बिलोकति छलियां ॥
युगल २ सखि दोउ भुज मीड़त उर पीठन युग अलियां ॥
अग्र अली दोउ रसिक परस्पर मुख मीजत अलि बलियां ॥

श्री अग्र पद (१६)

उबटन करत सिया रघुराई ॥
सरस सुगन्धन बन्यो उबटनो लेकर उर सरसाई ॥
जोई २ अंग लगावत प्यारो सोइ प्यारी मन भाई ॥
अग्र अली के जीवन दोऊ निरखत दृग न अघाई ॥

श्री अग्र पद (१७) कवित्त—

सिया अस्नान उबटनाते अज कीन्हीं केतिक उत्तम नारी ।
तेई शील सुन्दर सौभागिनि बहुत गुनन के भारी भारी ॥
जानकि अंग तीरथ में न्हाय बाम भई जग में उजियारी ।
बनिता श्री रघुबीर वल्लभा अग्र स्वामिनी नहीं कोउ सारी ॥

जल विहार

श्री अग्र पद (१८)—मज्जन करत लाल सिय प्यारी ।
अष्ट कोन युग चौकी तापर दोउ दिशि कनक कि नारी ॥
बैठे पिय प्यारी तिन ऊपर अंगन द्युति अनुसारी ।
चहुँदिशिते जल यन्त्र सखी लिय बरषि सुरभि सुठि बारी ॥
उमगि २ जल धार लेत शिर हँसि मिलि करत खेलारी ।
मलि २ अंग सखी अन्हवावति' निरखत छबि बलि हारी ॥
मज्जन करि सर पैठि कलोलत भूषन बसन बिसारी ।
जल बिहार करि अग्र अली सब तट पट भूषन धारी ॥

श्री अग्र पद (१६)—मज्जन करत रसिक मनहारी।
सुभग सरोवर तामें दोऊ करिणीसंग करि रिव पिय प्यारी॥
सखिन सहित विहरत जलमाही बहुबिधि करत केलि रसकारी।
अंजलि भरि जल लेत परस्पर अखियन में मारत पिचकारी॥
बस्त्र झीन अंगन सब झलकत लखि २ दोऊ रसमतवारी।
करि मज्जन दोउ तट पर आये अग्र समय सम बसन सुधारी॥

यज्ञ

श्री अग्र पद (२०)—यज्ञ (सु) करत रसिक सिय प्यारो॥
सुरतरु तर मनिमय वेदी बिच दाहिन सिय पिय बाम। निहारो।
दाहिन इक अलिथार लिये कर पायस लै सिय पिय करधारो॥
द्वादश आहुति युगल मन्त्रसों जातवेद तिर्पित किय भारो।
हवन कुन्ड परिकरमा कीन्हें अग्र अलि के प्रान अधारो॥

दान

श्री अग्र पद (२१) कबित्त—
दिव्य मन्डप महा यज्ञ किय साजयुत दान दिय श्रुति सखी रूपआई॥
विप्र तनया कही सीय रघुवर लही हरदि दधि अछत लै छिटाई॥
धेनु भूषनवसन रत्न वासनअशन अन्न वाहन अगित दीनजाई॥
आनिध्वै अंग शृँगार दूसर किये पूजि पियप्यारी सबसखि सुहाई॥

पति पूजन

श्री अग्र पद (२२) शृँगार क०
प्यारी कटि सारी जरतारी सुधारी झीनी प्यारे कटि धोती-
सुपीली झलकारी है॥

प्यारी वक्षोज पर कंचुकी सुधारी झीनी प्यारे—
उर कंचुक सुमोतिन की धारी है ॥
प्यारी गले चन्द्रहार प्यारे गले मुक्तमाल अंगद औ--
पहुँची सुमुद्री नग जारी है ॥
चन्द्रिका शिपैंच पाग कानन में कर्नफूल कुन्डल--
अलि अग्र हाथ आपने सुधारी है ॥

—०❀०—

सियजु पिय पूजत प्रीति पली ।
यज्ञ दान करि हर्ष हृदय भरि जन जिय रंग रली ॥
मंगलमय शृँगार किये अलि प्रीतम प्यारि भली ।
निज २ सौज सजी सखियन युत पास पिया के चलीं ॥
चन्दन अतर धूप दीपादिक फूलन माल ढली ।
परिकरमा करि पिय बैठाये प्रिय सुख वेलि फली ॥
पुनि सखिगन पुजे दोउ प्यारे गान विनोद छली ।
आरति करि शौन्दर्य विलोकत वलि सुखमा सुथली ॥

कलेऊ

अग्र पद (२३)

करत कलेऊ मिलि दोउ प्यारे ।
जनक नन्दनी अवध दुलारे ॥
बरफी मोदक तपत जलेबी खाझा घेवर अति रूचीकारे ।
बीज पाक रसगुल्ला खुरमा मोहनभोग पूप रस दारे ॥
पूरी कचौरी मठरी पापरि गुझिया सोझा मिसरी डारे ।

और अनेक भांति के व्यंजन कनक कटोरन अग्र सुधारे ॥

सास ससुर पूजन

श्री अग्र पद (२४) राग मंगल—

अँग २ करि शृँगार सखिय सब साथ में ।
पूजन चलि सिय सासु प्रेम रस राग में ॥
पूजन के सब सौज साजि लिये थाल में ।
गावति नृत्यत चली सखिय उमगात में ॥
पहुँची सासु निवास अंग छबि को कहै ।
कोटिन रमा प्रकाश सिया द्युति अँग लहै ॥
देखि सासु अति प्रेम बातसल रस भरे ।
भरि अँकबार उठाय लेइ निज हिय धरे ॥
मस्तक को करिघ्रान बलैया लेइ के ।
इक टक मुख छबि निरखि अपनपौ भूलिकै ॥
सासु गोद ते उतरि सीय पूजन करी ।
षोडष भाँति बिधान प्रेमरस में भरी ॥
सासुन दई अशीश बधू अनु दिन बढ़ै ।
प्रीतमसँग अनुराग कबहु छिन नाघटै ॥
गंग जमुन नहि रहै जगत या ना रहै ।
अचल रहै अहिवात सिया पिया साथ है ॥
पूजन करि सिय सासु आइ निज महल में ।
प्रीतम करि आलींग अग्र सिय साथ में ॥

—०❀०—

मातृ पितृ दर्शन

श्री अग्र पद (२५)–रघुवर मातु महल को जात ॥

भरत लखन रिपुदवन साथ लिये और सखन के व्रात ।
कन्ठ सुभग गजमुक्ता माला शिर पगिया झलकात ॥
नख शिख साज श्रृंगार मनोहर सखन संग बतरात ॥
धनुष बान करमें सुठि सोहत अंग लखि मदन लजात ॥
मातु महल के पौरी पहुचे तुरंग उतरि चहु भ्रात ।
मातु समीप बैठि अनुजन युत करि प्रनाम नमि गात ॥
गोद बिठाइ लई कौशिल्या मुख चूमत हरषात ।
बालक वत करि २ के चेष्टा मातु गोद हलरात ॥
जननी देखि २ सुख फूलैं आनन्द उर न अमात ।
बहुतभांति पकवान मिठाई निज कर कमल खिलात ॥
करि कलेउ अम्बा प्रनाम करि संग सखन सबभ्रात ।
अग्रस्वामि निज महल पधारे प्यारि लपटि भरि गात ॥

बृहद श्रृँगार

सकल सुनारी प्यार परमभरि करत श्रृँगार सँवारि युगलवर ।
लहंगा ललित कलित कटि धोती कुच कंचुकि वागोवर नागर ॥
युगल कमल पद बिमल महावरि रचित सुघर लखि अरुण नैनकर ।
पद पावन पद पान मनोहर पदज विभूषण पायल नूपुर ॥
गुल्फै कमल जानु कटि किंकिनि क्षुद्र घंटिका माल करनिगर ।
उदर रोम राजी त्रिवली वर नाभि सुभग सौंधी सींचत तर ॥

मलय कपूर सुकेशर लेपन प्रिया उरोज सुप्रीतम उर पर ।
पदिक हार माला मोतिन की चम्पकलीं दुलरी तिलरी ढर ॥
मणि माला मुक्तावलि कण्ठीं चौकी चौक सु राम सुभग धर ।
भुज प्रलम्ब अंगद युत भूषण चारि चारु चूरी मुदरीपर ॥
युगल वदन सुख सदन मनोहर चित्र कपोल चिबुक बेंदी थिर ।
दशनदमक दुति बीरी रोचिक बिम्ब बिलज्जित मृदु अरुणाधर ॥
श्रवण तरोने फूल झूमका कनक लता मनु फूल फरी फर ।
लाल श्रवण कुण्डल धरि सुघरनि शशि मण्डल मनो कीन्ह मकर घर ॥
नाशा लटकन सहित नथुनियाँ दृग अन्जन खंजन तिमि नाशर ।
भाल विशाल युगल शीश भित अर्धचन्द्र उपमा जग की हर ॥
टीको वन्दी शीश फूल मणि क्रीट चन्द्रिका जटि मुक्ता लर ।
अलक झुकाई इन्दुसदन जनु सुधा लोभ नागिनि न सकीटर ॥
मुक्तन मांग भरीं गुहि बेनी कछु उपमा आई मेरे उर ।
शीश सुहाग पांति मनु उबरी परी सुपाठि गुमान गहर टर ॥
दोउ कर सुमन छरी उपरना सारी सरस फैल फबि सुन्दर ।
कृपा निवास श्रीजानकि वल्लभ दुलरावति सहचरि रंग मंदिर ॥

—○❀○—

अली शृँगार भवन मधि राजत ।
ललित विभूषण अरस परस दोउ अँग २ प्रति साजत ॥
बैठे चारु रतन चौकी पर सुखमाशील अपार ।
जनकलली रघुलाल सलोने रूप अमित रतिमार ॥
नवल २ सखि करकंजन लिये दिव्य विभूषण ठाढ़ी ।

कोउ दर्पण कोउ अंग राग लिये प्रीति अलौकिक बाढ़ी ।।
सजि शृँगार दिव्य सिंहासन बैठे छवि रस राशी ।
चर्वण पान दशन की चमकनि मृदुल बचन रसभाषी ।।
छकी सखी पिय प्यारि रूप रस गावति कोकिल बानी ।
भोजन मधुर कराई सखि अचवाइ दिव्य सरि पानी ।।
रसिक अली आरति सजि ल्याई चौक साथिया पूरी ।
मंगल कुम्भ रुचिर दीपावलि सौज सकल रचि रूरी ।।

शृंगार आरती

सखि आरति करैं रस प्रेम भरी सिय रघुवर को शृँगार करी ।।
मनिमय थार सखिन कर राजत बाती रवि शशि दुति निदरी ।
बाजहिं ढोल निशान दुन्दुभी शंख झांझ करताल घरी ।।
नाचहिं गान करहिं सखि थेइथेइ सुमन माल मणि होत झरी ।
रामचरण सियराम रूप लखि सखि आनन्द रस सिन्धु परी ।।

सभा कुन्ज विहार

श्री अग्र पद (२५) रागललित—

मुकुट उद्योत होत, दिन दिशितैं, ब्रह्म काल नहिं पावत ब्रह्मवित ।।
आतुर अमर अगमनैं धावत, रामचरन बन्दन निद्रागत ।।
उठि आवत जो जहाँ तहाँ ते भोर भये हेलें परसन कों ।
भ्रामक भोर भुली ऋषि सन्ध्या दिव वाशी आये दर्शन कों ।।
निवसत निकर असुर सुर नर मुनि कीट घोष जय घोष अपार ।
अग्रदास बलि पाद पीठ पर वन्दी वेद करत कै चार ।।

श्री अग्र पद (२६)

चंचल नारि तुम्हारि कीरति दशोदिशा को धावत।
सुर नर असुर लोक लोकन में रघुपति तुव यश गावत ॥
घर घर वार फिरति कुलटा ज्यों निकट नाहि सुचि पावत।
विसद विशाल जशहि विस्तारत यह अचरज मोहि आवत ॥
पतिव्रत प्रण छोड़े है यद्यपि सबही याहि सुहावत।
सन्तन जीवन मूरि सदाही अग्रदास जिय भावत ॥

श्री अग्र पद (२७)

अकरन न्याय कियो यहि धाता।
अति ही चतुर सृष्टि रचना को अग्र सोच समुझत अति घाता ॥
फणिपति रघुपति को यश सुनि कै जोपै मूड़ डुलावत।
फूट जाय ब्रह्माण्ड खण्ड सब बहुरि करत दुख पावत ॥
याते उरग श्रवण बिन सिरजे जगत भंग डर आवै।
विशद श्रुत श्री अग्र स्वामि के कौन न ग्रीव डुलावै ॥

चौपड़ खेल

श्री अग्र पद (२८)

चौसर खेलत रसियालाल, प्यारी संग सुख आल ॥
सारी फल जरिदार मखमली स्याम पीत सित लाल ॥
पाशा हीरा के अति सुन्दर युग दल सखि कर चाल।
श्री प्रसाद प्यारी दिशि चातुरि चारुशिला उत वाल ॥
दम्पति टोल हनें गनि गोटी कौतुक कर रसियलाल।
चतुराई चित चोरत खेलत दोऊ नैन विशाल ॥

प्यारी हँसि प्रीतम को हेरत कर से न पाशा चाल।
देखि लाल ठगवग से रहि गये कुच विच इन्द्र सुजाल॥
भूलि गये चतुराई आपनि जीत लई सिय वाल।
हारि लाल सिय अधर चूमि लई अग्र धूर्त बड़े लाल॥

गुरुजन स्वागत

श्री अग्र पद (२६)—कीर निशा की कहत केलि।
गुरु जन सुनत सकुच सीता के भूषण चापि चून दइ मेलि॥
डारयो व्याज बीज कह्यो मुंजो तो वदिहों जान्यो जो स्वाद।
सुक सम्भ्रम में परयो विभाषनि भूलि गयो पूरव अनुवाद॥
नागरि नारि उक्ति यह उपजी वैदेही वर राज कुमारि।
अग्र अली कह अचरज नाही सखीरीझि रहि वदन निहारि॥

श्री अग्र पद (३०)

राज कुँवरि पूजति मंजारी।
कहा न कीजै अपने कारन गूढ़ भाव इक वात विचारी॥
निशा घटत सुख हानि होत है बाल वैर कीनो तमचारी।
याही दोष विलारी पाली पय प्यावत राघो की प्यारी॥
जो चुप किये रहैं वह कुक्कुट तौ कतभोर होय कहिहारी।
निद्रा भंगसमर रस समित अग्रति दुखित श्रीजनक दुलारी॥

श्री अग्र पद (३१) राग कान्हरो

नर वर राम तिया वर सीता।
या जोरी को उपमा नाही धाता निरखि रह्यो भय भीता॥
सोच सन्देह करत चतुरानन दूजे काहू सृष्टि चलाई।

उभय लोक पर्यन्त फिरयो पै यह मूरति गति कहूँ नपाई ।।
वेद विचार कियो जब ब्रह्मा नेति २ इनही को गावत ।
रामजीइष्ट जगतपति नियँता सोइ अग्रदास जियभावत ।।

श्री अग्र पद (३२) राग कान्हर—

राम से राम सीता सी सीता ।
शिव बिरंचि शारदा शेष शुक पटतर खोजि कलप बहु बीता ।।
सुन्दर शील सुहाग अमित गुन अखिल लोक नरनारी जीता ।
अग्र स्वामि स्वामिनी उजागर नेति २ श्रुति गावत गीता ।।

श्री अग्र पद (३३)

जगत जपत रघुनाथ नाम सब राम जपत सीता को सुमिरन ।
रामचन्द्र को ध्यान धरत मुनि बसत जानकी रामचन्द्र मन ।।
शिव बिरंचि के धनुषचरन धन रघुवर के मैथिली महा धन ।
परम हंस कुल राम भजन भर अग्र स्वामि इक पत्नी को पन ।।

श्री अग्र पद (३४)

युवती गुण जानकी पतिव्रत भाग सुहाग सुभगता सागर ।
सत्य सौच जित क्रोध दयायुन कीरति बिशदलाज मृदु आगर ।।
एक नारि व्रत न्याय अमितगुन रिझय राम नयना वर नागर ।
त्रिया तिलक निर्दूषण भूषण अग्र स्वामिनी जगत उजागर ।।

श्री अग्र पद (३५) राग कान्हर—

साचो सुहाग जानकी तेरो रघुवर भल वश कीन्होरी ।
परसत पानि और नहि परस्यो इक ललना व्रत लीन्होरी ।।

तोसो नारि नहीं त्रिभुवन में पिया प्रेम रस भीनोरी ।
अग्रस्वामि मन वच क्रम तोको रीझि अलिंगन दीन्होरी ॥

श्री अग्र पद (३६) राग विलावल—
इक नारी व्रत न्याय धर्‌यो ।
अखिल भुवन अच्युत नहि हरि को निर्णय यह रघुनाथ कर्‌यो ॥
बनिता रतन शिरोमनि सीता शील सुजश सबहीं प्रचुर्‌यो ।
ता तन मगन भये तनमयता पैठि राम नाहि न निकर्‌यो ॥
कहा भये जो कोटिक पतनी सुखस्वारथ एको न सर्‌यो ।
रूप उदारविनय लावणि गुण अग्र स्वामि मनो रथौ भर्‌यो ॥

श्री अग्र पद (३७)
मेरी स्वामिनि सुहाग अद्वितिय पटरानी ।
रघुपति को अवर नारि सपने न सुहानी ॥
लावनि गुन रूप शील सबहि लोक तानी ।
अग्रस्वामि सियाराम विदित जग कहानी ॥

श्री अग्र पद (३८)
रूप रासि सीता दुलहिन को देखन आई गुरुजन नारि ।
उठत नहीं अतिकाल ह्वै गयो पढि मोहिनीमूढ़ मनो डारि ॥
रामचन्द्र मिलिवे कंह आतुर वासु कि शेष कठिन भयो भारि ।
अनंग पीन अकुलाइ दण्डकर त्रासत तुरगनि बुद्धिविचारि ॥
रवि पूर्वज हमरो मंगल रथ प्रेरन को सुधि बुधि जु विसारि ।
ये अशु दर्शन उनके नाते वेगि चलो कुल जानि दुखारि ॥
सहि नहि सकत वियोग पलक को अस्ता चलतन रहै निहारि ।

मदन तरंगनि मगन अग्रप्रभु पाई जीवन जनक दुलारि ॥

सखियों का गान

श्री अग्र पद (३९) राग ललित—

बदनारबिन्द पर बलि २ कियो प्यारी ॥
कुन्द इन्दु विद्रुम जु बिम्ब मिलि मीन मृगलीन खंजन छबि हारी ।
नासिका कीर तिल पुहुप दाडिम दसन हँसन-
बिगसन कमल कहा करै सारी ॥
भाल दीपत मुकुट भौंह राजीव धर,
भृकुटि सर चाप मनमथ सत हारी ॥
चिबुक त्रिभुवन चारु सुभग सुकपोल तर,
आनन्द कन्द विधिना सँवारी ।
राम सुखदैन मधुबैन स्वामिनि अग्र जानकी नारि बर नृप दुलारी ॥

श्री अग्र पद (४०)

राम रमणि गज गवनि अवनि जा चम्पक बरनि मीन मृग नैनी ।
बदन इन्दु अरबिन्द कुन्द दुति अधर बिम्ब विद्रुम पिक बैनी ॥
सीता के शौन्दर्य शील वृत्त उपमा सकल सकुच भई गैनी ।
बनितावर त्रैलोक्य उजागर अग्र स्वामि उर आनन्द देनी ॥

श्री अग्र पद (४१) राग सारंग—

सब की शोभा सिमिट लई ।
वैदेही को बदन बिलोकत अन्तर भूत भई ॥
गजगति हंस जंघ कदली कटि केहरि दसन अनार ।

कुच नारंगि कान्तिकल धौतहि मुख विधु अम्बुज चारु ॥
ग्रीवा कम्बु कपोत अधर विद्रुम दुति नासा कीर ।
नैना मीन नागिनि वेनी अहि कोकिल गिरा गम्भीर ॥
श्रीहत भये सकुच सब जित तित तप व्रत जाय लियो ।
कोउ वन कोउ आकाश अग्नि जल कोउ पाताल गयो ॥
वलि अरु वरुण वह्नि वासव मिलि वदत भये यह बात ।
सीता शरण गहो सब तजि कै अग्रदास वलि जात ॥

श्री अग्र पद (४२)

मेरी स्वामिनि को अविचल सुहाग ॥
जाको परसि अवर नहि परसी रघुपति दिन २ बढ्यो अनुराग ।
सीतासी सिरजी न सपतनी केलि अकंटक लग्यो न दाग ॥
अग्र स्वामि स्वामिनी अहर निसि सुख विलसत दोउ भूरिभाग ।

श्री अग्र पद (४३)

सर्वोपरि मम स्वामिनी, राघो की प्यारी ॥
जाको परसि अवर नहि परसी व्रत लीन्हो इक नारी ॥
स्ववश किये दशरथ नृपनन्दन नाहिन कोऊ सारी ॥
वैदेही के कमल बदन पर अग्र अली वलिहारी ॥

आखेट लीला

श्री अग्र पद (४५)—राग खेटक

देखु सखी मृगया खेलन को राम लला चले जात ।
भरत लखन रिपुसूदन संग में सखन सोह बहु भ्रात ॥

चतुरंगिनि सेना संग लीन्हे दुदुंभि ध्वनि घहरात ॥
नखशिख सुन्दर गात मनोहर लखि दुति काम लजात ।
धनुष बान कर में सुठि सुन्दर कटिभाथा चमकात ॥
चपल तुरंग नचावत हँसि २ शोभा बरणि न जात ।
अग्र नयन सर नारिन वेधत लिये जात मन सात ॥

श्री अग्र पद (४६)

रघुवर लागत है मोहि प्यारो ।
अवधपुरी सरयू तट बिहरै दशरथ प्रान पियारो ॥
कीट मुकुट मकराकृत कुन्डल पीताम्बर पट वारो ।
नयन विशाल माल मोतिन की सखि तुम नेक निहारो ॥
अँग २ रूप अनूप बन्यो है चित्त से टरत न टारो ।
माधुरि मूरति निरखो सजनी कोटि भानु उजियारो ॥
जानकि नायक सब सुखदायक गुण गण रूप अपारो ।
अग्र अली प्रभु की छबि निरखी जीवन प्राण हमारो ॥

श्री अग्र पद (४७)

श्री राघो जिकि आज सजी असवारी ।
दशरथ राज कुमार लाडिले शोभा न्यारी न्यारी ॥
सजे तुरंग रंग राजन के भीर गजेन्द्रन भारी ।
जगमग झूल जरी की सोहैं रतन जड़ाव अँवारी ॥
धूम गरज सो भरत जी आये श्री रघुनाथनिहारी ।
होत कुलाहल लखन लाल के रिपु सूदन छबि न्यारी ॥
हरषे देव सुमन बहु बरषे जय २ कार उचारी ।

ब्रह्मादिक दर्शन को आये मोहत वदन निहारी ॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा चन्द्र कला उजियारी ।
अग्र अली प्रभु की छवि निरखे चरण कमल बलिहारी ॥

श्री अग्र पद (४८)

अब देखो राम जी ध्वजा फहरानी ॥
झलकत ढाल फरकते नेजा गरद उड़ी असमानी ।
लक्ष्मण वीर बालि सुत अंगद हनूमान अगवानी ॥
कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण त्रिभुवनपति सैठानी ।
जा सागर को गर्भ करत है तापर शिला तराई ॥
तिरिया जाति बुद्धि की ओछी उनकी करत बड़ाई ।
भुव मण्डल से पकरि मंगैहों ओ तपसी दोउ भाई ॥
हनूमान से पायक उनके लक्ष्मण से बलि भाई ।
जरत अग्नि में कूदि परत हैं कोटि गने नहिं खाई ॥
मेघनाद से पुत्र हमारे कुम्भकरण बलि भाई ।
एक वार सन्मुख होइ लरिहैं युग २ होत बड़ाई ॥
कहति मन्दोदरि सुनु पिय रावण तोहि मम एक न भाई ।
राति को सपनो ऐसो भयो है सोनेकि लंक लुटाई ॥
बन्दर एक लंक बिच आयो घर २ धूम मचाई ।
बाग उखारि समुद्र में डारे लंका आगि लगाई ॥
गरबी रावण गरव न कीजै गर्वहि लंक लुटाई ।
जाय मिलो रघुनाथ कुँवर से लंक अचल हो जाई ॥
इक लख पुत्र सवा लख नाती मौत आपनी ठानी ।

अग्र स्वामि गढ़ लंका घेरे अजहु न चेत्यो मानी ॥

श्री अग्र पद (४६)

जब कर राघो जी बान धरैंगे ।

संग रघुनाथ भीर बनचर के कपिदल कोपि चढ़ैंगे ॥

स्याम घटा घन झुकि अँधियारी सूरज गगन छिपैंगे ।

पचरंग बाण राम लक्ष्मण के सागर तीर रुपैंगे ॥

जा सागर को गर्भ करत हैं तापर सेतु बधैंगे ।

जामवन्त हनुमान नील नल महाधुनि गर्ज करैंगे ॥

रात भयानक सपना देखी लंका कोट लुटैंगे ।

नाम विभीषण बन्धु तुम्हारे रघुपति जाय मिलैंगे ॥

मेघनाद से पुत्र तुम्हारे वे नहिं धीर धरैंगे ।

कुम्भकरण बल बन्धु तुम्हारे रण में जूझ मरैंगे ॥

महिरावण से योधा मरि हैं लंका नाश करैंगे ।

सहस योगिनी मंगल गावैं खप्पर वारि भरैंगे ॥

दशशिर और बीस भुज तुम्हरे एकहि वाण हरैंगे ।

जो नारद मुनि मुखते भाषी भारत राम करैंगे ॥

कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण रघुवर नाहि फिरैंगे ।

अग्र स्वामि कोलै मिलो जानकि किहु विधि विघ्न टरैंगे ॥

श्री अग्र पद (५०)

हे यान चढ़ें रघुनन्दन आय हनुमत चंवर दुरायोरी ।

जामवन्त सुग्रीव बिभीषण अरु अंगद मन भायोरी ॥

करत पुनीत देव सब हरपे दण्डक वन प्रभु आयोरी ।

देखि सिया दण्डक वन शोभा ऋषि विचरैं भय त्यागोरी ॥
चरित पुनीत किये रघुनन्दन अवध निकट हरि आयोरी ।
उतरे पुष्प निकट सरयू के रघुपति आज्ञा पायोरी ॥
चलत तृषित अति गये सकुच मानो मरुत जलद जल लायोरी ।
व्याकुल अंध अवध जेहि कारण उदित अरुण होइ आयोरी ॥
होत अवध आनन्द बधाई सखियन मंगल गायोरी ।
सुख अवलोकि कोक जिहि लाजै रघुपति पुरी सुहायोरी ॥
चर अरु अचर हर्षवँत जहँ तहँ रघुपति कीरति गाये री ।
द्विजन सहित आये नृप द्वारे अग्र दास गुण गायोरी ॥

श्री अग्र पद (५१)

सीताराम अवधपुर बासी नित दरसन उठि पावै जी ।
रघुवर लक्ष्मण भरत सत्रुहन शोभा वरणि न जावै जी ॥
संग सखा सर्यू तट बिहरैं राम लखन दोउ भाई जी ।
सुन्दर बदन कमल दल लोचन उर वनमाल सुहाई जी ॥
अवधपुरी नर नारी निहारे निरखि परम सुख पाई जी ।
मातु कौशिला करत आरती अग्र दास बलिजाई जी ॥

श्री अग्र पद (५२)

(आवत) रघुनाथ अनुज संग लीन्हे, खेल किये चौगानै ।
अश्व सुगज रथपागे, बने बिचित्रै बागे, —
अरुण पीत सित चँवर छत्र वर वानै ॥ खेल० ॥
राज कुमारीं अति सुकुमारी झरोखन झाकति बिबिध—

मनोरथ ठानति, करत नयन मधु पाने ॥ खेल० ॥
कोउ वारत तन, कोउ वारत मन, कोउ वारत धन—
निरखि नयन छबि, पुष्पाञ्जलि बरषानै ॥ खेल० ॥
मंगल भाजन लै नींराजन, सब सुखसाजन प्राण—
मिले जनु, जननि निरखि मन माने ॥ खेल० ॥
कियो प्रवेश सदन सीता के कलप वेलि तरु रंग—
सीता के, अनंग केलि रस रहस अग्र गुण गानै ॥ खेल० ॥

श्री अग्र पद (५३)

करि सिकार आये रघुनन्दन संग सखन सब भ्रात ॥
पितु समीप में जाय जुहारे सुत लखि अति हुलसात ।
निज कर कमल उठाय गोद धरि चूमत लखि श्रम गात ॥
अति दुलार से पूछत पुनि २ खेटक के कुशलात ।
कहि सुनाय खेटक की बातैं सुनि २ पितु पुलकात ॥
पितु प्रणाम करि निज बैठक में आय गये रसरात ।
रतन जड़े चौकी पर बैठे बैठक में सब साथ ॥
श्रम सीकर मुख पर राजत जनु कमल कोष हिम पाँत ।
चहुँदिशि सखासौज सब लींन्हे सब सुन्दर सुठि गात ॥
कोउ मुख ऊपर मधुर पवन करि निरखि २ बलि जात ।
बहु मेवा पकवान मिठाई सुरभी जल शितलात ॥
भरि २ थालन में सजि २ के अम्बा भेजि बहुभाति ।
भ्रात सखन युत पावन लागे हसि २ बहु बतरात ॥
एक २ सखन से बूझत प्यारे घर २ के सब बात ।

करि भोजन अचवन को करि कै पानखात मुसुकात ॥
गानवाद्य होवन लागी पुनि आनन्द कहि नहि जात ।
पुनि प्यारी सुमरन हो आई मिलन हिये उमड़ात ॥
गान वाद्य को करि समाप्त पिय शीघ्र चले अकुलात ।
अग्र स्वामिनी से मिल के हिय अति किन्ही शितलात ॥

श्री अग्र पद (५४)

रघुनन्दन प्रभु आवै ।

उपवन बाग शिकार खेलि के चढ़े तुरंग नचावै ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुन्डल उर मणिमाल सुहावै ।
कटि पर लट पट पीत बिराजै कर गहि बाजि उड़ावै ॥
चतुरंगी सेना संग सोहति पचरंगधुज फहरावै ।
बजत निशान भेरि सहनाई गदग गगन मँह जावै ॥
बन्दी जन गन्धर्व गुण गावत भावत प्रभु हिं रिझावै ।
सुरनर मुनि ब्रह्मादि देवता इन्द्र पुहुप झरि लावै ॥
अवधपुरी कि वधूटि अटा चढ़ि निरखि परम सुख पावै ।
मातु कौशल्या करत आरती अग्र अली वलि जावै ॥

श्री अग्र पद ५५

राग टोड़ी—देखुरी नीके रघुनन्दन ॥

सीता कहति सखी अपनीसो रसिक राय शिर मौर स्यामतन ॥
दृष्टि चलत नहि इत उत सजनी रूप रासि सो मोमन फन्दन ॥
अग्र स्वामि सौ मोह वढ्यो अति ज्यों चकोर चन्द हिअभिनन्दन ॥

श्री अग्र पद ५६

प्रीतम मग जोहति सिय प्यारी ॥
कनक महल के खिरकी पर ह्वै सखियन युत निरखति सुकुमारी ॥
रहि न जात प्रीतम विनु देखे गुणन सुमिरि पिय विरह निवारी ।
छिन २ विरह के उठत खुमारी विकल प्राण मनु मीन बिचारी ॥
कोइ सखि कहि पिय आवत हैं येह आतुर ह्वै तिहि ओर निहारी ।
तेहि छिन प्रीतम आय अग्र अलि भरि अँकवार मिली सिय प्यारी ॥

श्री अग्र पद ५७ राज भोग

छबीले दोऊ आवत भोजन शाल ।
झूमत झुकत चलत मतवारे रसिक रँगीले लाल ॥
करत कटाक्ष परस्पर लपटत दीन्हे गरभुज माल ।
हँसत हँसावत रस उपजावत संग सहचरी जाल ॥
प्राण प्रिया कछु कहत नवेली हरषित होत निहाल ।
अग्र अली बैठे दोउ प्यारे निरखत भोग विशाल ॥

श्री नाभा दोहा

चरण पादुका सुमन युत चढ़ि दीन्हे गल बाँह ।
पंगत शाल अनूप जहाँ चले जानकी नाह ॥
चन्दन सिंहासन सुभग मणिमय जटित जराय ।
सिय पियवर आसीन तेहि दीन्ही सखिन रजाय ॥
निज २ पीढ़िन सहचरी भई सकल आसीन ।
सो अवसर लखि ऋषि वधुन आनि थार धरि दीन ॥
कंचनथार अनूप अति ओदन मध्य सुबास ॥

व्यंजन चारि प्रकार के परसे सहित हुलास ॥

श्री अग्र पद (५८)

जेंवत कुँवर रसिक रघुनन्दन रस आगरि नागरि सिय प्यारी।
छप्पन चार छऊ रस उपरस भोग सौंज सुखकारी ॥
चिन्तामणि चौकिन पर कोमल दुग्ध फेन सम सारी।
तिन ऊपर रुचि जानि युगल की रचना न्यारी न्यारी ॥
पल्लव फल (रसमय) अंकुर कन्दावलि मेवा मधुर सुधारी।
चटनी निकर अचार मुरब्बा अमित भांति तरकारी ॥
परसति परम किशोर नागरी जानि युगल रिझवारी।
सुरभिवन्त शीतल सरयू जल मन्त्रित मंगल झारी ॥
रस भीनी बतियन बिरमावति प्यावति निजकर वारी।
अंचल विजन कमल कर सारति अति मृदु मंजु बयारी॥
दम्पति एक थार निज मंदिर जेवत मोद कन्द मृदुभारी।
अग्र अली के जीवन दोऊ तृण तोरति बलिहारि ॥

श्री अग्र पद (५९)

मिलि जेवत श्री रघुबीर बने सखि संग लिये मिथिलेश लली।
भुज अंश दिये बहियां जुलसै बिहसैं मृदु मंजु अनंग रली ॥
करि कौर सिया मुख देत पिया कहि स्वाद सराहत भाँति भली।
रस के निधि दम्पति रंग भरे निरखैं चहुँ ओर किशोर अली ॥
मणि मन्दिर में झलकै प्रतिविम्ब मनोज के मानो विहार थली।
अवधपुर नित्य बिहार करैं लखि अग्र अली जुकि आश फली ॥

—०❀०—

दोउ जेंवत हास बिनोद मगन रस रंग उमंग अँग २ परसै।
परसि परसि पर स्वातिक मातिक ग्रास उठे मुखना परसै ॥
स्वकर सुधारस कौर भियाको-लाल जिमावत हित दरसै।
दृगछोर सिहाय सुभागभरे कर चूमि महा मनमें हरषै ॥
गीत वाद्य नव तान तरंगनि संग सुहागिनि सुख सरसै।
कृपानिवास प्रसाद मिलै मोहि जाको महा मुनि मनतरसै ॥

श्री नाभा दोहा

हँसि कह लाल सुनाइके अवला कंठ सकेत।
भोजन को अतिशय सिथिल हासबिलास सचेत ॥

भोजन करि बैठे पावत पान ॥

गोरी नवल किशोरी सियजू प्रीतम श्याम सुजान ॥
कोउ अलि फूल माल पहिरावति अतर करावति घ्रान।
बीडी वदन अधर छबि झलकत मन्द मन्द मुसुकान ॥
प्रीतम हँसि प्यारी तन हेरत अरुण नयन अलसान।
प्यारी कर गहि उठे लाल तब रसिक अली सुखदान ॥

दिन का शयन

श्री अग्र पद (६०)

रसिक दोउ शयन कुंज को जात ॥

भोज करि शुचि पान सुचर्वित मन्द मन्द मुसुकात।
आस पास सब सहचरि राजैं सुभग मनोहर गात ॥
पहुँचे शयन महल के भीतर शोभा बरणि न जात।

अति सुगन्ध चहुँदिशिमहँ महँकत भँवर झुन्ड मड़रात् ॥
बैठे पलका पर दोउ प्यारे करत व्याग रस बात ।
कोइ सखि मधुरे वीण बजावत गान करत स्वरसात ॥
पुनि दोउ मिलि अलसान लगेसखि परदा करि चहुँ कात ।
पौढ गये जब दोउ पलका पर अग्र चरण सुहरात ॥

आरती

शयन समय सुख आरति कीजै ।
लड़िलि लाल निरखि छवि लीजै ॥
युगल चरण मुख चन्द्र विलोकनि ।
नेमन (नैनन) सो अमृत रस पीजै ।
रामसिया सुख सेज पधारे महामोद आनन्द रस भीजै ।
जैति प्रसाद निवास अलीछवि एक पलक न्यारो नहीं कीजै ॥

श्री अग्र पद (६१)

देहरी धशत जब जेहरी देखि मन डगि गयो उठी उरलाई ।
अति आदर सो भरि अँकवारी प्राणनाथ पलका पधराई ॥
आगत स्वागत बारि बारि तन वीरि सुहाथ बनाइ खवाई ।
बार बार आलिंगन चुम्बन मनहु रंक निधि पारस पाई ॥
वचनामृतसो सींचि विबिधि बिधिजनक कुँवरि रघुराइलड़ाई ।
जालरंध्रह्यों निरखि अग्र अति कामकेलि सुख बरनि न जाई ॥

दिन का जागरण

भयो समय सुख शैन ते जागो नव सुकुमारो ।

मैन मथनि सुखपुंज सुरति पथ सखि जन हित हिय हेत अपारो।।
सौंज लिये अलियां चहुँ ओरैं कुमुद विपिन मुखचन्द उघारो।
शोन्दर्य सुखद मनोहर दोऊ अमिय दरश तन परशि उबारो ।।

जागिये सियाराम पियारे ।

सखि जल बसन असन सुपास लिये जो चाही सो मांगिये।
पवन करहि मधुरे स्वर गावहि पिय प्यारी रस पागिये।
प्रेम सहित सखि अरज करति है पिय आलसको त्यागिये।
अगे रामचरण करुणा निधि निज २ कृत सखि लागिये।

श्री अग्र पद (६२)

दिवस मधि सोइ उठे सिय प्यारे।

उथापन के समय समुझि सखि चहुँ दिशिते जुरि सारे ।।
मधुरस्वरन गावत सुरसावत मधुर यन्त्र करधारे।
अलसाने उठि वैठि लटपटे अंशभुजा दोउ धारे।।
अंग वसन सजि सेज तरे पग पावड़ि मखमल धारे।
मुखगज्जति पटपांछि श्रृंगारति अलक सुछवि घुँघवारे।।
असन बसन भूषन मनिबारे आरति पलंग सुधारे।
न्योछावरि तृण तोरि आरती करत सुगान उचारे।।
करि आरती प्रणाम अग्र दोउ दम्पति जैति उचारे।
उतरि पलंगते बाहर बैठे दिव्य सिंहासन प्यारे।।

श्री अग्र पद (६३)—

दिवस उठि सेज रहे अलसाय।

आरति करि पुनि उतरि पलंगते दिव्य सिंहासन आय।
मनिझारी अचवाय सखीसब निज अंचल अँगुछाय॥
रतन कटोरन मेवा मोदक निज कर प्रियन पवाय।
मिश्रित कन्द अधावट पय सुरभित सखिझारिपियाय॥
अँचवावति हँसि हेरि कटाक्षन सुछबि निरखि बलिजाय।
अतर पान मालाउर अरुझनि अग्र सुकर सुरझाय॥

दोहा

तेल उबटि अन्हवाय के कियो दिव्य शृँगार।
ऋतु बसन्त अनुरूप बन दम्पति बैठे प्यार॥
कछु शृँगार फूलन कियो अन्न पाय जल प्याय।
पान अतर आरति नमन बागविहार सिधाय॥

शृँगार बन

बाग विहार—श्री अग्र पद (६४)

बाग विहार करन चले प्यारे।
श्री नृपनन्दन जनकनन्दनी रूपगुणन मेंदोउउजियारे॥
सखियन करि शृंगार अंग २ पुनिपिय प्यारीके शृंगारे।
यूथ २सखि चलि संग में ह्वै गज रथ ऊपर असवारे॥
कोउसखि शिरपरछत्र किये हैं शुभ्रचँवर कोऊलिये करधारे।
अपर सखी लिये बहुत सौंज कर पहुँचे जाय बाग के द्वारे॥
सखियनयुत गज रथते उतरे बागेश्वरि सुनि दौरि सिधारे।
यूथ अनेक संग सखियन लिय पूजन के सामा करधारे॥

पट पावड़े दै भीतर लैगई रतन वेदिका पै वैठारे।
धूप दीप आदिक विधि करिकै सखियन युत पूजे दोउ प्यारे ॥
पुनि दोउ चले बाग विहरन कौं रोसनपर दोउ फिरतखिलारे।
कहुँ दोउ पुष्प उतारि कमल कर थाक थाक धरि न्यारे न्यारे ॥
रचि २ भूषण बिबिध रंग के निज २ चतुराई विस्तारे।
प्यारी पहिरावति प्यारे को प्यारे प्यारी के अंगधारे ॥
मोर हंस सुक सारि पढावत मृगी झुण्ड रस चरित अपारे।
कुन्जन मधि कहुं छूट फुहारे ग्रीषम पावस सम सुखसारे॥
कुन्जेश्वरि फल ढेर दिखाई पावत प्रेम प्रमोद अपारे।
फल रूपक हँसि अंग वखानत लपटी झपटि कहुँ कुन्जनिहारे॥
कहुँ फूलन केगैंद उछारत कहुँ जलकेलि करैं मत वारे।
बिबिध बिहार बाग वन कुन्जन करि पुनि अग्र महल पगधारे॥

किये दोऊ राजत सुमन शृँगार।

वैठे कनक महल आगन बिच सुमन गुच्छ कर धार ॥
प्यारी के शिर सुमन चन्द्रिका पियशिर कलँगि सुधार।
रसिक अली सिय रघुवर छबि पर वारिय बहु रति मार ॥

अग्र पद ६६

हेम महल केसुभग कुन्ज में प्रिया प्रेम लम्पट सुकुमारे।
कबहूँ इकटक मुखछबि निरखत श्रमसीकर लखि करतबयारे॥
कबहूँ निजकर अलक सँवारत अधर चूमि अतिहोत सुखारे।
कबहूँ निजकर चरण कमल लेइ सुख निरखत तामैं हँसि प्यारे॥
निज करतल पर राखि प्यारि पदयावक चित्रकों करत विचारे॥

निजकर कमल कठोरसमुझि जिय धरर२धरकन हियभयभारे ॥
अस न होय प्यारी के पद तल दरकि जाय लगि हाथहमारे ।
चूमि २ निज नयन लगावत डरि २ चित्रमहावर धारे ॥
रूप देखि निज दृष्टि लगन डर वारि २ जल पियत दुलारे।
दृष्टि दोष अपने पर लेके बारम्बार होत बलि हारे ॥
कवहूं पुष्पबिभूषण रचि २ पिय प्यारी अँग करत शृँगारे ।
प्रिया रूपमें अति अशक्त ह्वै होन चहत नहिं पलक हुँन्यारे ॥
समय जानि गुरु नारिन आवन अति कलेश युत दुरतदुखारे ।
प्रिया प्रेम परतन्त्र स्वामिलखि अग्र अली तन मन धन वारे ॥

घूम घुमार गुलाब को घांघरो पीत चमेलि कि ओढनिभीनी ।
कंज के नील कसे कल कंचुकि पीत जुही कि संजाव जोदीन्ही॥
चम्प के हार कनेर के चन्द्रिका देखि के चित्र भईगति हीनी ।
सरयुनि कुन्ज में राम सखे पिया फूलशृँगार सियाछबि कीन्ही॥

कीन्हे शृँगार गुलाब केफुलन साँवरो फूलिकै फूलन जोहै ।
कंचन धाम में धाम गुलाब को छूटि सुगन्ध दिशान कियेहै ॥
चम्पकली सि तियान के बीच में पंकज नीलकलो जिमि सोहै।
राम सखे सरयू के लतान में रूप वितान तन्यो मन मोहै ॥

आजु गुलाब महल बिच दम्पति राजत सुन्दर वेष कियेरी ।
सरयू तीर कुन्ज सुख पुञ्जन बिहँसत दोउ गलवाँह दियेरी ॥
फूलन के गहने अँगशोभित मनमथहूं को मान लियेरी।
मोहनि नित्य दरत आनन्द में प्रेम वारुणी छाकि हियेरी ॥

ग्रीष्म का सरयू बिहार

श्री अग्र पद ६६

जल बिहार बिहरत सीता संग सुन्दर बर रघुराई हो।
गृषम काल तुषार सदृश मनु सरयू सुभग सुहाई हो॥
चारुशिलादि सखीगण साथैं शोभा बरणि न जाई हो।
न्यारी २ नाव सबन की सीतल सौंज भराई हो॥
लेह्य चोष्य फल विविधि भाँति लिये सौरभ बरणि नजाईहो।
रहसि, कोट रचि नाव मध्य तँह सौंज सकल सजवाई हो॥
करन लगे जल केलि बिविधि विधि जल सीकर बर्षाईहो।
कमलन मारि कमल कर झेलत लाघव लेत बचाई हो॥
झपटि झपटि कटिपट कर झटकत केलि करत छबि छाई हो।
कमला विमला मानसजा मिलि रचना विधि प्रगटाई हो॥
अद्भुत कला केलि जल बिहरे लोचन लाल लखाई हो।
सीताराम रसिक रस रग मग ललित बमन सजवाई हो॥
बिविधि फूल फूले कुन्जन में केलि करत मनभाई हो।
अग्र अली तेहि बाग बिहारन सिय रघुबर सुख पाई हो॥

श्री प्रमोद वन बिहार

देखो सखि आवत रास बिहारी।
सरयू तीर शृँगार बिपनते अति अनूप छबि न्यारी॥
सीताराम मनोहर जोरी चितवनि की बलिहारी।
कुन्डल अलक हलक बुलाक की दलकत हृदय हमारी॥

संग सखी सोहैं अलवेलीं बनी ठनी छबि न्यारी ॥
सुमन शृँगार किये नख शिख लौं निज कर स्याम सँवारी।
प्रभु आगे सखि खेलति आवैं फूलन गेंद उछारी ॥
झुकि २ लेति परसपर मारत लखि आनन्द पिय प्यारी।
आयेदम्पति राम चरण सखि सुमन शृँगार उतारी ॥
नख शिख मनि भूषण शृँगार करि सिंहासन बैठारी।

परस्पर पिय प्यारी करत शृँगार ।

चन्द्र मुखी अरु चन्द्रकला दोउ देत सुधार सुधार ॥
क्रीट चन्द्रिका ललित मणिन मय शिरधरि करन सुधार।
जनुघन दामिनि ऊपर राजत रबि शशि ज्योति अपार ॥
कुण्डल करनफूल बुलाक नथ और बिबिध मणि हार ।
कटि किंकिनि उर पदिक जटित नग नूपुर अति रनकार ॥
नील पीत अति रुचिर बसन तन पहिरे घूम घुमार।
नटनि वेष यह सिय रघुवर को रसिक अली वलि हार ॥

सिंहासन राजत सिय रघुबीर ।

कोटिन भानु प्रकाश सिंहासन कोटिन शशि सम सीर ॥
कोटि काम रति छबि निन्दत दोउ स्यामल गौर शरीर।
मणि बहुभाँति बिभूषण शोभीत नील पीत पट चीर ॥
बहु सखि धूप कि युक्ति बनावहिं बहु सखि दीप सजीर।
बहु सखि रचि नैवेद्य लगावहि बहु सखि लीन्हे नीर ॥
बहु सखि मुख मज्जन पट लीन्हे बहु सखि लीन्हे बीर ।
बहु सखि छत्र ब्यजन चामर लिये बहु सखि करत समीर ॥

बहु सखि बाजन बिबिध बजावहि तालदेत अतिधीर ।
रामचरण सखि गौरी गावहि मधुरे स्वर गम्भीर ॥

दोहा-खोवा के सब खेल रचि-फल पल कल जल वास ।
रहसि कलेऊ कीन्ह दोउ-सखिन बुद्धि विलास ॥

रास आरती

आरति करिये सिय बरकी, नख शिख छबि धरकी ॥
मृदुतरवन में अधिकललाई, हासविलास न कछु कहिजाई,
चितवनि की छबि अति सुखदाई, मनहीं मन फरकी ॥
नीलपीत अम्बर अतिराजै, मुखनिरखत सारदशशिलाजै ॥
तिलक झलक भालन पर भ्राजै, कुम २ केशर की ॥
कर्णफूल कुण्ड हलकत हैं, चन्द्र हार मोती झलकतहैं,
कर कंकण की छवि चमकतहै, जगमग दिनकरकी ॥
सिंहासन पर चँवरढुरतहै, झाँझबजत जै जै उचरत है,
सादर अस्तुति वेद करत हैं, लुटरनि अनुचर की ॥

श्री अग्र पद रास ६७

जय २ श्री बन प्रमोद रसिकन सुखदाई ।
सरयुतीर दिव्य भूमि वेलि लता रहि झूमि फूलन प्रति-
भँवरा अति गुन्जत मनभाई ॥
कुञ्जर प्रीति अनूप विलसत तहँ युगल रूप जनक लली-
रघुनन्दन मधुर २ ताई ॥
चन्द्र कला बिजयादि नागरी नवीनी अति मधुर-
यन्त्र लीन्हे कोइ सप्त स्वर जमाई ॥

गावहिं सब दिव्य तान सुनहि लाल अतिसुजान-
रास सरस भोज मन्द मन्द मुसुकाई॥
अग्र अली बिपिन राज यह सुख तहं नित समाज-
जानत कोइ रसिक भेद जिन यह सर पाई॥

श्री अग्र पद ६८

रागधनाश्री—नामो जानकी जगत मनि रूप कमनी।
वदन विधु रुचिर रद हाशईषद सुखद राम हृद-
कामकी ताप समनी॥
नमो सुक नासिका नैन मृग मीन छबि भालभर-
भाग सौभाग्य दरसै।
प्रेम पूरित वैन अलक इक उर ऐन सहज-
अलबेलि पिय मनहि करषै॥
कण्ठ सु कपोतिनी उरजउत्तंगिनी सिंह मधि-
देश सम श्रोणि सोहै।
जंघ कदली कर्भ गर्भ गति हरति इभु अद्भुति-
नख चन्द्र उपमा न कोहै॥
विशद सतकुम्भ सम भाति आभा वपुष मनि-
खचित बिबिध भूषनंनि धारी।
व्यालि वेनी दण्ड अंग दीपति चंण्ड सुभगता-
सनिरही राम प्यारी॥
भरत संगीत गन्धर्व कला कोक निधि सुघर-
वर नारि सब शीश नावैं।

रुद्र ब्रह्मादि कवि अवर केते कहौं स्वामिनी-
अग्र नहि पार पावैं ॥

अग्र पद ६६

जय जय रघुनन्द चन्द रसिक राज प्यारे ॥
अंग २ छबि अनंग कोटि बारि डारे।
बिहरत नित सरयु तीर संग सोहै सखिन भीर-
सिया अंश भुजा मेलि अवध के दुलारे ॥
कोई सखि छत्र लिये व्यजन लिये कोई-
युगल सखी चँवर लिये करत प्राण वारे।
सुन्दर सुकुमार गात पुष्पमाल सकुच जात परसत-
भयभीत होत रूप के उज्यारे ॥
नख शिख भूषण अनूप यथा योग यथा रूप-
कोटि चन्द्र कोटि भानु निरखत दुति हारे।
मन्द २ मुसकुरात प्यारी संग करत बात देखि २ अग्रअली-
तन मन धन वारे ॥

शरद पूर्ण बिमल चन्द बिमल महि अनन्द कन्द-
राम चन्द्र रास रच्यो देखन सखि धाई।
सरयु पुलिन बिमल कूल फूले बहु रंग फूल कमल-
चम्प केतकी कदम्ब सुरभी छाई॥
बोलहि सारो मयूर कोकिला मराल कीर गूँजहि-
अलि सकल राग रागिनी बनाई।
किन्नरि अप्सरा गान मुर्छन स्वर ताल तान धरहि-
भूमि तरुन लतन नीर गगन जाई॥

बाजहि मृदँग जंग सारँगी तमूर चंग बीण वेणु-
आदिक स्वर तालगति सुहाई ॥
युग २ सखि बीच एक मध्य राम नृत्यत संगीत-
ताण्डवी सुढंग गति अनेक ल्याई। गावहि षट-
रागराम रागिनि स्वर ताल ग्राम सवधरि. सखिरूप-
राम रास हेतु आई।
जानकि रघुनन्दन मन भावित भै रैनि ब्रह्म-
रामचरण सर्व जीव परमानन्द पाई ॥

देखो सखि अति अनन्द रास रच्यो रामचन्द्र-
रजनी छवि छिटकि रही शारद चन्दनी।
बहुसखि मण्डलाकार नृत्य गान स्वर सम्हार नृत्यत-
रघुनन्दन मिथिलेश नन्दनी ॥
कंचन मनि लसत भूमि नृत्यत पग चपल घुमि-
नूपुर छम् छनन छमक छमक छन्दनी।
कमला विमलादि तान राग अनुरागादि गान करहि-
राग रागिणी कला कलन्दनी ॥
चन्द्रकला बीणा मुर्चंग धुनि मृदंग मधुर अपर सखि-
सितार तार तार तरंगिनी।
ताधिग धिग धिग ताधिग धिग २ ताधिन्ता धिन्धृकट-
धृकट धिधि कट धिधिकट प्रबन्धनी ॥
उघटत संगीत राग ताल मूर्छनादिग्राम हाव भाव पानि-
मुरनि नैन खंजनी।

रामचरण युत समाज मेरे हिय में विराज यह विहार-
नित अखण्ड रसिक मण्डनी ॥

श्री अग्र पद ७०

सखिन बिच नृत्यत युगल किशोर ॥
बिपिन प्रमोद सरोजा तटपर दिव्य भूमि चमकत चहुँओर।
चक्राकार रास मण्डल रचि राग रागिणी के कलशोर ॥
बिमला चन्द्रकलादि रँगिली बीणा मृदंग लिये करधोर।
चारुशिला,शुभगा हेमा लिये मुरलि मुचंग किन्नरी जोर ॥
चन्द्रा चन्द्रबती मिलि गावति क्षेमा स्वरहि भरत रसवोर।
मदनकला करताल वजावति सारंगी नन्दा टंकोर॥
पियशिर सुभग सुक्रीट विराजै चन्द्रिका सींता के शिर रोर।
चन्द्रहार प्यारी उर चमकत पिय उर मोतिन माल उजोर ॥
कोटि २ रति काम विमोहन नटवर वेष श्याम अरु गोर।
रूप माधुरी कहिन परत हैं अँग २ छबि के उठत हिलोर ॥
कर से कर दोऊ मिलिधारे नयनन शैन चलत दुहुँ ओर।
कबहुँ अधररस पियतपरसपर रस मतवारे दोउचितचोर॥
प्यारीहाव पियामन करषत पिय केभाव प्यारीं निज ओर।
दोउ रस सिन्धु मगन रस लम्पट अग्रअली नहि चाहत भोर॥

झमकि २ ललि लाल कि नटनियाँ।
निरखि२ अलि हिय कसकनियाँ॥

बाजत मृदंग बीणा सारंगी तमूर झीन अलगोजा वंशी-
बाजै बाजत पैजनियाँ।

मृगीं नाचै चन्द पर शेष नाचै शम्भू पर कवि नाचै विम्ब पर-
मनके हरनियाँ ॥
कर सोहैं कर धरे थिरकि २ अलि ताताथेई २ ताथेई कहनियाँ।
नवल अली की लली बन्धकि वंधनियाँ रसिक शिरोमणि सो-
रस कि पियनियाँ॥

श्री अग्र पद ७१—प्रीतम का गान

प्यारी तेरे नयना मदनसर वारीं।
रतनारी ,कारीं कजरारी चन्द्र वदन पर अति छबि धारी॥
चितवनि बाँकी तिरछी प्यारी ममहिय के घायल करि डारी।
मीन कमल खंजन दुति हारी सब विधि प्राण अधार हमारी॥
हँसनि नटनि अरु अंग मरोरनि देखि २ में जाउँ बलिहारीं।
रूप उजागरि अग्र तियन में हो तुम श्री मिथिलेश दुलारी॥

श्री अग्र पद ७२—प्यारी का गान

प्यारे मुखचन्द विलोकहु सजनी।
कीट मुकुट मकरा कृत कुण्डल नयन कमल दल अति छवि छवनी॥
नाशामणि सु अधर पर राजत मनहुँ कमल दल शुक्र उदवनी।
कल कपोल पर अलकैं छूटैं चन्द उपरमनु बशि बहु अहिनी।
कटि कछनी काछे बने आछे पग में नूपुर अति मन हरनीं।
मुरनि दुरनि अरु हँसनि नटनि में कोटिन काम करों निवछवनी॥
रूप उजागर अग्र स्वामि मेरे मम हिय के हैं प्राण सुजिवनी॥

श्री अग्र पद ७३—सखी का गाना—

रागकल्याण बलिहारी सीता बदन की।

उज्वल अरुण परस्पर दीपति अधर विम्बफल रदन की ॥
बेशर मुक्ता चपलहोत अति शोभा बीरी अदन की ।
लोचन चारु चितै मधुवर्षत राम काम दुख कदन की ॥
सची सहित शोभा त्रिभुवन कीं बारों भामिनि मदन की ।
अग्र स्वामिनी विशद चन्द्र मुख सौभग हद् सुख सदन की ॥

प्यारी का गान

लाल तुम कर धरि बींगा बजावो में भरि कण्ठ अलाप उचारों-
तुम स्वर संग मिलाओ ॥
मैं प्यारी कहि गाऊँ तुमको तुम प्रीतम कहि गावो ।
मैं रघुनन्दन नाम धरों निज तुम सिय प्यारि कहावो ॥
कटि लहँगा शिर धारि चन्द्रिका मोहि कछु नाच दिखाओ ।
मैं करताल बजाऊँ रंग भरि तुम हँसि हाव दिखावों ॥
मैं करजोरि मनाऊं तुमको तुम कसि भौंहखिसाओ ।
मैं सौन्दर्य सराहि परों पग तुम हँसि कण्ठ लगाओ ॥

श्री अग्र पद ७४

आकरष्यो जहँ तहँ नर नारी ।

सब सखियन मन पिय अँग धारीकरां मनोरथ रुचि अनुसारी ॥
सबके रुचि लखिके सिय प्रीतम धार्यो बहुत रूप मनहारी ।
जस २ जाहि मनोरथ रहेऊ तस तस करि सब किया सुखारी ॥
अस्थावर जंगम जो जहँ लौं आनन्द मुरछा में नर नारी
अद्भुत रास रच्यो पिय प्यारी संग सखिन लिये अग्र दुलारी ॥

श्री अग्र पद ७५

रसिक दोऊ सरयू कूल चले—

राम श्रमित ह्वै संग सखिन लै दम्पति दियभुजगले-
करन लगे जलकेलि विविध विधि दोउ रस रंग रले ॥
प्रीतम डूबि प्रिया पद गहिके ऐंचि लेत जल तले ।
प्यारी कर कमलन ताड़न करि जल पिय आँखि दले ॥
प्रीतम के गति भूलि गये सब दोउ कर आँखि मले ।
काहू के कटि बसन छोड़ि पिय तट पर आय चले ॥
वह सखि ने अति लाज श्रमित ह्वै जल से नहिं निकले ।
पुनि सिय ने पिय से पट लैके दइ सखि हाथ तले ॥
करि जल केलि प्रिया प्रीतम दोउ जल से आय थले ।
करि शृँगार अग्र सखियन युत आय गये महले ॥

श्री अशोक बन

श्री अग्र पद ७६

श्री सरयू तट बन अशोक मधि रास रच्यो श्री अवध बिहारी ।
चहुँ दिशि मणिमय कोट विराजै मध्य कुंज बहु न्यारीं न्यारी ॥
ताके चहुँदिशि पादप राजै त्रै सम्पति युत अति रुचि कारीं ।
ता आगे बहु लता कुंज हैं जाति २ के न्यारी न्यारी ॥
ताके चहुँ दिशि कृत्रिम पादप जाति २ मणि के छबिकारी ।
ताके चहूँ दिशि गमले सुन्दर बहुत भांति के धरयो सुधारी ॥
ताके चहुँदिसि मोतिन झालर मध्य में रचना बहुत प्रकारी ।
मध्यभूमि बहु रंग मणिन के बेली बुटी विविधि प्रकारी ॥

तापर जाजिम स्वेत बिछे हैं चन्द्र किरनि के अति छबिहारी।
तामधि सिंहासन अतिसुन्दर स्वेत मणिनमय अति सुठिकारी॥
तापर बैठे युगल बिहारी श्रीनृपनन्दन जनक दुलारी।
गौरस्याम छबि को कवि बरणै कोटिकाम रतिदुतिलखिहारी॥
प्यारी के तन सुभ्र सुसारी प्यारे अंग जामा झलकारी।
प्यारे उर मोतिन की माला चन्द्र हार सोहत उर प्यारी॥
कण्ठ पोत प्यारी गल राजत पिय गल गोप बिचित्र सँवारी।
बाहुन में अंगद सुठि सोहैं कर में पहूँची अति दुति कारी॥
कर्णफूल प्यारी श्रुति शोभित पिय श्रुति कुण्डल मकराकारी।
प्यारी के शिर मणिन चन्द्रिका पिय शिर क्रीट भानुमदहारी॥
बिमलादिक सखि चहुँ दिशि सोहैं मध्य नटनलागे पिय प्यारी॥
कोइ सखि बीणा मुचंग काहू लिये जलज तमूरा कोइ २ धारी।
बहुत सखी लिये बहुत यंत्र हैं थेइ २ कर नाचत बहु नारी॥
छम २ नूपुर चरनन बाजै मनुमोहनी मंत्र ध्वनि कारी।
गावति सब रागन रागिनि में स्वर सुनि इन्द्र बधू मनहारी॥
जब प्यारी प्रीतम मिलि गावत ताथेइ २ औरन प्यारी।
स्वर्गसात पाताल व्यापि गयो परमानन्द के बह्यो पनारी॥
महारास सब दिशि में छायो आकरष्यो जहँ तहँ नर नारी।
सब सखियन मन पिय अँगधारी करैं मनोरथ रुचि अनुसारी॥
सब के रुचि लखि के प्रिया प्रीतम धारयो बहुत रूप मनहारी।
जस २ जाहि मनोरथ रहेउ तस २ करि सब कियो सुखारी॥
अस्थावर जंगम जो जहँलों आनन्द मुरछा में नरनारी।
अद्भुत रास रच्यो पिय प्यारी संग सखिन लिये अग्र दुलारी॥

आज सखी लघु रास मण्डल में नृत्यत हैं रसरंग भरे।
वन अशोक सम भूमि खचित मणि रवि शशि-
अमित प्रकाशकरे ॥
श्री रघुनन्दन जनकनन्दनी अमित मदन छवि-
अंग धरे ।
क्रीट मुकुट चन्द्रिका मनोहर भूषण अँग २ नगन जरे ॥
कुण्डल मकर हार मोतिन के वैजन्ती बन माल गरे।
नाशा मणि झूलत अधरन पर केशर चन्दन खौर करे ॥
मोतिन मांग भरी वर बेनी कुटिल अकल जनु भ्रमर खरे।
मणि कंकण पहुँची कर चूरी बाजू बन्द जराउ जरे ॥
नीलपीत पट लसत दोउन अँग स्याम गौर मिलि लगत हरे।
किंकिनि मुखर अरुण कर पल्लव पग नूपुर झन कार करे॥
थेइ २ करत भरत स्वर अलिगन निरतत पिय सँगअनँदभरे-
बजत मृदंग ढोल सारंगी झाँझ मजीरा बीन बरे ॥
युग २ सखिन बीच रघुनन्दन करसों कर धरि लसत खरे।
करि मण्डल निरतत सखियन सँग निरखि मदन-
बहु मुरछि परे ॥
पूरि रह्यो बन मण्डल सोरस अचर सचर चर अचर करे।
सुर मुनि अगम सुगम रसिकन को रसमाला—
यह ध्यान धरे ॥
साँवरे सलोने जु झमकि झुकि आवैरे।
सरद कि रैन पिया अधिक सुहावैरे ॥

मन्द मुसुकाय प्यारी जू के गल बाँह दिये,
ऊँचेस्वर तान ले मधुर स्वर गावैरे ।
रहस मण्डल आली संग ललीं कर धरि,
छम २ छननन नूपुर बजावैरे ॥
कटि लच कनि ग्रीव मुरनि घुरनि नैन,
कुण्डल हलन मनि क्रीट झलकावैरे ।
नवल बिहारी प्रिया लली संग रस बस,
अलि संग लता कुन्ज मन ललचावैरे ॥

नटत सियाजू पिया लेत बलि हरिया ।
छम छम छमकत नूपुर बाजत पिय,
मन मोहत कहतहरि हरिया ॥
चम्प फूल पर घन सोहत छबि,
तापर नखत दामिनि फुलझरिया ।
लेत तान जब प्यारी नइ नइ,
वाह २ कहत पिया जु स्वरभरिया ॥
नवल बिहारि पिया विरिया खिलावत;
जय २ कहत सखिन मन हरिया ॥

नटत छबीले छैला सिया मन हरिया ।
जब घूमत पिय बागा फहरत,
सियामन कहरत मदन लहरिया ॥
कम्पत चलत पसेवनि अँसुवा,
उमगत मनहु सावन कि नहरिया ।

गिरि २ लेत पिय तान अलापत-
मुरछि परत सखिसिय थर हरिया ॥
नवल बिहारीं प्रिया पिय रस लूटत-
प्यारी पर छिरकत चन्दन फुहरिया ।

नटत छबीले छैला सिया मन हरिया ॥
जब पिया घूमत वागा फहरत-
सियामन कहरत मदन लहरिया ।
कम्पत चलत परसेवनि अँसुवा
उमगत मनहु सावन कि लहरिया ॥
गिरि २ लेत पिय तान अलापत-
मुरछि परत सखि सिय थर हरिया ।
नवल बिहारि प्रिया पिय रस लूटत-
प्यारी पर छिरकत चन्दत फुहरिया ॥

आज जनक दुलारी रसरंगन भरीं ।
चम्प के बरनवारी बसन सुरंग वारी-
वदन मयंक बारीं रूप आगरी ॥
अरुण अधर वारीं बोलनिमधुर वारी-
तिरछि चितौनी सर मारति खरी ।
वेसर सुपास वारी भुजन मृणाल वारी-
उरज उत्तंग वारी मदन जरी ॥
मोतिन के हारवारी मध्य छीण भाग वारीं-
जघन गम्भीर वारी भावन भरी ।

गमन मराल वारी नूपुर झनकार वारी रसमाला
उर वारी मोह्यो मन री ॥

जाजवन्ती दादरा—

कित गयो मेरि आली रास को रमैया ॥
साँवरो छबीलो छैलामेली २ कण्ठभुज,
मीठी २ बातैं-कहि हिय को हरैया ।
एक सखि आगे २ आप वाके पाछे २-
कुंजन प्रवेश कीनो हमहुँ लखैया ॥
माइ बाप गोरे २ भाई वाके गोरे २-
आप कारो २ वारो फन ज्यों डसैया ।
मोको तो नसूझै कछु बूझै न बिकल भई,
साँवरे कि छबि हिय बिच करकैया ॥
आँसुवन भींजे मेरी आँगिया उतारो सखि,
हार को बहावो कहा सुख के देवैया ।
तियन बिकल जानि आये रघुलाल प्रिया,
डूबत बिरह वारी पायें सुखनैया ॥
आरति उतारैं सखिवारैं तन मन धन,
जनक लड़ैती संग राजैं मुद छैया ।
कोउभरि अंक कोउ वदन मयंक लखि,
कोउतिय कहैं पिय बड़े निठुरैया ॥

रसिक अलि के प्रान प्यारे रघुलाल सिया—
खेलत नवल रास मण्डप दिपैया ॥

पिया हिया लागि रहो न्यारे जनि जाउरे ॥
गुरुजन के लाज काज हेरो जनि भोरे पिया-
सुमन के सेज सिया रस वश छाउरे ।
पइयाँ परों तोहि मैंतो निशिपति निशदिन-
राकायुत नित हित अवधव शाउरे ॥
कुल गुरु नीत हम पूजन सु करि हैं-
उदै जनि होउ मैंतो दुःख हियापाउँरे ।
नवल विहारी पिया बिछुरत संग प्यारीं-
मरनोसो भलो जिया जनि तड़फाउरे ॥

कर धरि सिया नटै पियामुख हेरि हेरि ।
चहुँ दिशि अलिगन छम छम छमकत मन्द मुसुकनि में
मदन रस भरि भरि ॥
फहरत बसन हुगन्ध छहरत अति
मोति माला टूटत सखिन उर वेरि वेरि ।
उरज गहत कर अधर चूमत जब
पूचत रसीलीं बातैं आली मुख हेरि हेरि ॥
नवल बिहारी प्रिया नूपुर के सोर सुनि,
पिय रस लूटत बाँधत बन्ध वेरि वेरि ।

धिधि केटे धिधि केटे बाजत मृदंग ॥
स्वरनि भरत उघटत तेथे तत्ता थेई,
लाग डाट सम तान तरंग ।
चारनि चरनि धरत्ति उर भावनि,

दृग मोरनि तस चलनि उमंग (सुअंग) ॥
रसिक अली रघुबीर साँवरो,
नटत अटत मुनि उरनि अनंग ।

राग परज

राजदुलारी रस में रोस न कीजै ।
बदन सरोज नवल रिस कीन्हें, कला,उन लखि लीजै ॥
अमित कला बर बदन साँवरो चन्द्र,हँमनि कत दीजै ।
रसिकअली प्यारी रघुवर कीं,हँसि प्यारो रस भीजै ।

दोहा-धन्य चारुशीला अली चतुराई की खान ।
पिय प्यारी की प्रान सी तुरत छुड़ायो मान ॥
रीझि रहे राघव हिये तनमन अरप्यो तोहि ।
ताते पद गहि रसिकअली नित्य समाज समोहि ॥
दिन रदिन रस बढ्यो रीति अलि जानि पियाकी ।
तेरे बश पिय भये कहो श्रीचारुशीलाजू ॥
सब रस ऐनी आहि झपटि पिय राम मिलाजू ।
मिले राम पिय सत्य अब शंशय मन मति राखु ॥
रसिकअली कीं स्वामिनी बुद्धी, बानि सुभाषु ।

श्री अग्र पद ७७

मूदत नैन राम सीता के चन्दा तन चितवन नहि देत ।
मागै जो वल्लभा मृगन को सारँगधर सकुचत यहि हेत ॥
प्रिया वचन उल्लंघ सकै नहि उडुपति हृते प्रलै है जाय ।

दोऊ कठिन जानि रघुनन्दन हाँसी मिस यह रच्यो उपाय ॥
जाचै जो जानकी कदाचित इन्दु कुरंग वेगि देउँ आनि ।
अति आधीन जनावत तिय के अग्र स्वामि याते यह मानि ॥

श्री अग्र पद ७८

रूठो जी राम गुशाँइ भले २ ।
पायो राजपाट दशरथ को गहि लीनी ठकुराइ ॥
जाय कहू मिथिलेश ललीजु से, निकश जाय गुमड़ाइ ।
अग्रअली के शिर पर चहिये श्री शिरध्वज की दाइ ॥

कवित्त

जाय कहूँ मिथिलेश लली से आज अबै निकसै गुमड़ाई ।
भोर सुभाय सुनैंगि जबै मन मान ले ऐंठि छिपैं कहुँ जाई ॥
मेरे विना फिर मान टरै नहि कोटि करो पिय यों चतुराई ।
ताते कहू अबहूँ सुनि लो सौन्दर्य गुमान किये न भलाई ॥

दोहा—प्यारी तू प्यारी अहै सुघर सुघारी रूप ।
मोते बोलि न आव अब परों प्रेम तव कूप ॥
रसिकअली पिय उर लगी प्रीतम लई लगाइ ।
गये अपनपौ भूलि दोउ या तो प्रेम सुभाइ ॥

रसिक दोउ नृत्यत रंग भरे ॥
विपिन अशोक रास मण्डल बिच,
जनक लली रघुलाल हरे ॥

अमित रूप धरि करि कछु चेटक
युग युग तिय मधि श्याम अरे ।
कीट मुकुट की लटकि चन्द्रिका
झुकनि मदन मद दूर करे ॥
मोंतिन हार युगल उर राजत कुन्द मालती माल गरे ।
पग नूपुर मजीर मधुर धुनि कंकन किंकिनि मुखर तरे ॥
मुरज मर्जीरा ढोल सारंगी अरु मुरली के टेर करे ।
विविधि ताल संगत अलापत ततथेइ २ कहत खरे ॥
कबहुँ मधुर मुसुकाय के दम्पति निरखत छवि भुज अंश धरे ।
कबहुँ सुरति करि ब्याह समयकी फिरति भांवरी रसिक बरे ॥
यह रस रास महासुख सागर द्वादश योजन लो सवरे ।
रसमाला भरि पूरि रही बन जग कोइ बुन्द प्रकाश करे ॥

देखत अवध को आनन्द ।

हरषि वरषत सुमन दिन २ देवतनि को वृन्द ॥
नगर रचना शिखन को विधि तकत बहु बिधि बन्द ।
निपट लागत अगम ज्यों जल चरहि गमन सुछन्द ॥
मुदित पुर लोगनि सराहत निरखि सुखमाकन्द ।
जिन्ह के सुअलि चख पियत सम मुखारविन्द मरन्द ॥
मध्य व्योम बिलम्बि चलत दिनेश उडुगण चन्द ।
रामपुरी बिलोकि तुलसी मिटत सब दुख द्वन्द ॥

—०*०—

विवाह लीला विहार

दोहा—लीला विविध विनोद में, पुरुष रूप सखि कीन्ह।
जेहि सेवा में जश चरित, तश करि प्रिय सुख दीन्ह ॥

श्री अग्र पद ७९

प्रभु जी हमको आज्ञा दीजै।
यज्ञ पूर भयो पुण्य तुम्हारो नृप को दर्शन कीजै ॥
सुनहु आज मिथिला पुर तें इक आयो है परचारी।
सीय स्वयम्बर अखिलनरेश्वर कौतुक ह्वै है भारी ॥
पंगति रथ ऐहैं पुनि वहु तहँ ह्वै है वड़ो समाज।
अग्रस्वामि दोउ हँसत कुँवर बर संग चले ऋषि राज ॥

श्री अग्र पद ८०

सखि में सपनों सुन्दर पायो।
इन्दु वदन राजिव दल लोचन गाधि सुवन सँग आयो ॥
स्याम वरन तन कोटि भानु दुति शोभा सब जग छायो।
मोद भयो मिथिलापुर बासी मो मन अधिक सिरायो ॥
रघुकुल कुवर अयोध्या नायक भुजबल धनुष चढ़ायो।
नृप सब सभा ठगी सी ठाढ़ी गर्भिन गर्भ नशायो ॥
पूरण भयो पिता प्रण मम सखि सब सन्देह नशायो।
अग्र स्वामि अरविन्द बन्धु उदै मिलि हैं पति मन भायो ॥

श्री अग्र पद ८१

रागमारू-अरी हो राम रंग रची।

तात हमारो पन कियो तोरन धनुष कठोर ॥
कोमल करतल सांवरो सखि मूरति मधुर किशोर ।
राजशभा ऐसे भई ज्यों उडूगनमें चन्द ॥
बिधना बिधिसो निर्मयो अलि मोहन मनको फन्द ।
लोक वेद की लरज सखीरी यद्यपि दुस्तर आहि ॥
रूप निधान देखि रघुनन्दन धीरज धीरज नाहि ।
एमी मो जिय उपजीरी चाप चढाओ कोइ ।
अग्र स्वामि के हाथ विकानी होनी होय सो होइ ॥

श्री अग्र पद ८२

रागमारु-सखी मोहि राम भावै ।
नृपति निकर निरस सब लागै कोऊ दृष्टि न आवै ॥
उडूगन उदये होत ज्यों आली चकोरी चैन न पावै ।
एकहि अमृत आव उदये ते चन्दा तपनि बुझावै ॥
राजा बन राजी से लागत पोरुष नहि दर्शावै ।
रघुनन्दन चन्दन द्रुम मानों अन्तर जरन जुड़ावै ॥
भावै नही पितापन सजनी सारँग पानि सुहावै ।
अग्र स्वामि मोहनी मन्त्र लिये चितवत चितहि चुरावै ॥

श्री अग्र पद ८३

रागकान्हरौ--तात प्रन काहे को कियो ।
कठिन पिनाक रामकर कोमल धीर न धरत हियो ॥
मधुर मूर्ति आनन्द कन्द सम नाहिन और वियो ।
क चितवनी सांवर सखि चित चित चोर लियो ॥
रघुपति तजि जे करै आन रति धिग २ जीव जियो ।

अग्रस्वमिरस बश भइ आली मो मन मोललीयो ॥

श्री अग्र पद ८४

होरीताल—येरी मैं हूंगी अनुरागि चरण की ॥

अंकुश कुलिश कमलध्वज चिन्हित अरुण वरण—

अघ तिमिर हरणकी ।

जो पद परसि सरस दुर्लभ गति होतभई ऋषिराज घरणिकी ॥

नूपुरनदन मदन सुनि लज्जित राजत जीवन रसिक जननकी ।

अग्रअली सोइसुभग सरोरुहनखत कान्ति मणि माणिकबरनकी ॥

श्री अग्र पद ८५

सौमित्रीकहे सुनहु श्याम घन ।

हूं जानत वैदेही को पन ॥

राजन कीयह रीति वाम बहु दाशन लिखि नहि आवै ।

यह डर निडर जानकी रघुपति रामहि हृदे बसावै ॥

राजिब नैन अनुज के वैन सुनि ताको यश सब जान्यो ।

यक पतनी व्रत लियो रीझि कै अग्र भूमि धरिपान्यौ ॥

श्री अग्र पद ८६

राग सारंग

जब रघुपति कर धनुष उठायो ।

पुलकत तन रोमाञ्च गाधि सुत पुरति प्रेम भरि आयो ॥

को वड़ नमित न मुख भूपति कर जानकिमन तरसायो ॥

तोरयो चाप सभामें तिहि क्षिणि संशय सबै नशायो ।

मगन शब्द सुनि जामदग्नि मन अहंकार सु ब्रहायो ॥

तांपे अमर अवनिजनु फनिपति अग्रदास मनभायो ।

राजति राम जानकी जोरी ।

स्यामा सरोज जलद सुन्दर वर दुलहिनि तड़ित वरन तनु गोरी ॥
व्याह समय सोहति वितान तर उपमा कहुँ न लहति मति मोरी ।
मनहु मदन मंजुल मण्डप महँ छवि शृँगार शोभा इक ठोरी ॥
मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी ।
कनक कलश कहँ देत भाँवरी निरखि रूप सारद भइ भोरी ॥
इत वशिष्ट मुनि उतहि सतानन्द वंश बखान करैं दोउ जोरी ।
इत अवधेश उतहि मिथिला पति भरत अंक सुखसिन्धु हिलोरी ॥
मुदित जनक रनिवास रहस वश चतुर नारि चितवहि तृन तोरीं ।
गान निशान वेद ध्वनि सुनि सुर वरषत सुमन हर्ष कह कोरी ॥
नैनन को फल पाइ प्रेम वस सकल अशीशत ईश निहोरी ।
तुलसी जेहि आनन्द मगन मन क्यों रसना वरनै सुख सोरी ॥

श्री अग्र पद ८७

मंगल आज जनकपुर माहीं ।

पाणिग्रहण सीता रघुपति को नरनारी सब फिरत उछाही ॥
मण्डित द्वार चौहटा वीथिन दिव्य दुकूलनि धाम उछारैं ।
अति आतुर पग लगत न अवनी कहुँगज कहुँरथ अश्व शृंगारैं ॥
शीश सेहरो रामचन्द्र के अग धानी करि तोरन लाये ।
रुक्म पुहुप मुक्ता ले गोखनि नवल बधू अंजलि बरषाये ॥
मण्डप तर बैठाय पटा दोउ वेद विहित सब कर्म कराये ।
साखोच्चार दुहूँ कुल गुरु करि कुंवरि कुंवर को हाथ गहाये ॥

उतरासन की ग्रन्थि परस्पर दृढ़ वचननि बामैं आँ लीन्हो।
आगे प्यारी पीछे प्रीतम जातवेद कल भाँवरि दीन्हीं ॥
भूरि दान दे तोषि सकल सुर दुलहिनि सँग भीतर बैठाने।
परदा ओट समागम पहिलो अग्रदास दासी सुख जानैं ॥

दूलह राम सिया दुलहीरी
घन दामिनि वर वरन हरन मन सुन्दरता नख सिख निवहीरी ॥
ब्याह विभूषण वसन विभूषित सखि अवली लखि ठगिसिरहीरी।
जीवन जन्म लाहु लोचन फल है इतनोइ लह्यो आज महीरी ॥
सुखमा सुरभि शृँगार छीर दुहि मयन अमिय मय कियो है दहीरी।
मथि माखन सियराम सँवारे सकल भुवन छबि मनहु महीरी ॥
तुलसिदास जोरी देखत सुख शोभा अतुल न जात कहीरी।
रूप राशि बिरची विरंचि मनो शिला लवनि रति काम लहीरी॥

शोभित सीताराम कनक मण्डप तरे।
शिर सोने को मौर मञ्जु मुक्ता जरे ॥
परसत अमल कपोल सुमुक्ता कोर के।
राजिवलोचन लोल कमल मानो भोर के ॥
सुरंग चूनरी के निकट पीत पट छुई रह्यो।
मनहुँ अरुन घन मध्य चपलता चुई रह्यो ॥
सिय भूषण प्रतिबिम्ब राम छबि उर धरे।
मनहुँ जमुन जल मध्य दीप दीपक बरे ॥
राम भुजा के निकट सीय भुज यों लसै।
मरकत मनिकर खम्भ मनहुँ कंचन कसे ॥

राम भये घन श्याम सिया भइ दामिनी।
मुनि भये चन्द चकोर चकित भइ भामिनी ॥
राम भये तन गौर सिया भइ साँवरी ।
सारद सी बुद्धि वन्त वधू भइ बावरी ॥
पुष्पन बर्षत मेघ मेदनी थर हरे ।
होत जनकपुर व्याह राम भाँवरी फिरे ॥
राम सिया को ध्यान सदा शंकर धरे ।
ब्रह्मा रूप निहार इन्द्र पूजा करे ॥
यह छबि युगल किशोर सुमुनि जन ध्यावही।
लखि लखि बिमल बिनोद वेद यश गावही ॥
तुलसी सीताराम सदा उर आनिये ।
राम भजन बिन जन्म वृथा करि मानिये ॥

गोरी किशोरी दुलहिया हे दुल्हा राचो जि श्याम ।
देखे के पँवलो सँजोगवा हे बशि के येहि गाम ॥
लाली ललीकी चुनरिया हे अंग ललित ललाम ।
कटि में कसे वे केशरिया हे कोरन जरिकाम ॥
मोरी मणिन इन धरिया हे सिन्दूर सुख धाम ।
उन शीर टेढी बगडिया हे मौर मोतिन दाम ॥
दोऊ कि दोउ नजरिया हे हिय करै कतलाम ।
कोन इन्हें लखि सखिया हे बिकिगै बिनु दाम ॥
प्रेमी जनों के पियरवा हे सन्तन विसराम ।
मोद वशाले हिरवाहे मुख दम्पति नाम ॥

श्री कोहवर विहार

श्री अग्र पद ८८

रागकल्याण-लाल भयो रोमाञ्च प्रिया को आगम जान्यो।
अनँगरौर गये दौरि अजिर में
अति आतुर,ह्वै अंग राम पहिचान्यो॥
मेघागम ज्यों नृत्य कलापी नूपुर धुनिमन मान्यो।
सुख समाज सों मिली अग्र प्रभु तन मन एकता सान्यो॥

श्री अग्र पद ८९

हिम ऋतु हर्म गर्म मनि को है।
कीम खाप मखमल गिलमन्ह पर सिय पिय परिकर सोहै॥
लै कोउ बीण प्रवीण सहचरी राग तरँग उमगो है।
अग्र स्वामि सुख निधि सीता पति रमि रमाय मन मोहै॥

श्री अग्र पद ९०

तरुन तमाल वरन रघुवीर, जानकि कंचन की लता।
सौ दामिनि नव घन सँग मानहु पुलकित प्रेम मता॥
निरखत रेख जम्बुनद जैसे दोऊ रंग रता।
अग्र अली सीतापति शोभा को करि सकै अता॥

श्री अग्र पद ९१

भूषण मन में नाहिन भावत।
सीता भीत पीय अँग परसत ऋषि पतनी की सुधि जब आवत॥
जम्बूनद गुहि असित पाट सों नाना भांतिन स्वकर बनावत।

कुसुम कटाव कंचुकी सारी कुंकुम कुचन सु दोष जनावत ॥
पद्म पानि पद चित्र महावर पाँति तम्बूल कज्जल छवि पावत ।
सहज सुभग वैदेही अँग २ अग्र स्वामि यहि भाँति रिझावत ॥

कलेऊ विहार

रघुबर जेवत जानि एक सखि अँचल दै हँसि बोली जू ।
सुनहु लाल तुम काके जाये सत्य कहो सब खोली जू ॥
सुनहु प्रिया हम नृप दशरथ के जासु सुयश श्रुतिगावैं जू ।
भूपति गौर स्याम तुम लालन हम कैसे पतियावैं जू ॥
सुनहु चतुरि हम स्याम न होते कों श्रृँगार रस ज्यावै जू ।
हमरे श्रीजनकललीरस की रस बिन बोले प्रिय आये जू ॥
कहहु कमल मकरन्द मधुर हित भँवरहि कौन बुलावै जू ।
रामचरण सुनि मरम मधुर रस सब सखियाँ मुसुकावै जू ॥

सुनिये श्रीरसिकराय रघुनन्दन रीति प्रीति रसगारी जू ।
तुम तो स्याम स्वामिनि मम गोरी यह अचरज अति भारी जू ॥
जो पै लाल आप रुचि होवैं तौ हम बात बिचारी जू ।
कछुक काल मिथिला में रहिये होइ नागरि सुकुमारी जू ॥
श्री लक्ष्मिनिधि के महलों में रहिहौ रूप उज्यारी जू ।
मन भावती टहल प्रभु करिहौ श्रीसिद्धि की अनुहारी जू ॥
तव प्रभु गौर बदन तुम पैहौ सियस्वामिनि अनुहारी जू ।
हँसि २ कहत परस्पर दम्पति कामदेन्द्र बलिहारी जू ॥

तुम सकुचत कश चित्त चोर दुलहा राम लला ।

जेंवो व्यंजन रुचिर हमारो व्यंग बचन सुनिभोर ॥
तुम तो स्याम काम छबि लाजै मातु पिता कैसे गोर।
गारि ससुर पुर सुनि रघुनन्दन हँसैं सु लखिमुख मोर ॥
कृपा निवाश हरषि सखि गावैं जुरि २ सिया जुकि ओर।

राम में छवो रसन कि छटा।

बचन मधुर अरुमाधुरि मूरति तुव रवि रस कोजटा ॥
रुचि कारक लावण्य लबण रस तीष नेज रिपु-डटा ।
बाहर भीतर अमल करत जो इहै अमल रस ठटा ॥
प्रभु यश तीत अभागी नाही कोहै अति अटपटा ।
जैसे मधु में सब रस छाये मधु अमृत से सटा ॥
'मधुवाता' इति श्रुति में सोमधु बहुत भाँति से बटा ।
रस से मोद मोद से जीवन मँहँरसिकन अश अटा ॥
महादेव नीके जानत जिन राम राम नित रटा ।

अचवन करत राम सिय प्यारी ।

स्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रामा लिये जल झारी ॥
चन्द्रवती खर्चा दर्पन लिये चन्द्रकला सुकुमारी ।
सुभगा लिये वागो प्रीतम को सहजा लिय सिय सारी ॥
करि अचवन बैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी ।
राम सखे बलि २ दम्पति छबि सुन्दर वदन निहारी ॥

सखियन बीरी सरस सम्हारी

नागर दल सुकपूर चुना कुटि सुख प्रद लोंग सुपारी ।

दालचिनी सुचुनी वरमेवा सुघर समय अनुसारीं ।
मनकी जानि स्याम कर दीन्ही स्वकर खवावत प्यारी ॥
अधर दशन रसना की उपमा खोजि २ मति हारीं ।
कृपा निवाश अली सिय पिय की अधरामृत अधिकारीं ॥

बीर तुम धीर मुनीशन गाये, आज सखियन हाथ ठगाये ॥
सुनियत मारि ताड़का पापिनि ऋषियन शोक भगाये ।
दलि मारीच सुबाहु सहित दल तिहुपुर सुयश जगाये ॥
शिला नारि भइ परसि चरण रज गयो सुहाग मँगाये ।
सियकर कंकण छूटन नाहीं बातन मनहिं पगाये ॥
जनि सकुचाहु प्राण धन जीवन सुनि हँसि कण्ठ लगाये ।
ज्ञाना अलि सरहज की बातैं सुनि २ अति मन भाये ॥

ललन ससुरारि छाँड़ि कँह जैहों यह सुख कतहुँ न पैहो ।
शाशु शशुर सारीं सरहज सब मिथिला विरह सतैहो ॥
मानि ननद बाते ननदोई फिरि विधुबदन दिखैहो ।
असदावन भूलेहु जनि रघुवर निजकर पतिया पठैहो ॥
जो तुम साँच अवध नृपनन्दन साँचि कहो कब ऐहो ।
ज्ञाचा अलि तब सफल मनोरथ जब हँसि कण्ठ लगैहो ॥

बसंत पंचमी

श्री अग्र पद ६२

आज बसन्त पंचमी पूजा श्रीरघुबर की बधाई ॥
कनक कलस सजि भरि धरि शिर पर आम बोर जव ल्याई ।

चोवा चन्दन और अरगजा मोतियन चौक पुराई ॥
रतन जटित पिचकारी कर गहि केसरि रंग भराई ।
तकि २ मारत श्री रघुबर को अबिर गुलाल उड़ाई ॥
श्रीरघुवर सिंहासन बैठे निरखि २ सुखपाई ।
छोड़व छिरकब भरव परस्पर ऐसी खेल मचाई ॥
नवल बसन्त नवल मोरन बन नवल २ मन भाई ।
अग्रदास गावहिं श्रीरघुबर फगुआ परम्पद पाई ॥

श्री अग्र पद ६३—डफ बाजी जनक दुलारी की ।
चहुँ दिशि सखी जड़ाउ छड़ीं लिये पिचकाकर अवध बिहारीकी ॥
मारा मारा मची कुंजन में, छाइ अबिर अंधियारी की ।
यह छबि देखि मगन सुर मुनि भये अग्रअली बलिहारी की ॥

थिरकत आवै लखो गोरिया ।
लाला भागि चलो यहि औसर ना चलिहैं बरजोरिया ॥
लपटि झपटि गहि एक एकन कँह दश २ करैं होरि होरिया ।
कोविद नारि गई रानी ढिग फगुवा देवो तब छोरिया ॥

होरी जनक लली संग खेलत राजकुमार ।
अबिर उड़ावत धूम मचावत गावत राग धमार ॥
मलि गुलाल मुख चूमि लेत हँसि अवध छयल दिलदार ।
मोहनि अली प्रेम में दोउ सुधि बुधि दीन बिसार ॥

रंग डारो न मो पै धनुधारिलाल ॥
जो मोरि सारि पैं रंग परैगो तौ तोहि देउंगि गारि लाल ॥

तुम्हरे सँग रघुवंशि छैल सब मोंहिं सँग सखियाँ हजारिलाल ॥
रामप्रसाद श्रीसिया प्रसाद तें कबहुँ नहीं मैं हारिलाल ॥

पिय लखु आलियाँ फागु रस माती ॥
मति मानो अवला अति चपला भरिहैं सकल करामाती ।
ठहरिय छिनक टरिय जिन इत ते जुटिजैहैं पाँति के पाँती ॥
व्यंग सुबचन सुनाई हँसि २ नारि वनैहैं भलि भाँती ।
अजु चहो कुशल तो छाड़ो रघुनन्द (कहि) प्रेमभरीं मुसुकातीं ॥

रसिया को नारि बनाउगीं ।
कटि लहँगा उरमाह कंचुकी चुनरी शीश उढाउँगी ॥
गाल गुलाल दृगन में अंनजन बिन्दीं भाल लगाउँगी ।
सियाअली तालीं बजाय कर स्वामिनि निकट नचाउँगीं ॥

नव नागरि बाल बने रसिय ।
दृग अंजन खंजन रतनारे तकनि तीर बांकीगँसिया ॥
वेंदी भाल बिशाल विराजै नथ वेशर लटकन लसिय ।
कंचन कुँवरि स्याम तन सारी घुँघट पट मुख छवि शशिया ॥

वाह २ रे अवध नृपति छोरी ॥
खूब वनी नव वधू दुलहिया घूँघट पट किन खोलोरी ।
स्यामा वाम सुरूप वती तुम दुलह तुम्हारे कोभोरी ॥
चटक चुनरि वर छींट को लँहगो नथ बेशर तिय मणि होरी ।
वेंदी भाल विशाल नयनि सिन्दूर मांग दृग आँजरी ॥
सिय चरण पड़ो अब पैहो नर भूषण पिय चित्त चोरी ।

यह शौन्दर्य निरखि जग को है जो नहि तुमने मोड्योरी ॥
भीने रहो रँग भीने रहो दोउ।
यह रंग भीनी छबि अखियन कीं प्रीतम नित २ देतेरहो ॥
आपरँगो रंग डारो हमन को हमसे भीरँग लेते रहो।
सिया अलीयह रंग की बधाई मोहि मुख चुम्ब देते रहो ॥

श्री अग्र पद ६४—अब के बसन्त अधिक बनि आयो हो।
खेलत बहुत सदैव अवधपुर यह सुख कबहुँ न पायोहो ॥
और वेर बहुतै सखि मिलि २ मारति भर पिचकारी हो।
अबके खेल सरोवर सन्मुख कहि न जाय छबि न्यारी हो ॥
चोवा चन्दन अतर अरगजा नाना रंग अबीरहो।
केशरि कुम्कुम कीच मचौ मनो बरषत भादों नीर हो ॥
चंग मृदंग उपंग खंजरी मधुरे सुर सहनाई हो।
जीतत जबहि नायका नायक सहचरि उठत बजाई हो ॥
कोउ सखि सुचि श्लाघी प्रीतम को कोउ सीता गुन गावैं हो।
दशरथ जनक दुहूं मिलि प्यारी गारी देहि दिवावैं हो ॥
यह छबि निरखि सुमन सुर बर्षत उचरतजै रघुराई हो।
सीता राम फागु रँग राते अग्र अली बलि जाई हो ॥

श्री अग्रपद राग जैतश्री ६५
खेलत राम रघुपुरी रुचि सों बहुभातिन सुखदाई हो ॥
इत जानकी युवति मण्डल में उत सोभीत सँग भाई हो।
चँवर छत्र लिये धुजा पताका रचना रुचिर बनाई हो ॥

सबैस्वाँग को सौज सची हैं जैसे निघट न जाई हो ।
बाजेबजन लगे दुहुँ दिशिते गावत गारि सुहाई हो ॥
मनहु द्विरद छूटे मद माते लस्त परस्पर धाई हो ।
केशरिवारि कुन्कुमा भरि २ छुटत छिंछ पिचकारी हो ॥
प्रेरीत पवन मनहु पावस ऋतु छन बर्षत पुरबाई हो ।
चोवा चन्दन छल बल करिके प्रीतम मुख लपटाई हो ॥
राजिव नैन लेत जब वदलो तब सिय शैंन सुहाई हो।
चारुशिला रुख धाइ अली इक छल करि पिय धरिलाई हो ॥
हा हा किये तबैं भल छुटि हौं कैं सीता शिर नाई हो ।
मृग मद मलय अवीर सुरभि सखि अजिरन कींच मचाईहो ॥
उमड़ चल्यौ अरगजा पनारनि वीथिन नदि बहाई हो ।
कृस्न अगर सों भरे चह वचा धूप धूम नभ छाई हो ॥
सौंधो लहरि महोदधि मानो पुरजन प्रीति कराई हो ।
भरति भरावति कुँवरि कुवर रस होरीं कहि किलकाई हो ॥
मनु मघवा धुनि व्यापि रही सब उठत मदन मन भाईहो ।
पख रोटा वीरिन में पंछी मिसके हाथ दिवाई हो ॥
ग्वान लगे उड़ि गई चिरोंजी हँसि करताल बजाई हो ।
खम्भ २ प्रतिविम्ब स्याम के जहँ तहँ देत दिखाई हो ॥
कुश ध्वज कुँवरि भरति भ्रमसों जब तब हँसि करत खिलाई हो ।
पलटे पकरे जाइ सत्रुहन कज्जल आँख अँजाई हो ॥
करत सबै भामिनि मनभायो नारि वेष बनवाई हो ।
सिय जू की हौं दाशि बदौ तो तौही लेहु छुड़ाई हो ॥

रंगरँगे खेलत अंग अँगन जनकसुता रघुराई हो ।
रीझि सुमन बर्षत सुर संघट दिबि दुन्दुभी बजाई हो ॥
जाल रंध्रनिरखत सुख जननी आनन्द सिन्धु बढ़ाई हो ।
तन धन प्राण करत न्यौछावरि वारत बहुत बधाई हो ॥
बीच कियो कौशल्या रानी फगुआ गोद भराई हो ।
सीताराम बिनोद फागपर अग्र अली बलि जाई हो ॥

श्री अग्र पद ६६—रघुकुल बधू झरोखे झाँकै राघो खेलैं होरी ।
भरत परस्पर सुधि नहि पैयत को प्रीतम को गोरी ॥
जहँ तहँ राम जानकी सन्मुख लाघब कही न जाई ।
केशर कुम्कुम कीच मची हैं बर्षत घन पिचकाई ॥
नभ बिमान गन थकित रहे हैं सुर बनिता सब गावैंहो ।
पुष्प बृष्टि करि जै जै उचरैं प्रमुदित द्वन्द मचावैं हो ॥
केलि कुलाहल कौतुक देखैं पुर वासी वड़ भागी हो ।
सीताराम स्वरूप हृदय धरि अग्रअली अनुरागी हो ॥

श्री अग्र पद ६७—जानकी खेलन होरी पिय संग चली ॥
अपने २ भवन से निकली उर सोहै चम्पाकली ।
श्रुति कीरति उर्मिला माण्डवी चारों जनकलली ॥
राम लखन रिपुदवन भरत की जोरी बनि हैं भली ।
सिय जु के छूटि गुलाल मूठि भरि राघो के पिचका चली ॥
रमकि झमकि पिय के सन्मुख होइ मुख भरि रोरि मली ।
दुहुँ दिशि ते रँग वर्षन लागे कुम्कुम छाइ गली ॥

राजा दशरथ कौशल्या झरोखन दृग सुख लेत भली ।
सीताराम विनोद फाग में बलि २ अग्र अली ॥

श्री अग्र पद ६८

सीताराम विनोद फागकी निरखि सखी बलिहारी ॥
जग भूषण निदूषण जोड़ी राजत अवध विहारी ।
सुन्दर वर रघुवीर धीर अति शोभा निधि सुकुमारी ॥
चारुशिला विमलादि अली गन मध्य सीय छबि धारी ।
श्रुति कीरति उरमिला माण्डवी यूथ २ लिय प्यारी ॥
अपनी अपनी टोल खड़ी सब रंगन साज सम्हारी ।
प्रीतम स्याम सुजान संग लिय सखा समाज सुधारी ॥
खेलत रंग उमंग अंग २ हार जीत चित्त धारी ।
चंचल चपल चहुँ दिशि सखिगन सखा स्याम दिय गारी ॥
धूम मची खेलन में सो छबि कहि २ सारद हारी ।
अग्र अली उर बसो अहो निशि शील सरासन धारी ॥

रघुनन्दन खेलत होरी ।

विपुल सखिन सँग जनकनन्दनी वन्यो सखा हरि ओरी । फाग मचीं बहु बाजन गाजन होत सोर चहुँ ओरी—लसैं सब सुन्दर जोरी ॥ कुंकुम कीच मची सयू तट लाल भये जल धारा । वर्षहिं रंग देवतिय नाचहिं काहू पट न सम्हारा-अंग सब रंगन वोरी ॥ राम सखा ललकारि अग्र वढ्यो इत सखियन करि जोरी । भरत लखन रिपुदवन लाल को धरि ल्याई निज ओरि- करहिं मन भावत गोरी ॥ भूषण

बसन उतारि लीन्ह सखि निज भूषण पहिराई। रामचरण सखि छाँड़ि दीन्ह तब सियजू कि जीत कहाई,

भई जै जनक किशोरी ॥

सँइयाँ से खेलत होरी हो झुलनि वालि गोरी ॥

बहुत दिनन में पायो अकेली लाल पकरि भरि कोरि हो ॥

अंजन दृगन लगाइय मधुर हँसि मसलि कपोलन रोरि हो ॥

मधुर अली मन के भायो कियो मुख चूमत तृण तोरी हो ॥

श्री अग्र पद ६६

मोपै पिचकारीं न घालो छयल जोहमपर पिचकारि घालिहौ। तो तुम्हे लै भिजाउगी पहलो श्री जनकलली जुकि-

आयसु लैकै आउँ इतै रहो ठाठे गयल।

अग्र अली रघुनन्दन प्यारे देखौं मैं आज तुम्हारो फयल ॥

रंग होरी होरी होरीं लाल।

यह जोरी छबि लखि भइ निहाल ॥

तन स्याम गौर चहुँ ओर वाल,

घन दामिनि पहिरे कनक माल ॥

सिय सुभग गाल पिय दै गुलाल, जनु कनक लता पूजत तमाल।

चितवत दोउ युगल प्रिया कृपाल, जनु होरी वाटत दै गुलाल ॥

कहाँ पायो है लाल गुलाल गाल।

जनि सकुचाहु साँचि कहो कृपाल ॥

कित छैल फैल चतुराई, गई किधों सान्ता ने सान्ति स्वभाव दई।

मतिबिबशभई अतिमोदलई, सबबिशरिगयो फरफन्द ख्याल ॥ क०
हमसे इत निठुराई करत हौ, उत भगनी बश पाँव धरतहौ ।
देखत सन्त स्वभाव भरत हौ, उघरि गयो अब हिय को हाल ॥
रमतराम सबही सन प्यारो, अर्थ समर्थ सुबेद बिचारो ।
व्यर्थ बैन नहिं होय हमारो, चैनऐन मुद दैन माल ॥ क० ॥
जो हम रमत सबहि सन प्यारी, तोतुमहूँ निज लेहु बिचारी ।
सुनिरगबनमबन सुरनारी, बरषि सुमन लखि भई निहाल क० ॥
रसरसि प्रीतम प्राण पियारे, सियस्वामिनि अँसन भुज धारे,
युगल बिहारिणि तन मन बारो कनकलता लिपटी तमाल ॥

झूलन विहार

विजुरी चमकै घन घहराय ।
तरवर टपकत कोकिल कूकत पपिहा रटनि नेह उमगाय ॥
पावस छटा अटा चढ़ि निरखत जनक लली रघुराय ।
रसिकअली तड़कत जब बादर प्यारि पिय उर लपटाय ॥

झूलन पधारोजि हमारो राज ।
घिरि घिरि घटा घन उमड़ि घुमड़ि आये विजुली चमकत आज ॥
सुनि बानी रस सानी प्यारे चले झुलन के काज ।
कृपा निवास अली की जीवन गरे लाग तजि लाज ॥

प्यारी झूलन पधरो झुकि आइ बदरा ।
सजि भूषण बसन आँखियन कजरा ॥
मान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली ।

तुमतो परम सयानी मिथिलेश कि लली ॥
देखो अवध ललन पिया आगेहि खड़े ।
रस बर्षैं सुधा मुखि जब पायन परे ॥

श्री अग्र पद १००—चले दोउ झूलन को हुलसान ॥
पिय प्यारी के नित्य झुलन है नहिं कछु काल प्रमान ।
पाय प्रदोष काल सखियन संग गान तान झमकान ॥
पहुँचे झूलन कुंज सुहावन फूले बिविधि लतान ।
मोरन के यूथैं बहु विचरैं; नाचत पंख फुलान ॥
जाति जाति के पच्छी बोले भरि रहे शब्द दिशान ।
चहुँदिशि मणि मय महल विराजैं मध्य बिचित्र बितान ॥
तामधि सुन्दर परयो हिंडोला मोतिन के लहरान ।
तापर बैठे दियगल बांही प्यारी पिय रस दान ॥
नाना यन्त्र लिये सखि गावति लेत स्वरीली तान ।
दोउ दिशिते सखि झुलवन लागीं छबि लखि हिय उमड़ान ॥
दोउ मिलि झूलत हैं रशमाते अग्र निरखि बलि जान ।
करि झूलन रससिन्धु मगन दोउ चले न्यारि अस्थान ॥

श्री अग्र पद १०१ मल्हार—जनकपुर लागत तीज सुहाई ॥
रंग रँगीली अतिहि छबीली सब मिलि झूलन आई ॥
सावन मन भावन पिय प्यारो अवनी सहज सुहाई ॥
पावन कुंज पुंज सुख बरषत करषत मन बरषाई ।
कंचन खम्भ जड़ित डाढ़ीं नग बिबिध विचित्र बनाई ॥
रेशम डोरि कोरि बनि आई चहुँ दिशि जलज जराई ।

लाले बाल लाल रंग भीनी लालन लाल लड़ाई ॥
श्री प्रसाद, प्यारी कर गहिकै मंगल गाई चढ़ाई ॥
चारुशिला, पिय नैन इशारन झूलन प्रथम सिखाई ॥
झोका देत लेत सुख पिय को मन्द मन्द मुसकाई ।
लली पाग लाल शिर चुनरी लाली अति मन भाई ॥
उमगेउ रंग अनंग परस्पर मैन मलार जमाई ।
गावहि समर रंग भरि भामिनि कोकिल कण्ठ लजाई ॥
ठाकुर हमरे राम मन मोहन अंगन रूप लुनाई ।
ठकुराइनि मिथिलेश लाडिलीं शील सनेह भलाई ॥
होड़ा होड़ी मच्यो है हिडोला शोभा कहि न शिराई ।
अग्र अलीं प्रिय दम्पति झूलत जनक लली रघुराई ॥

श्री अग्र पद १०२--हिंडोरने झूलत जनक दुलारी ।
सखि इक जोर किशोर रूपनिधि बिविध भाँति तन सारी ॥
कंचन खम्भ पाटि पडुली डारी विद्रुम दुति न्यारी ।
पद्मराग मडुवा वेलन पन्ना आड़इन्द्र मनि भारी ॥
धाम निकट आराम हरित द्रुम क्रीडत तहँ सुकुमारी ।
गावत मिलि हैं हरषि हिंडोरा कल कण्ठित उन हारी ॥
करत अन्दोल लाल चंचल चल जनु दामिनि छबि हारी ।
साँट लिये सजनी हरपावति नाम लेहु पिय प्यारी ॥
नाम न लियो सकुच सूचि कर देखि ईषु धनु धारी ।
श्रम स्वेद बिन्दु निरखि वदन पर अग्रअली बलिहारी ॥

श्री अग्र पद १०३--तिताला--हिंडोले झूलत सिय महारानी।
श्रुति कीरति उर्मिला माण्डवी चारुशिला गुणखानी ॥
रच्यो हिंडोरा नाम लिवावति चतुर सखी मुसुकानी ।
सिया जू सकुचिरही नहिं बोलति अग्र अली मनमानी ॥

श्री अग्र पद १०४--हिंडोरे झूलत सीताराम।
स्याम गौर अभिराम मनोहर रतिपति के चितचोरे ॥
नील पीत वर बसन लसत तन उठत सुगन्ध झकोरे ।
सहचरि हरषि झुलावति गावति छबि निरखत तृण तोरे ॥
मन्द २ मुसुकात छबीलो रमकत थोरे थोरे ।
अति सुकुमारि अग्र की स्वामिनि डरपि गहति पट छोरे ॥

देखो राम बने जनु सावना। सिया लगि रंग बढ़ावना॥
सियवर की मोतिन कीं माला सो बगपांति लजावना।
इन्द्र धनुष सिन्दूर सिया को घनरस को वरषावना ॥
पछिलो पवन सुसन्त विचारो स्याम घटा प्रगटावना ।
रबि बिनु कबि बुध मिलि के लागे रस की झरी लगावना ॥
सिय जू उत्तर दिदि की दासिनि राम स्वरूप लखावना।
चमकि झमकि सो निज दाशन के अन्तर जोति जगावना॥
ब्रह्मदेव हूं यह सावन को करत निरन्तर ध्यावना।
सियाराम जू जन्म २ की जिय की जरनि मिटावना ॥

झूलैं नवल हिंडोले, पिय प्यारे संग बनि ठनि स्यामा ॥
रतन जड़ित अति रुचिर हिंडोला तामैं, रचना अनेक द्रुम-

सावन के कुंज बीच, बाजत मृदंग आदि गावत समूह-
सखि, कोटि काम रति वामा ॥ सीतल सुगन्ध मन्द बायू-
के प्रसंग तहां, घेरि घेरि आवत बलाहक के वृन्द नान्हि,
नान्हि बुंदियन बरिषन के समै छबि, अति शोभित सिय-
रामा ॥ शीश को नवाइ ईश को मनाइ कै मुनीश, वार २-
बिनय करत कर जोरि २, नृपति किशोर व किशोरी जू-
आनन्द रहैं, यह हमार मन कामा ॥

रागमलार—नृपनन्दन मिथिलेश किशोरि अलबेली झूला झूलैं ।
पाँयन पाँय करन कर जोरे अरस परस रस हूलैं ॥
मरकत कनक चर्म मन सिज के गोहन रंग अतूलैं ।
रसिक अली अद्भुत रस लीला निरखि २ चित्त फूलैं ॥

लिये झूलैं छबीले सुधर धनिया ।
घुंघट बीच अनोखी चितवनि बदन सरोज कशे तनिया ॥
मन्द हँसनि मुख चन्द सुधारस जनकलली रघुकुल मनिया ।
शीलमणी नव रंग रँगीली जोरी बनी सुखद धनिया ॥

श्री अग्र पद १०५—झूलत राम राजिव नैन ॥
जनक जा सनमुख विराजति तड़ित ज्यों घन गैन ।
अतिहिं झूलत मनहिं फूलत रहसि तोषत मैन ॥
लाल के उर लागि शोभा निरखि करषत ऐन ।
परसपर अनुराग दोऊ बदत मधुरे बैन ॥
जाल रंध्रनि निरखि वनिता अग्र उर सुख दैन ।

झूलो नित्त यहि झूलन हों, मोरा बालम जी।
आप झुलो व झुलावहु प्यारी हिय हिय में रस फूलन हो॥
झमकि झुलावै आलिगन गावें चितवन की अनुकूलन हो।
जुलुफनि जाल अरुनि अभि मुसुकावै फहरनि अंग दुकूलनहो॥
स्याम सुरभि बन सघन सुहावै दामिनि छवि घन तूलन हो।
यह शौन्दर्य निरखि सुख वनिता हिय नव नेह सुमूलन हो॥

पिय लखु सावन सुवहरिया।
धीर समीर नीर वरषत सत बशि गये सबुज सहरिया॥
झूला झुलिये भूलिये मति पिय करिये नित कचहरिया।
कोविद मोद विनोद महा लखु जल थल वहत डहरिया॥

प्यारी झूलन पधारो पिय रस बरषे। तुम दामिनि वरण पिय घन दरषे॥ यह लखन सरस रस दृग तरसै। दै सबहिं ललित सुख सिधुकरसै॥ चली लली जू झूलन सुनि सखि बच सैं। लखि नवल प्रिया के बड़ भाग फल सैं॥

श्री अग्र पद १०६-झुलत सिया राजिव नैन।
रतन जड़ित हिडोलना सखि राम सुख के ऐन॥
स्याम अंग पर गौर झलकत दामिनी घन गैन।
मैथिली रघुबीर शोभा निरखि लाजत मैन॥
नाम पिय को लेहु नागरि सब सखिन मन चैन।
जानकी नहि लेत मुख सो देति लोचन शैन॥
परस पर झुलत झुलावत वदत मधुरे वयन।
अवधपुर नित केलि दम्पति अग्रआनन्द दैन॥

श्री अग्र पद १०७—हिंडोरना में काँई झूलो राज। सिया प्यारी सुकुमारी॥अगर चन्दन को बनो हिंडोरा-मलयागिरि को पटा।'रेसम डोरि पवन पुरवइया वह-सावन को घटा॥ प्यारी झूलैं लाल झुलावैं भली बनीं-सजनी। उड़ि २ अचरा परत भुजनि पर डरपति शशि-बदनी॥ विपिन प्रमोद लता कुंजन में श्री सरयु के-तटा। सिय प्यारी के झूलना वे निरखति अग्र छटा॥

श्री अग्र पद १०८

दशरथ सुत अरु जनकनन्दनी चितवनि में चित चोरैरी।
नान्हि २ बुन्द पवन पुरवैया वरषत थोरे २ रीं॥
हरि २ भूमि घटा झुकि आई सर्यू लेत हिलोरे री।
उपवन बाग विहंगम बोलैं दादुर मोर चकोरे री॥
हयदल पयदल गजदल रथदल कोटि बने चहुँओरे री।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ शंखन की घनघोरे री॥
नागरि नाम लिवावैं पिय को सियजू हँसि मुख मोरैरी॥
अग्रदास हरि रूप निहारे चरण कमल बलिहारैं री॥

—०※०—

झूलत नवल दसरथ लाल।
सरयु तीर प्रमोदवन में लिये संग सिय बाल॥
अरुण मणिमय हेम डाँड़ी रतन खम्भ विशाल।
गुही रेसम डोरि मोतिन पटुलि जटित प्रवाल॥
लखि बिचित्र हिंडोल विमला नटति दै करताल।
हेरि हरि मुख देति झोका परी छबि के जाल॥

प्रेम वश लखि गही प्रीतम बोलि बचन रसाल ।
राम सखे विलोकि यह रस कोन होत निहाल ॥

—०❀०—

दशरथ राजदुलारे सिया संग झूलैं हो ॥
सयू किनारे सुहावनि कदम जुरि छहियां हो ।
ताहि तरे झूलें हिंडोला दिये गल बहियाँ हो ॥
एक ओर जनक किशोरी सखिन संग सोहैं हो ।
एक ओर राघो विहारी लली मुख जोहैं हो ॥
प्यारी के लट पिया जुलुफन झूलत अरुझैं हो ।
अचल रहैं सखि स्यामा कबहुँ नहिं सुरझैं हो ॥

—०❀०—

राग सोरठा—नवल रसिक झूलें, प्यारी संग लीन्हे । मन सो मन दृग सो दृग दीन्हे ॥ चारुशिला अलि हरषि झुलावैं-गावै तान नवीने । बजत मृदंग ताल सारंगी लेत तान-स्वर झीने ॥ बढ़त उमंग अंग अँग छिन २ पिय प्यारी-रंग भीने ज्ञाना अलि छबि निरखति ठाढ़ी सो समाज-जित कीन्हे ॥

—०❀०—

रसिया नामानैं सजनी झूलत मन न अघाय । सोवति सजनी अपने भवन में औचक मोहिं जगाय ॥ वन-प्रमोद कुंजन २ में नित उठि झूलत आय । ज्ञानाअलि-सिय पिय संग झुलिहों अभय निशान बजाय ॥

—०❀०—

हिंडोरे झूलत कौशल चन्द ।

बाजहिं बाजन मधुर गान ध्वनि दशों दिशि होत आनन्द ॥
सयूँ तीर शुभग श्रृंगार बन ललित परन फल फूले ।
गुंजहि भ्रमर मधुर स्वर कोकिल बोलहि पिय अनुकूले ॥
फूलन केर विचित्र हिंडोरा लसत फूल मय डोरी ।
फूलन के युग खम्भ मनोहर रचि पचि मदन सच्योरी ॥
फूल मुकुट पट लसत रामके फूलन के सिय सारी ।
नख शिख लौं फूलन के भूषण दम्पति अंग सँवारीं ॥
फूल तरंग उठत सयूँ की फूल बरषि घन घानी ।
रामचरण सखि सब श्रृंगार किये फूल गान मय बानीं ॥

—○❀○—

हिंडोले झूलत सिया रघुनन्दन ।
चलुरी सखी नैनन सुख लीजै देखि २ दोउ चन्द ॥
सावन घन घमण्ड झुकि आयो मधुर २ झरि घोरे ।
मधुर मधुर मृदंग सहनाई बोलहि नाचहि मोरे ॥
झूलहि रघुवर जनक नन्दनी सखियाँ झुलावहि जोरे ।
झूलहि झूमि जाँहि सयूँ में झुकि छुवहिं हिलोरे ॥
अति सुन्दर बन बन्यो हिंडोरा संग सगाज सब झूलें ।
इत उत झुकि २ झूलें हिंडोलन मारहि गैदन फूलें ॥
झूलहि संग झुलावहिं वहु प्रिय मधुर २ स्वर गावें ।
रामचरण वश सुर तिय नाचहिं गाय सुमन झरि लावैं ॥

—○❀○—

हिंडोले झूलत लाड़िलि लाल ।
नील सघन पल्लव तरु शोभित जनु वितान घन माल ।

गर्जहि मधुर २ पिय मन लै कोकिल शब्द सुराल ॥
बरषत मेह झरत तरु अमृत बोलतमोरि रसाल ।
श्री सरयू उमगत उज्वल जल लहरि उठत मनो जाल ॥
त्रिविध पवन निन्दत मारुत चल पट फहरात सुलाल ।
पद कर भूषण तड़ित नखत शशि निन्दत धनु सुर पाल ॥
बहु सखि संग २ झूलत हैं बहुत झुलावत बाल ।
गावहि मधुर लाल मन मोहैं करहि विविध रस ख्याल ॥
मनहु मदन रति के व्याहन कहँ साजि सकल निज जाल ।
लाल विहार देखि वन भूल्यो बिशरि गयो सब हाल ॥
यह रस रासि रसिक कोइ सखि सोइ निशि दिन रहत निहाल ।
रामचरण यह छांड़ि कहै कछु कारिख तेहि मुख भाल ॥

—०❀०—

हिंडोले झूलत प्यारो प्यारी ।
नव योबन गुन रूप नये दोउ रघुवर जनक दुलारी ॥
अरुन वसन वर लसत दोउन तन मनि भूषन छविकारी ।
इत प्यारी की हलत चन्द्रिका पिय कलँगी छबि भारी ॥
मचकैं लेत हिचकि दोउ गति सों पग नूपुर झनकारी ॥
गावत अली मलार राग रुचि सोउ गति लेत सुधारी ।
कनकभवन मुद मंगल शोभा नित उछाह रसकारी ॥
रसिक अली बारत तन मन धन निरखि २ बलि हारी ।

दिये गल बांहीं, झुलैं दोउ रसिया ।
नेह नवल रस रंग बढ़ाये जनु दामिनि घन माहीं ॥
अति विचित्र रसमय हिंडोल में छवि सुख सिन्धु समाहीं ।

झूलत रसिक मनि रघुनन्दन। संग सिय अलबेलि नागरि वदन छबि बहु चन्द ॥ रतन जटित हिंडोलना लखि सूरशशि दुति मन्द। रसिक अलिअलिगन झुलावति फँसी छबिके फन्द ॥

प्यारो प्यारी को झुलावे गावे रसभरी तान ॥ कनक भवन में कनक हिंडोला रबिशशि ज्योति लजावै। चहुँदिशि ललित बितान बादल झालरि झुमका सुहावै ॥ इत घन गरजत रिमिझिमि वर्षत मृदु मृदंग धुनि छावैं। रसिक अली सिय प्रीतम ऊपर बार २ बलिजावैं ॥

तेरी झमक झूलन पर वारिरे।
झूलन जोर मोर अँगन की चित वनि अति अनियारिरे ॥ पान खात गावत स्वर मधुरे छबि उमगत लग प्यारिरे। कृपा निवाश दाशि चरणन की अवधबिलाश बिहारिरे ॥

झुलै झमकि झुलनवाँ लाल लली। बन उपवन निन्दत नन्दन बन पूरि रह्यो फलि फलन फुलनवाँ ॥ सुर निरखत अति दशन अधर धरि छबि छकी भारति जितन तुलनवां। कोविद तन मन भुषन बसन सब करत निछावरि उपर हुलनवां ॥

सिय जूहो झूलत फूलभई।
फूली २ फूल हिंडोले अनुकूली अधिकई।
प्रीतम प्राण झुलावत छबि सो शोभानिरखि नई। रूप रसिक

रस छके परसपर मानत नहि तृपतई ॥

———

झूलन कि झाँकी अजब बनी है प्यारि संग झूले पियरबारे। स्यामलि सूरतिया पै गोरि सिय सोहति अँखिन में सोहै कजर बारे॥ भूषण बसन रामसिय राजतरति अनंग छबि छोरबारे। सरयू तीर प्रमोद बिपिन में हरि लीन्हो मेरो हियरबारे॥ घनगरजे चमकै दामिनियां सुनि २ बोलत मोरबारे। नान्हि २ बुंदिया परतभूमि पर धिरे २ बहत समिरबारे। राम शरण दम्पति सुखमालखि नैनन वहै जलधरबारे। झूलन कि झाकी में चित नहि जाको जनु भूँकत कुकर सियरबारे॥

———

झुलन्दा तेरी अँग २ माधुरी जोर। सुरँग पाग मोतिनदी कलँगी हँसि बोलनि चित्त चोर। भृकुटी कुटिल नैंन रतनारे हेरनि वंक मरोर। प्रिया सखी दोउ अवध बिहारी बलिहारी तृण तोर॥

———

झुलते है झुला मूला मुद लाल ललीरी॥ झुलावै नजीर बना हीर मनि गना। झुलवाती हैं हुस्न भरी भीर अलीरी॥ देता है आब अब्र जब्र हुक्म दिल नसीन। जाना जहान आब आनो कल्प कलीरी। बागे बहार जागो दिलदार कार सब-। धीरे समीरे सीरे गति लागि भलीरी॥ गाते हैं गुणी ल्याते हैं तानैं अजब वहार। कोबिद रचे हैं नाच परी दिल को छलीरी॥

———

राघो रमकि झुलावै प्यारी बाढ़त उमंग। लखि ललकि नवेली गावै नवल सुढंग॥ सोहै भूषण अमोल मणि वसन सुरंग।

माहिं मनसिज रति लखि सखिन को अंग ॥ सिय वदन विलोकि लाल भये मन दंग। सिय रसिक अली के हिये यही रस रंग ॥

———

हो जि धीरा २ झूलो लाड़िली डरैछै। अंग उघरै छै मोति लर लरकि परैछै॥ अति सुकुमार भार योवन को मृगनैनी चोंकि परै छै। जन रघुनन्द सिया पिया छबि पर पलकों से पवन करै छै॥

दै गलबाँही झूलैं दोउ आज।

सरयू तीर तमाल कुन्ज में जनकलली रघुराज ॥ काह कहूं सखि कहत बनना कोटिन सुख के साज। मधुर अली सब तजि संग झुलिहौं छाँड़ि लोक कुल लाज ॥

धीरा झूलो जि धीरा झूलो।

मोरि छतिया धरकि काँइ हूलो ॥ बार छूटिगे हार टूटिगे गिरिगे अंग दुकूलो॥ राम रसिक रस सहजक लीजै नाजुकतासम तूलो। कृपा निवासी कहत छबीली छैल मया जनि भूलो ॥

झूलावत रामरसिक पटरानी।

नेह नाह को निरखि नागरी नैनन में मुसुकानी। कर गहि डोर चकोर दृगन करि चितवनि चन्द लुभानी ॥ कृपा निवास विलासिनि प्यारी प्रीतम को रस दानी ॥

तेरी बांकी झूलन पर वारि रे।

झूलन जोर हिया बिच कसकत मानहु हूँल कटारिरे। मैन कटाक्ष बान धनु भ्रकुटी जुलुफन जाल सुधारिरे। कृपा निवासि दाशि चरणन की रहिगई ठाड़ि कि ठाड़ि रे॥

ललित ललि लाल अलि झूलने झुनही ॥ सरयु सरि तीर मनि महल मोहन मदन मध्य परिकर निकर सुकर रुचि हूल हीं ॥ युगल उत्साह चित चाहैं पंकज कली सुरितुरवि निरखि हिय हर्ष फबि फूल हीं ॥ गान तर तान रसखान दश दिशि श्रवण सुनि सुधुनि युग्म सखि विकी विन मूलहि ॥

सरयू कूले बना रहैं सावन । पिय प्यारी नित झुला झुलै अलिगन झमकि झुलावन ॥ घन गरजनि चमकन दामिनि की मोरवा बोल सुनावन । बाजहिं बीणा मृदंग मुरलिका राग रागिनी गावन ॥ छत्र फिरावन व्यजन चलावन दुहु दिशि चँवर ढुरावन। मन्द हँसन चितवन रस बोल न नैननि शैन चलावन ॥ अतर पान माला की पहिरन अरस परस मन भावन । भूषण वसन अंग अरुझावन भुज से भुज लपटावन। गेंद उछारन कमल फिरावन रसिकन हिय सुख छावन। रस माला तृण तोरि अशीषत राइ लोन उतारन ॥

सदा झूलो मेरे दिलवर बढ़ै उत्साह नया । जियो युग २ प्रिया प्रीतम यहि हैं चाह नया ॥ लताबितान वन प्रमोद तीर सरयू के, हिंडोल अति बिचित्र मनिनमय तयार नया ॥ अनेक यन्त्र बाजते मृदंग बीणादिक । अलापती हैं गान कला सजे साज नया ॥ यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन के । बैठे झूलन पै दिखाते रहो मुख चाँद नया ॥ यही अभिलाष कान्ती लता श्री सिया जू की । बढै दिन २ सदा सनेह सुख सुहाग नया ॥

हिंडोले झूलैं श्री जानकि जान ॥
युगल प्रकाश कुञ्ज कुञ्जन में बिपिन प्रमोद लतान। स्याम बदन पर जुल्फैं छोड़े मन्द २ मुसुकान ॥ प्यारी संग समाज अली गन लेत नई नइ तान। युगल प्रिया वारत तनमन धन करत निछावरि प्रान ॥

झूलै प्यारी झुलावैं प्यारो ॥ मधुर २ करकज मंजु गहि रेशम रजु सुकुमारो। नैनन निरखि नवेली बिधुमुखमन्द हँसनि नृप बारो। अरुझिरहे अँग अँग परस पर सरुझनि अगम निहारो। युगल अनन्य अली झूलन लखि तन मन सरबश बारो ॥

नवल हिंडोलना सखि झूलत दशरथ लाल।
गरजि घन कोकिला बोलहि उमगि आनन्द माल। सखा नुज सब नवल सुन्दर कीन्ह नवल श्रृँगार। झूलि नवल हिंडोलना सखि लाज कोटिन मार ॥ पवनमन्द सुगन्ध सीतल नील घन चढ़िआय। लसत दामिनि झूलते जब युगल पट फहराय ॥ सुमन वर्षहिं देव हर्षहिं किन्नरी बहु गाय। रामचरन समस्त देखहि अवधपुर जनुधाय ॥

चलो सखि देखन जइये, राघो जि रचो है हिंडोल। हेम रतन मय रचो है हिंडोला हमहूँ झूल झुलैये॥ रघुनन्दन छबि जनकनन्दनी निरखि नयन फल पैये। गाउब नाचि बचाइ भली बिधि स्यामास्याम रिझैये ॥ सावन के अनुहरित सुहाबन सुभग श्रृँगार बनैये। यूथ २ मिलि चलि हैं सुलोचनि लली

लाल मन भइये ॥ अति सुन्दर बन बनो हिंडोला बहु बसन्त छबि छइये। रामचरण लखि सिय रघुबर छबि, रति पति कोटि लजइये ॥

झूलत नृपति किशोर किशोरी। बिपिन अशोक सुभग सरयू तट हरित भूमि चहुँ ओरी ॥ मध्य महामण्डप झूलन को मणि मय सुभग बन्योरी। तामधि झूलत प्रीतम प्यारी संग सखी गन कोरी ॥ प्रीतम चारुशिला दिशिराजत श्रीप्रसाद सिय ओरी। शान शृँगार सजे नव नागर नागरि रंग भरोरी ॥ सन्मुख श्री मैथिली इशारे लीला सखिन कियोरी। कमला चन्द्र कलादि रँगीली वीणा मृदंग सज्योरी ॥ कोउ गावति कोउ नृत्यति थिरकत राग मलार सुहोरी। अति आनन्द उमंग तरंगन मानदाशसुखसोरी॥

= =

झूलद सिया बल्लभ लाल ॥ लाल कंचन सम्भसुन्दर ललित डाड़ी लाल। लाल भूषण अंग झलकत लसत चीर सुलाल ॥ लाल दोउ के बदन शोभा अधर बरीं लाल । लाल सखिया लाल गावति सब झुलावैं लाल ॥ मोर हंश चकोर कोकिल भनत बानीं लाल। लाल रीझत लाल ऊपर परस्पर सब वाल ॥झुलत झुलावत औसरिन सों परस्पर सबबाल। कृपानि वाश सुलाल जोरी निरखि नैन निहाल ॥

चलो देखैं सिया रघुवीर झुलनवाँ झूलि रहे। रहि २ झौंका देत अलीगन उड़त सुरँग रँग चीर ॥ झोंकनि में अलकैं झुकि झूमत मनहु भँवर की भीर। मन मृग मोहनि को वेधत हैं तकनि तीर वेपीर ॥

ब्यारू

श्री अग्र पद १०६–चले दोउ ब्यारू कुँज अली ।
करि विहार झूला के दम्पति रघुवर जनकलली ।। रतन जड़ित शिबिका अति सुन्दर तापर लाल लली । चहुँ दिशि सखियन सौंज लिये हैं नाना रंग रलीं ।। पहुँचे ब्यारी कुंज सुभग जहां मध्य सुरतन थली । करि सन्मान सखी कुंजेश्वरी आनन्द भरि उछलीं ।। बैठाई रतनन चौकी पर पूजन करि सुभली । नाना विंजन कनकथार में अग्र धरी रसलीं ।।

श्री अग्र पद ११०–सखी सब शैन भोग लै आई ।
मेवा मिश्री दूध मलाई और अनेक मिठाई ।। सुरभीयुत विंजन बहुतेरे थारन भरी सुहाई । पान पदारथ शुचि सुगन्ध मय बहु औषधन मिलाई ।। पावत तुष्ट पुष्ट होइ जावैं रास जनित श्रमहाई । चषकन में भरि धरि आगे मैं दम्पति के मन भाई ।। पावन लगे रसिक दोउ प्यारे करि २ विजन बड़ाई । हँसत हँसावति सखिन पवावति बातन में बिर माई ।। करि भोजन अचवन पुनि करि कै पान पाइ मुसुकाई । शैन आरती अग्र करी जब पौढ़े पलंग सुहाई ।।

श्री अग्र पद १११--ब्यारू करत युगल रस भीने ।
रचि २ विंजन सखिया परोसैं बहुत प्रकार नाम को गीने ।। हँसि हँसि पावत हैं पिय प्यारी रूपमाधुरी लखि चित दीने । प्यार

निजकर कमल कवल लै प्यारी मुख में देत प्रवीने ॥ तैसहि प्यारी ने।पिय मुख में ग्रास पवावति अति मधुरीने । मिसरी बहुत सुगन्ध मिले जो दूध पवावति सखि कर लीने ॥ करि प्यारी अँचवाय सखी सब पान पवाय सुगन्ध भरीने । दै गलबाँह प्रेम रँग भीने शैन कुंज सुख अग्र नवीने ॥

शयन

श्री अग्र पद ११२-चढे सुखपाल लाल आवत महल मैं । आगे २ भीर भारी पाछे असवार सारी तहाँ मध्य रघुवर मदन गहल में ॥ चुनि २ कलियां सें सेज बनायो चंचा चन्दन छिरको चहल में । पाढे दशरथ राज कुँवर वर अग्रअली निज दासि टहल में ॥

श्री अग्र पद ११३= पौढिये रसिक जानकी रमन । सर्व ऋतु के भोख यामें महल अति मन हरन ॥ बिविधि रचना बनी जहँ जहँ बिधि निपुणता हँसन । सेज रचना बनत कहि नहिं मनहुं अन सिज भवन ॥ पिया प्यारी ताहि ऊपर केलि कर सुख सदन । यहई आशा अग्र सखियन सुफल कुरु ललि ललन ॥

जानकि बल्लभ लालकी सखि आरति कीजै । सुन्दर वदन बिलोकि के नैनन फल लीजै ॥ कुण्डल ललित कपोलना श्रुति अलक बिराजै । कण्ठा कण्ठ सुहावना गजमुक्ता राजै ॥ पाग बनी जर तार की दुपटा जर तारी । पटुका है पचरंग की मनि जरित किनारी ॥ सिया झुकि सोहै लाली चूनरी जरि जरिब

किनारी। रसिक अली की स्वामिनी अद्भुतं छबि भारी ॥

श्री अग्र पद ११४-सुखसेज पौढिये राम सीता रमण। राग रंग सुरुचिर शौरभ सौंज चिटिका चित्र चँदवा बिबिधि सुन्दर भवन ॥ रूप शुठि गुण कोक बिद्या कुशल रचना बचन बिदुष सुपिया पारस गवन। जनकजा राजीव नैन सुमैन छवी लखि अग्र सहचरि जान अपर सो कवन ॥

श्री अग्र पद ११५-महल में सोवत हैं दोउ प्यारे ॥ रतन जड़ित पलका अति सुन्दर मयन मनहुँ तन धारे। ताके ऊपर बिस्तर पय के फेन लजावन हारे ॥ तापर पौढ़ युगल बिहारी हर रिपु कला सुधारे। करत केलि नाना विधि दम्पति सखियन नैन निहारे ॥ हँसि २ बातैं करत परस्पर वर्षत मोद अपारे। अग्र स्वामिनी स्वामी दोऊ जीबन प्राण अधारे ॥

श्री अग्र पद ११६

सोये सेज प्रिया प्रीतम दोउ अतिशय करि निद्रा आधीन। यक्षकर्दम कंचुकी सिया उर तामें भँबर भयो इकलीन ॥ वाश लुब्ध को शब्द श्रवण सुनि संभ्रम राम बिलोकत दाम। रही पुष्प अवशेष हृदै में शायक सर्पाद मारि गयो काम ॥ प्रेम विकल परतीत न मानत वैदेही हित पावत खेद। अग्र स्वामि आधीन प्रिया के मिथ्या दुख आयो तन स्वेद ॥

श्री अग्र पद ११७-चलो सखि सो गये राज किशोर ॥ मणिन जड़ित को पलंग मनोहर ताके छबि अति जोर। मिलि सखियन सब चरण पलोटत रस बश पिय घनघोर ॥ चौकी

वालि सजग होइ रहियो लागे न कहुँ दृग चोर । नूपुर दाबि चलो मोरि सजनी होय न जेहि पग सोर ॥ शुभग सेज सिय-राम शयन लखि ललचत हैं मनमोर । अग्र अली दम्पति दर्शन हित आवहिगी बड़िभोर ॥

श्री अग्र पद ११८-महल बिच शोर करै जनि कोइ ॥ कछुक रहस्; बश कछु आलश बश अबहि मैथिली सोइ । नूपुर दाबि चलो मोरि सजनी तनक झनक नहि होइ ॥ पहरेदार सजग होइ रहियो आवागमन न होइ । अग्र अली के जीवन धन दोउ जगैं न पलका सोइ ॥

श्री अग्र पद ११६-चली सब युग छवि हिय में धरी ॥ सोय गये सखि पिय प्यारी अब आनन्द रस में भरी । लाल लली गुण कहत परस्पर आनन्द सिन्धु परी ॥ निज २ कुंज के ओर गई सखि युथेश्वरि सबरी । सबसे मिलि सँग चारु शिलाथल अग्र गई स्वथरी ॥

राघो जी छबीले प्यारे नूपुर न छोरो । चरण शरण आई ये तुम्हरी जानि विरद जनिटोरो ॥ नीद विवश सब तीय महल की डर न करो पिय मेरो । राम सखे चित्त चढ़ै जौन तिय ताहि जाइ रंग बोरो ॥

राघो जी कनक भवन को राज ॥ पटरानी सिरताज सवन की आयशु करतल काज । नृपशादूल शान बड़ जग में न्याय सबै सुख साज ॥ आनन्द सिन्धु लाज दरबारिन कौन उलंघ सुनाज । दण्ड चोर जन सब को हित शौन्दर्य निहोरो आज ॥

श्री अग्र पद १२०—चहियत कृपा लली सीता की। नवधा भक्ति ज्ञान का करना मिट गइ शंक वेद गीता की॥ षट मत वेद पुरान पुकारत करत बाद नर बपु बीता की। झगरो करै अरझै सुरझै नहिं मिटत न एक द्वैत भीता की॥ जाकी ओर तनक हँसि हेरत करत सहाय राम जी ताकी। अग्रअली भजु जनकनन्दनी पाप भण्डार ताप रीता की॥

इति अष्टयाम प्रसंगः

दोहा—आँखहि देखत जगत को आँख बिना नहि कोय।
अन्तर बाहर सब जगह मित्र आँख ही होय॥

❀ श्रीमती सर्वेश्वरी श्री चारुशीला स्तुतिः ❀

जयति चारुशीला चरण शरण मोद भरण पुंज। अरुण बरण कमल रज पराग रस भ्रमर गुंज॥ सुजन हृदय बास करण सकल शोक ताप हरण। जनम मरण नसत रूप नवल धार रहन कुंज॥ श्री जानकी रमण बिहार मिलत कृपाते उदार। बिना चारुशीला कृपा रस कि रीति नहिं मिलंजु॥ श्री सर्वेश्वरि हमारि स्वामिनि बलिहारि जातु। अलि विहारिणी तिहारि कोर कृपा कीं करंजु॥

दोहा-चार द्वार युग सात आवरण कनक आवास। मध्य बाग बिच शैल गृह रंग महल है खास॥ रवि पावक शशि रंग कय खम्भावलि चहुँफेर। तीन आवरण महल सोइ रंग खण्ड नौ केर॥ फाटक मुख्यसु पूर्व है लघु दक्षिण हूँ जान। तिन भीतर मधि आगने कमल लक्ष दल मान॥ तापर हू त्रय मण्डलाकार—

खम्भ मनि रंग। मध्य कर्णिका पर पलँग राजत सिय पिय संग ॥ ध्यान सियावर नित्य यह पावै कृपा प्रसाद। श्रीहनुमत हिय रूप श्रीं चारुशिला अलहाद ॥ वेद प्राण कर तत्व यह सुनत जरै भव पाश। मन्त्र राज के अर्थ बिन कल्पि करै निज नाश ॥

झाँकी पद

श्री अग्र पद १२१—आज राम जानकी कृपालु सुन्दर सोहै। निरखत सुर नर वर मुनि शिव बिरंचि मोहै ॥ राम जी के शीश क्रीट रत्न जटित धारी। सिया जी के शीश फूल कोटि चन्द्र बारी ॥ राम जी के प्रीताम्बर धनुषबाण राजै। सिया जी के कर कमल मुद्रिका बिराजै ॥ राम जी के कुण्डल की काम कोटि शोभा। सिया जी के कर्णफूल राम को मन लोभा ॥ रामजिके उर सोहै मोतियन की माला। चारु हार रुचिर पहिरि जनक कुवरि बाला ॥ रामजिके कटि किंकिणि झुनुक २ बाजै। सिया जी के छुद्र घंटि मदन मन्त्र लाजै ॥ रामजि घनस्याम वर्ण छवि के अभिरामा। सिया गौर कनक वर्ण लाजत सत कामा ॥ सिया जी कि नख शिख छवि कहत नही आवै। कोटि शेष सारद श्रुति पार हू न पावै ॥ यही ध्यान हिय में रहत टरत नाहि टारयो। अग्र युगल चरण उपर बारि फेरि डारयो ॥

देखो रसिय पिय सँग राजत चारुशिला सुकुमारी ॥ शिर अर्ध-चन्द्र सिन्दूर, बर बिन्दू छबि भरपूर, लखिरति मान भयो अति दूर सारी नील रग जरतारी। देखो ॥१॥ झुकि रही चन्द्रिका

नीकी, मुसुक्यान मन्द सुख जीकी, है प्राण प्रिया सिय पी की, मिथिला सुनुजीत नृप बारी ॥ द्गकोर कृपारसभीनी कर नील पद्म बरलीन्ही, सर्वेश्वरि "अलि" सुख दीनी, बिहरत कनक भवन सुख कारी ॥

श्री अग्र पद १२२-देखो माई नवल कुँवर दशरथ को ॥ मणि मय जटित क्रीट अति सुन्दर गोरोचन को टीको । अम्बुज नयन नाशिका सुन्दर कुण्डल झलकत नीको ॥ मणिमय जड़ित हार अतिसुन्दर हीरा माणिक नीको । कलित ललित जरकसि को जामा आभूषण पुष्पन को ॥ उर सोहै मोतियन की माला भृगु लच्छन छबि नीको । कर कंकन बाजूबंध सोहैं धनुष बिराजत निको ॥ कटितूणीर बाणकर राजै कमल फिरा वत नीको । अग्रदाश भजु दशरथ नन्दन मोहत मन सबही को ॥

श्री अग्र पद १२३—हम चाकर रघुनाथ कुवँर के । यम के दूत निकट नहि आवत द्वादश तिलक देखि रघुवर के ॥ हौं अयाच्ययाचौ नहि काहु हि आश्रित रहौं नही सुर नर के । एकै आश और नहि ध्यावौं पायक भयो रावरे घरके ॥ लीन्हौ शैल सम्हारि नाम को लोक वेद सौ निजकरतर के । सुरनर मुनि इन्द्रादि देवता नाहिन और रावरे बर के ॥ अधम उधार लियो जन आपन सुनि सत वचन श्रवण सत गुरु के । अग्र सुदास पटा लिखि पायो दसखत दशरथ सुतके करके ॥

श्री अग्र पद १२४-राग जैति श्री-यह मोहि दीजै राघव राम। दासनदास दासको अनुचर कथा श्रवण मुखनाम ॥ मोक्ष आदि दै चार पदारथ मेरो नाहिन काम। चरण रेणु साधुन की शिर पर, कृपाकरो सुखधाम ॥ सन्तनसों अनुराग निरन्तर इहि बिधि बीतौ याम। अग्रदास चाहत हरि चरचा सुधा सिन्धु बिश्राम ॥

श्री अग्र पद १२५—बिलावल—

सरयू सरिता राज सवन ते पुरी शिरोमणि रामपुरी। वेदन हूँ बहु भेदन गाई महिमा जाकी अघट धरी ॥ शिव विरंचि सनकादिक नारद जपत व्यास जेहि घरी घरी। नाम उचार होत अघ न्यारे जीवन दुरमति दूर टरी ॥ जो कोउ बसत अयोध्या माही समसर ताहि न जात करी। सूकर कूकर सबै विष्णु पद आवत जात न अटक घरी ॥ जन्म भूमि राघो की प्यारी भुक्ति मुक्ति जँह गरी गरी। अग्र अहै को जो नहिं बाँछत बसत जहां सवदा हरी ॥

———

सब तजि अवधपुरी रहिये ॥ राम रूप हिय राम नाम मुख करि सेवा गहिये। मज्जन पान सदा सयूँ को सम दुःख सुख सहिये ॥ जहँ तहँ राम चरित सुनिये नित सहजहि सुख लहिये। श्रीराम चरन, रघुनाथ कृपाते नहि कछु फल चहिये ॥

———

रागइमनचौतारो-करत दोउ अरस परस शृँगार। गौरवरन तन राजकुमारी साँवल राजकुमार ॥ धरत चन्द्रिका क्रीट शिरनपर पहिरावत उरहार। अँखियन में अँजन आँजत जनु सान धरत

शर मार ॥ नकवेशर मोती जुसम्हारत दर्पन बदन निहार।
राम सखे या युगल रूप पर वार बार वलिहार ॥

राजत दर्पति कनक भवनमधि रघुवर जनक दुलारी । भूषण
बसन परस्पर सजि अँग लखत मुकुर करधारी । चपलासी
चहुँ ओर सहचरी सेवित नव सुकुमारी । रसिक अली तहँ
रस भरि तानन गान करति गुन वारी ॥

श्री अग्र पद १२६—बशोमेरे नैनन में सियाराम । कल्पवेलि
श्री जनकनन्दनी रघुनन्दन घनश्याम । ॥ राजत रतन जड़ित
सिंहासन जुगल जोड़ि अभिराम । अग्रअली निरखत यह
शोभा वारत कोटिन काम ॥

युगल छवि आज अनूप बनी । कनक भवन शृँगार कुन्ज में
बैठे बनी ठनी ॥ कोटिन सखि सहचरी अमित लिये ठाड़ी
सौंज घनी । रसिक अली उर यह समाज बशो लीला
ललित मनी ॥

कैसी जोड़ी बनी मन भावनियाँ । इधर तौ क्रीट औ कुण्डल
कि द्युति अनोखी है ॥ उधर भि चन्द्रिका चित्त चोरने में चोखी
है । वो रोरि दिये हैं भाल ये खौर केशर की ॥ इधर है नाशा-
मणि लटकि वाँह वेशर की । तापर मुसुकन अभी बरषावनियाँ ॥
कै०। रहन चलन हर एक बांका पन निराला हैं । बहम विलोक
कसाकस भि क्याहि आला हैं ॥ अनूप रूप है शोभा मनोहर
औ सुख धाम । (कि) जिन को देखि कें लज्जित हो जल गया
खुद काम ॥ दोउ चितवनि कि कहर मचावनियां । कैसी०

जबां सो कैसे हो बयाँ ये "रामजन" सुखमा । (कि) तीनों लोक में जिनकी कहीं नही उपमा । ये जी में आता है कि वश देखुँ इनकि सूरत कों । उठा के धरलुँ हिये बीच दोनु मूरत को ॥ भूलै कबहुँ न छबि ललचावनियाँ ॥ कैसी०

———

क्या खूब बनी है झाँकी मनमोहन रामसियाकी । दोउ बैठे रतन सिंहासन कर सोहै कमल सरासन यह सरबस जनक धिया की ॥ दोउ मूरति परम मनोहर शिवजी के अचल धरोहर । यह सम्पति हम सखियाँ की ॥ लखि राम सिया की जोरी रति पति की मति भई भोरी सिलि गये रतन अखियां की ॥ लखि रूप अनूप सुहावन भइ नेहलता अति धनधन क्या कहूँ छटा छबि याकी ॥

———

हो दोउ चन्दा बसो हिय मेरे—

सिय प्यारी श्री दशरथ नन्दन अरुण कमल कर कमलन फेरे । बैठे सुर तरु तर सिंहासन आस पाश ललना गन घेरे ॥ गरभुज माल परस्पर अरुझे चारुशिला मुख हँसि २ हेरे । श्री-प्रसाद सखि पान पवावति छत्र चँवर कर अलिगन घेरे ॥ बीण मृदंग साज युत कोउ अलि गान करति शौन्दर्य सुहेरे ॥

———

प्यारी तिहारी चन्द्रानन पर प्रीतम नैन चकोर कियेरी ॥ एक पलक टारन नहिं चाहत जोहत है भुज अँक लियेरी ॥ तृप्ति न मानत कबहुँ रसिक वर रूपसुधा रस पान कियेरी ॥ धनि-

धनि भाग सुहागिनि तेरो धनि यह सुख सरसात हियेरी ॥ सिया अली यह स्वाद महारस तेरे कृपाबिन कौन पियेरी ॥

———

पगे रहो दोऊ निज प्यारनमें ॥ अरुझि रहो सुरझो कबहूँ ना अरुझाओ हम कोऊ ॥ अधर सुधारस पीवो पिवावो टुक जूठन मोहि देऊ ॥ सिया अली मम प्राण के सरवश प्यार हमारि भिलेऊ ॥

———

क्या कहौं सुमुखी सलोनी बनि रहीं सिय श्याम की । नेह की पालक सदा दायक प्रणत बिश्राम की ॥ श्रीजनक नृपनन्दनी रघुवर प्रिया सुख कन्दनी । जग बन्दनी छवि गुण भरी वलि २ गई इस नामकी ॥शीश पर मौरी मनोहर चन्द्रिका छविधामकी। भाग की भाजन भली भाविक जनों के काम की ॥ जानकी जीवन जरी सी जानकी प्रिय राम की। देखि के छवि बिक गई ज्ञाना अली बिन दामकी ॥

———

सियजू रानिन में महारानी । और सबै रौतानी ॥ चितवतभौंह खड़ीं करजोरे इन्द्राणी ब्रह्माणी गौरा रचि २ पान लगावति, रमा खवावति आनी ॥ अठौ सिद्धि खड़ी कर जोरे नवनिधि मनहु विकानी । कोटिन ब्रह्माण्डन की प्रभुता रोमरोम अरुझानी जोमाथा एकै घाटे पर सबहि पियावत पानी। सोउ चाहत जाकी करुणा को बार २ सनमानी ॥ जाबिन पातौ हिलि न सकत जो सवघट माँह समानी । संत जनन की इष्ट देवता राम प्रिया जग जानी ॥

हमारी स्वामिनी वो हैं जो सब रानिन में महारानी। सदा सेवैं जिन्हैं सुरनारिनी निजकारिनी जानी ॥ धनद की छत्र लै छ जैं झलैं मुर्छल बरुन वाली। लिये वीणा शभा में जिनके गुन गावत हैं ब्रह्माणी ॥ रमाबीरी खवावत है उमालै इत्रकर लेपै। करैं रति हर्ष युत जिन्हके जरी जूती कि सेवकानी ॥ कहै हरिजन कहां तक है विदित सब श्रुति पुराणों में सकल। ब्रह्माण्ड की नायक वही है एक सुभदानी ॥

सिया जु के अरुणारे दोउ तरवा। मनो अनुरागिन के घरवा ॥ क्या गुलाव क्या कमल कटीलो क्या चढ़ लाल अनरवा। क्या कुसुम जल बुन्द परत ही बिगरत रँग निचरवा ॥ क्या मखमल क्या सिरस कलँगी क्या मालती पतरवा। इनके कोमलता के आगे क्या कपोत वट परवा ॥ उरध पदुम कल्पतरु अंकुश रेखन के उजियरवा। एक एक रेखन पर वारों त्रिभुवन को शृंगरवा ॥ जिनके धोवत डरत देवता जनु चुइ परत इतरवा। इनसे लगन नहीं तो बृथा दण्ड कमण्डल करवा ॥

सियजू तिहारो चरन। सुर नर मुनि सब करत बन्दन। तव पद पदुम सुमंगल करन। तेहि तजि जाय नहिं जिया की जरन ॥ यद्यपि अधम सब औगुन भवन। तदपि भरोषो तेरो करन भरन ॥ तव नाम अनुपम दुष्टन दलन। देत निज भक्ति सिया राम के चरन ॥ द्रबहु दयामयि तुव रामेश्वर जन। अब जनि करु देरि राखिले शरन ॥

जो मेरो अवगुण उर धारो। तौ मिथिलेश नन्दनी स्वामिनि कोटि कल्प नहि मोर उबारो॥ कौन सो क्रिया कीन्ह में नाहिन यह संसार असार पनारो। वेद विदित यह विरद तिहारो सीसी सिसकत नाम बिचारो॥ जो ब्रह्माण्ड कोटि के नायक प्रीतम राम स्याम छबि भारो। तब बश रहत सदा पिय नायक रसिक शिरोमणि छबि मतवारो॥ यह जिय देखि पेखि प्रभुता निज नाते मिथिला ओर निहारो। करुणा सिन्धु शील गुण सीमा दाशी युगल प्रिया न बिशारो॥

तव पद पदुम बिहाय न भरोष मोहि जोहि जिय लीजै सुधि मोरि सिया स्वामिनी। यदपि हों अधम मलिन अघ ओघ खानि तदपि काहाउँ मैंत तेरि सिया स्वामिनी॥ प्रभु हूते सरस क्षमादि शुभ गुण सिन्धु किरति वदति श्रुति तेरि सिया स्वामिनी। ताहि बल सोच छाड़ि नामलै उदर भरों निदरि गुणादि कृत केरि सिया स्वामिनी॥ करत अधिक क्षोभ तोपै आप प्राण नाथ जोपै रंच तोर दृग हेरि सिया स्वामिनी। तातें वार एकर जोरि मांगु दीनहोइ राखू निज चरण कि नेरी सियास्वामिनी द्रवत न कोशल कुमार तव नेह बिनु करें क्यों न कर्म योग ढेरि सिया स्वामिनी। जैहों नहि द्वार ते निकासे हूँपै दयानिधे साँचि गुण कहत हों टेरि सिय स्वामिनी॥ जोनें माया योगि ज्ञानी सिद्ध विधि सम्भु हूंलौं निज वश माहि किये जेरि सिया स्वामिनी सोउ तव भृकुटि बिलोकति रहति सदा चाहति कटाक्ष कृपा केरि सिया स्वामिनी॥ जनक दुलारी रघुबंश मनि प्राण

प्यारी अब जनि कीजै नेकु देरि सिया स्वामिनी नेहलता प्रीतम सो दीजिये धराय कर विगरि बनेगी तब मेरी सिया स्वामिनी ॥

=—=

शारद बिधुचय बिजित बरानन बिधुकर निकर सुहाशम् ।
मदन चाप जित भृकुटि कुटिल तिल सुमन मुक्त धृत नाशम् ॥
चारु जिबुक दर ग्रीव मनोहर स्वधर विम्ब प्रति भाषम् ।
मुकुर कपोल चिकुर चय चुम्बित नयन सरोज बिलासम् ॥
जनक सुता कर धृत पर नृत्यत ललित कण्ठ कृत गातम् ।
पद नूपुर रव रंजित दश दिशि उचरित ताल प्रमाणम् ॥
पश्य मुदा रघुनन्दन मतिशय चित्त चमत्कृत वेषम् । जनक सुता रंजित रति पति मद गंजन मंग मशेषम् ॥ रसिक भनित सीता पति गीतं ललित पदावलि नीतम् । सज्जन श्रुति सुखप्रद मिदमद्भुत मंचित लाल बिनीतम् ॥

यह प्यारी छबि पर बारियां ।
स्याम गौर सुन्दर मन भावन सोइ हिये बिच धारियाँ ॥
जनकलली रघुनन्दन दोऊ और सखी संग सारियां । रसिक अली के यह मन भावत और लगै सब खारियां ॥

बलिहारी युगल किशोर की ।
दशरथ सुत श्री जनक नन्दनी सुख सुखमा शिरमौर की ॥
अद्भुत शोभा निरखि परस्पर चितवत चित्त रस बोर की ।
रसिक अली बारत तन मन धन घन दामिनि मन मोरकी ॥

क्या सान चाल अलबेला गज लाज रहे मस्ते मस्ते। जिन देखा तिन के चित्त रतन अनमोल बिके सस्ते सस्ते॥ रस रूप माधुरी टपक रही सखि? जात रहे रस्ते रस्ते। रघुराज लला नृप नन्दनने मन छीन लिया हँस्ते हँस्ते॥

पिय प्यारे के नैंना, बड़े बाँके॥ चितवत ही घायल करि डारत पुरत न घाव मलग्ह टाँके। पल परत न चैना॥ ब०॥ छीन लेत कुल कानि छिनक में मारत मनहु मदनडाँके। सर बश हरि लेना॥ ब०॥ मद माते रसिकन रस रातेछबि छाके नहि उपमा के। मोहन मन मैना॥ ब०॥ जेहि मन 'मौन, लगै सोइ जानें मृदु मुसुकान झमकि झाँके। यह कासे कहुँ वेना॥ बड़े०॥

छवि अति बाँकि हमारे हिय बशि गई। तन घन स्याम लसत पीताम्बर जनु चमकन चपला कीट लिपटि कटि कसिगई॥ जिमि शशि ओर चकोर निरखि छबि बदन सुचन्द्र कला कि रूप रस फँसि गई। अंग अंग अवलोकि मधुर छबि कोटि मदन सुखमा की गरूरत खसि गई। मौन मुदित छबि अवध छयल की झमकि झरोखन झाँकी दृगन मग धसि गई॥

कल्याण-रघुवर बाँधे चुनरिया पाग। प्यारी कि सारि चुनरिया सोहै जरी किनारी लाग। मोतिन मय शिरपेंच कलँगी शीश फूल दुति जाग। रसिक अली यह युगल माधुरी दरस करत बड़भाग॥

खम्माच– बशो मेरे नयनन में सिया लाल। चपला घन कंचन मरकत दुति राजिब नैन विशाल ॥ कोटि २ रति मदन बिमोहन अद्भुत रूप रसाल। राजत कनक भवन में रसिकअलि संग रँगीली बाल ॥

देखिकै अरुझान्यो जियरा। राम कुमार स्यामसुन्दर वर हमहिं नहीं सब ही को हियरा। बन प्रमोद विच जनकलली संग अली सकल जुरि आई नियरा। युगल प्रिया यह छबि निरखन कों हिय बिच वारो सुरति को दियरा ॥

हेरनि हँसनि हमारो हरो हिया। बदन सुचन्द मधुर बिहँसनि मैं, जादू सा कछु डारो गजब किया ॥ नैन सरोज बान धनु भकुटी, चितवत हिय हनि मारो कतल किया। बेदरदी घायल मोहि करिके, फिर हँसि कस न निहारो न मारो जिया ॥ नाम रूप नित धाम निरन्तर, गावत सुयश तिहारो शरन लिया। रसिक चकोर चन्द्र छबि निरखैं, रूप सुधारस प्यालो पिलाय दिया॥ कृपा सुदृष्टि सदा रसिकन पर, दै दै नैन इशारो जिलाय लिया। मौन मुदित मन चरन कमल पर, तन मन सरबस वारो अवध पिया ॥

बिन देखे नयनवा ना मानै हो॥ जब से लखि दृग माधुरि मूरति रूप सुधा रस चसकाने हो। मुख सरोज मकरन्द पान करि जन मधुकर मन मस्ताने हो ॥ जिमि शशि ओर चकोर बिलोकत रूप सुधारस चसकाने हो। अहह सुजान राम पिय

तुम बिन कौन मौन मन की जानै हो ॥

अँखियन बिच तुम को चुराइ राखों । कोटि करो पिय जाने न देहौं हियरा से हियरा लगाई राखों ॥ मृदु मुसुकनि बांकी चितवनि में तन मन अपनो रंगाइ । राखों सिया अली के दोउ जीवन धन सब बिधि अपनो बनाइ राखों ॥

तोहि राखों पियरवा मैं केहि बिधि से ॥ दृग विच राखों हिया-तरसत है हिय बिच राखों नयन तरसै । एको बिधि धीरज नहिं आवत प्यारे बताओ मिलो कैसे ॥ दृग से दृगन मिलाओ साँवरे हिय हिय से मिलो गर गर से । सिया अली यहि भाँति मिलो जब दर्द निटे अँग अँग परसे ॥

कबित्त

राम भजन कोउ शाक्त हुये स्मृत्ति ज्ञान में धसे हुये । कोइ निगुर्ण ब्रह्म समझते हैं सुखमना साधना कसे हुवे ॥ कोउ अजपा को जाप करैं निर्जन एकान्त में बसे हुवे । जालिम हम हाय कहां जावैं तेरे जुल्फ जाल में फँसे हुवे ॥

अँखिया राम रूप अनुरागी ॥ श्याम वरन मन हरन माधुरी मूरति अतिप्रिय लागी ॥ सुन्दर बदन मदन सत शोभा निरखि निरखि रसपागी ॥ रतन हरी पल टरत न टारी परम प्रेम रँग रागी ॥

अँखिया रामरूप रसभीनी ॥ कोटि काम अभिराम श्याम घन निरखि भई लय लीनी ॥ लाक लाज कुल कानन

मानत नूतन नेह रँगींनी ॥ रतनहरी कैसे अवनिकसै होगइ ज्यों जल मींनी ॥

———

फन्द में फँसा आनिकै मनमोर किसी का। उलझन है कठिन इस में है क्या जोर किसी का ॥ खोजाती हैं उरलाज सदन की चिन्ता यह। नवनेंहका फल इस में नही सोर किसी का ॥ सन्सार कि सुधि कैसे के रही जात सखीरी। मिलजाय निराले में जो चित्तचोर किसी का ॥ मैं आज कदाचित जो किसी भाँति चले जाउ। फिर आके अबश दरस करू भोर किसी का ॥ हरिजन जो कहीं देखिपरै रूप अनूपम् । सच है नहि टरताहै दृगन कोर किसी का ॥

———

जानकि रमण रसिक मनि रघुवर रघुकुल भूषण प्यारो । अति सुँकुवार उदार ललित छबि मदन बिमोहन हारो ॥ सरद बिमल विधु निन्दत मुख छबि अमित कला उजियारो । रसिक अली पिय विहँसि बचन मृदु जनु बसि मन्त्र उचारो ॥

———

मन में बशीबश चाह यही प्रियनाम तुम्हारा उचारा करूँ । बिठलाके तुम्हैं मन मन्दिर में मनमोहनि मूर्ति मिहारा करूँ ॥ भरिके दृगपात्र में प्रेमकाजल पदपंकज नाथ पखारा करूं । बन प्रेम पुज्यारि तुम्हारा प्रभू नित आरति भव्य उतारा करूँ ॥ तुम आओ नआओ इहाँ तुमको निशिवासर ही में बुलायाकरूँ तेरे नाम कि माला बनाउँ सखे मन से मनको परकाया करूँ तेरे प्रेमि जनों का मैं प्रेमि बनों तेरे चाहने वालों को चाहा करूं। जिस पंथ से आओ गे आपप्रभो उस पंथ में पलक

बिछाया करूं ।। तुम जान अयोग्य बिसारो मुझे पर मैं न तुम्हें बिसराया करूं । गुनगान करूं नित ध्यान धरूं तुममान करो तो मनाया करूं ।।

क्या बुलाक अधरन पर हलकै ।

जबते दृष्टि परी या मूरति तबते छिन पल परत न पलकैं ।। किधों आशम शर शर सन्धान्यो की सुक्ष्मा की सर वर झलकै । सिया राम पिय मुख मयंक पर मनहु अमी की मूरति छलकैं ।।

कवन सहै चितवनि की चोटैं ।। करत विहाल ढाल नहि मानत गिनत नही कोटन की ओटैं ।। अंग २ दृग अनँग रंग बशि घायल परी भूमिपर लेटैं ।। सियाराम हिय वेधि नयन रस जान लिया जनपति के ढोटैं ।।

लगन लगी तब कौन करै डर । सब शंशय मिटि जात अलीरी, बदन बिलोक मीत अपनो कर ।। बून्द अकाश पपीहा चाहत यदपि भरे अगमन सरिता सर । करुणा भरे खरे घर वारे रोवत, सती चढै अपने सर ।। लोक लाज कुल कानि तवै लौ जबलौ प्रेम रशी न फंशीं गर । प्रेम सखी बलि झगड़ा कौन है, यह तन वेच्यो लवध छयल कर ।।

घुँघुरारे बार जिया लियारे । देखत दिल दरम्यान दखल दिया, जादू सा कछु किया रे ।। पिय २ रटत अटत आरत ह्वै

निशि दिन तलफत हियारे। सियाराम सस्मेर लगी उर घायल परी केति कन तियारे ॥
तनिकै हँसि हेरैरी राजकुमार। बुद्धि बौराय हिराय जाय मन, रहत न देह सम्हार ॥ दूरिहिते जाके तन ताके मदन भयो जरि छार। सो त्रिपुरारि भिखारि भेष धरि अलख जगाई द्वार ॥ सपनेहु निकट जाय नहिं कबहूँ माया मोह बिकार। सो भुसुण्डि शिशु चरित बिलोकत फँसे प्रेम की जार। सुनत बोल बिनुमोल बिकानी सारद सी हुशियार। रामशहाय जाय सोइ जानै अवध नगर कि बजार ॥

श्रीराम बधाई उत्सव

श्री अग्र पद १२७–आसावरी–आजु बधावो दशरथ रायकै जायो राजिव नैन। आये सुख के ऐन ॥ चैतमास नौमी उजि-यारी यह संयोग अनूप। लगन महूरत बार ग्रह चरन चिन्ह बड़ भूप ॥ बशिष्ठ आदि तपोधन धारीं कीन्हो यह निरधार। दुष्टनि दुखद सुखद सन्तन को भूमि उतारण भार ॥ घर २ तोरण धुजा पताका मुक्ता बन्दन वार। दूध पूत भरि नारि सुहागिनि साथिये लिखती द्वार ॥ चन्दन चौक रचित आगन में दधि अरु दूब बधावै। कनक थार सीपज, भरि अच्छत मिलि सँग मंगल गावै ॥ भू देवन कहँ भूमि बाजि गज धेनु रतन रथ देहि। पाइ लाग समदात नरेश्वर मुदित आशिका लेहि ॥ पँणव निशान मृदंग शंख धुनि जै जै शब्द उचार। कौतूहल कौशलपुर बासी आनन्द बढ़्यो अपार ॥ मागध सूत

भाट बन्दीजन दान मान बड़ पावैं । वर्णाश्रम अन्त्यज जे तन धरि फूले अंग न मावैं ॥ नृत्य गान वा जन्त्र वेद धुनि ठौर २ यह भनिये । लेहु २ यह कहत नगर में और श्रवन नहिं सुनिये ॥ सुरतरु काम धेनु चिन्तामणि कौशल्या सुत जायो । अग्रदास रघुपति के आनन्द में वांन्छित फल पायो ॥

१२८ श्री अग्र पद-राग आसावरी-देखि द्वार भूप दशरथ के सोभा कहत न आवैरी ॥ मूरति वन्त मुक्ति सिधि ठाढी भीतर जात लजावैरी ॥ मनिमय अजिर अनूप देखि छवि झाँक लेउँ सुत छावैरी ॥ कोटि काम शशि कोटि भानु दुति अमित तेज तन वारेरी । घुंघर वारे केश वदन पर चंचल अधिक सुहावेरी ॥ मनहु कलप तरु तेज तनक अलि मधुर सुधामद मातेरी । उज्वल भाल सुचक्षण ऊपर श्याम सुभग तन सोहैरी ॥ बरणों कहा विशाल नैन अतिता उपमा कहुँ नाहींरी । इन्दु बदन पर उडुप रहैं दोउ लोल मीन की नाइरी ॥ बगना कण्ठ बिराजत मानहु ऊपर सुभग निकाईरी । दुतिया चन्द अनन्द जानि कैं वन में देत दिखाईरी ॥ अरुण पीत सित हरित कु धनुई स्याम सुभग कटि सोहैरी । जलद घटा पर मनहु प्रगट भये इन्द्रधनुष मनमोहेरी ॥ कौशल्या की कूख कलप तरू राम चन्द्र फल लागेरी । पुण्य प्रभावते अगम अगोचर कौन सुकृत यह जागेरी ॥ शंकर शेष बिरंचि शारदा जिन्हि स्वरुप नहिं जानैरी । ताके गुण अलि अग्र दास कछु मति अनुमान बखानेरी ॥

श्री अग्र पद १२९--आसावरी-प्रगट भये दशरथ के रघुवर। महामहोत्सव मंगल घर घर॥ देखो आजु अवधपुर शोभा, नरनारी आनँद उरगोभा। सुनत सबै आतुर ह्वै धावैं, हरित दूव दधि नृपति बँधावैं॥ मोतियन चौक बधाओ गावैं, नव तरुणि साथिया बनावैं। ध्वजा पताका मण्डित घर घर, दिव्यदुकूल सुगन्ध सिंचिधर॥ घर अम्बर बाजैं बहु बाजें, मनहु महोदधि लहरी गाजै। विप्र वेद धुनि व्योमनि परसत, सुर संघट कुसुम्हानि अति वर्षत॥ भीर भूप घर अतिशै राजै, कोउ लेवै कोउ देवै काजै॥ भूमि बाजि गज विप्रन पाये, धेनु रतन अन बसन अघाये। याचक जन ता चरण जो आये, दान मान वान्छित फल पाये॥ कहत सबै धन वचन हमारे, चिरँजीवो ये पुत्र तुम्हारे। अग्र वधाई यह नित पावै, जन्म कर्म लीला गुन गावै॥

श्री अग्र पद १३० राग टोड़ी- राम जन्म आनन्द वधाई॥ सुरतरू सुधाधेनुचिन्तामणि मिलत परस्पर दूब बँधाई। प्रफुलित हृदय नगर बासिन के बाल वृद्ध सब बात सुहाई॥ भई भीर नाचे नर नारी बाजै बहुत गने नहि जाई। मंगल कलश चौक मोतियन के द्वारन बन्दन बार बँधाई॥ शिशु को वदन निहारी नारि सब वारति भूषण लेत बलाई। रतन गर्भ कौशल्या रानी धन्य भाग की करत बड़ाई॥ दशरथ राय न्हाय भये ठाढ़े कनक बसन अन्न धेनु मगाई। परम पुनीत बिप्र पद वन्दित दान मान जनु घन बर्षाई॥ मागध सूत भाट बन्दी जन अष्ट

सिधि नव निधि पाई। दशरथ सुत नित प्रतिहौं देखों अग्रदास के यहै जिय भाई॥

श्री अग्र पद १३१-ढाढ़ीपद रागपरज-तिहारो ढाढ़ी आयो हो रघुवंशी यजमान। जन्म २ ढाड़ी या घर को मान सहित दे दान॥ रबि अनरण्य इक्ष्वाकु अंग रघु धुंधुमार युबनाश। काकुथ सगर दिलीप भगीरथ गंगा अवनि प्रकाश॥ हरिकीरतिसम वंश बिशद अति मोमति जाय न जान। इन्द्रा सुत शारदा शेष सुर वेद पुरान बखान॥ सुत जायो सुनि पंगतिरथ के मोमन रंग रली। उपजीवी अज भूप द्वार को वारी सुफल फली॥ लछिमन भरत सत्रुहन सुन्दर नाम सकल गुन सार। धीर गम्भीर असैकरि मतिसो अतिहो शील उदार॥ मैं पाई सन्तनि मुख ग्रन्थनि सुनहु नृपति दै कान। जन्म न देख्यो रामचन्द्र को भूत भविष बर्तमान॥ वेद उधार कमठ करुणा कर धरणीधर त्रय नैन। हरष फरषधर, असुर बिमोहन बिग बचन सुनि जैन॥ ऋषि मष सन्त धर्म रखवारी कौशल्या सुत करिहैं। दुष्ट दमन करि बाँधि बारि निधि बिपति देव सब हरिहैं॥ भू कन रेणु वुन्द बर्षा की उडुगण है निरधार। गर्बित बचन सुनत ढाँढी को रघुपति गुणनि अपार॥ धर्म सार श्रुतिसार शिरोमणि कान्ति अधिक तन तेज। चरण चिन्ह सरवेश्वर के सब बिधि मनु रच्यो बन्धेज॥ ढाँढी अग्रदास दशरथ गृह याचत बारम्बार। साधू संगति कीरति तव सुत की रचो रहों दरबार॥

श्री अग्र पद १३२-राग टोड़ी सूर फागता—आज दशा दशरथ नृप की अति रानी रतनखानि कुषि खूली। सुनत सुधा बरष्यो त्रिभुवन में सन्त कमल श्रेणी हृद फूली॥ लछिमन भरत सत्रुहन सुन्दर प्रगटे राम सजीवन मूली। शिव विरंचि सुर शेष बींणधर गुण गण गान शारदा भूली॥ अष्ट सिद्ध नव निद्ध मुक्ति चतुर्धा अवध के द्वार द्वार अनुकूली। अग्रदास रघुनाथ जनमते मंगल अवर नहीं कोइ तूली॥

श्री अग्र पद १३३-राग गौरी—नृप दशरथ के पुत्र भये सुर पुर में बजत बधाई री॥ घर २ मंगल चार अवधपुर बन्दन-वार बधाई री। चतुर सखी मिलि साथियाँ दीन्हे बिधि सो सीख भराई री॥ चन्दन चौक रचित आगन में रतन जड़ित अँगनाई री। कृत कौतुक कौशलपुर बासी याचक अभर भराये री॥ अवधपुरी आनन्द भयो भर बांटत बहुत बधाई री। अग्रदास रघुवर के जनमत मन बांछित फल पाई री॥

श्री अग्र पद १३४-आसावरी-फूले फिरत अयोध्या बासी। सुन्दर सुत जायो कौशिल्या रामचन्द्र सुख रासी॥ घर घर बन्दन माल साथिया मोतिन चौक पुराये। नाचत गावत देत बधाई मनु घर २ सुत जाये॥ गली २ गज बाजि जहां तहँ हलका दिये तवेले। दान बहुत याचक जन थोरे कापै जात सकेले॥ दशरथ भूप भण्डार मुकर किये बन्दी अभर भरे। सपट सोलि ताही सों हमला ढोये ढेर धरे॥ सन्त कमल

सुख देन काज रबि राघव उदैं कर्यो । मुदित देव दुन्दुभीं बजावत निश्चर तिमिर हर्यौ ॥ देत अशीश नगर नारीनर चिरँजीवो रघुवीर । अग्रदास आनन्द अखिलपुर मिटी ताप तन पीर ॥

श्री अग्र पद १३५--लाल इन बोलन के बलि जैहौं । छोटे २ चरण धरत अति सुन्दर ठुमुकि ठुमकि हलरैं हौं ॥ कटि किंकिनि पग नूपुर बाजैं मधुरे शब्द सुनैहौं । सब बालक रघुबर छबि निरखत प्रेम प्रीति लपटै हौं ॥ घुंघर वारे अलक बदनपर मन्द-हसन सुख पैहौं । जाको ध्यान धरत ब्रह्मादिक सारद गान करैं हौं ॥ गोदराखि पय पान करावत दशरथ लेत बुलैहौं । यह छबि देखि मगन सुर मुनि भये रवि शशि कोटि लजैहौं ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गैहौं । अग्र-दास भजु दशरथ नन्दन दिन प्रति दिन अधिकैहौं ॥

श्री जानकी जन्म वधाई उत्सव

श्री अग्र पद १३६--अखिल लोक श्री उदय भई हैं जनक रामपुर जाई । निरउपम कन्या निमि कुलके सीता ऐसी नांई ॥ बरनत विदुष पार नहिं पावत बाँड़ी रही लजाई । जाके चरण कमल भव नौका नाहिंन आन उपाई ॥ निगम सार सामान सुयश जेहि कहत तपोधन आई । ब्रह्म रुद्र अजहूं पद आश्रित अग्र दास वलि जाई ॥

श्री अग्र पद १२७--ठुमुक २ चलत चाल जनक नन्दनी ॥

मधुर बचन तोतरे त्रयताप मोचनी ॥ सोहत नव नील बसन मन्द हास रुचिर दशन झलकत उर माल सकल देव बन्दनी ॥ बाजत पग नूपुर मनो शामबेद करत गान क्षुद्र घंटि रुचिर नाद उर अनन्दनी ॥ जगत मात सखिन संग विहरत बहु करत रंग अग्र अली निरखत छवि भवनिकन्दिनी ॥

श्रीमती सर्वेश्वरी जू की बधाई

बधइयाँ गुइयाँ हिलि मिलि गावो राज ॥ चन्द्रकान्ति जु कि कोखि सी रानीं, सुतासु जन्मी आज । सत्रु जीत नृप देत मुदित मन, पट भूषन गज बाज ॥ हरषि बुलाय २ याचकन विदुषन विप्र समाज । बाल अली, नौबत धुनि बाजहिं, जनु सावन घन गाज ॥

लखोरी मिथिला मोद भरी ॥ माधव शुक्ल पक्ष पूरन तिथि वासर चन्द्र धरी । चित्रा नखत लगन धन धनि वह धन्य सो धन्य घरी ॥ रानी चन्द्र कान्ति नृप अरिजित सुकृतकि वेलि फरी । जन्मी चारुशिला जू तिन की चन्द्र अली अनुचरी ॥

दोहा—अतिमाधुर्य स्वरूप सिय पिय पद पंकज प्रेम ।
गुन ऐश्वर्य स्वरूप श्री चारुशिला करु नेम ॥

हाय हमेशा हरदम निकशै विकसै बदन पियाशे हैं । प्याला सोक जोंक जालिम का कहर मिहर सम भाशे हैं ॥ आब अजूब खूब प्रीतम रुख सो सुख सहज प्रकाशे हैं । युगला नन्य शरन यह लच्छन वेगम हृदय हुलाशे हैं ॥

(पृष्ठ ७४ के छूटे हुये होली के पद)

सुनि आइरी आज मैं तो होरि किभनक। रंग डारोंगि वाहिपै जिनतोरयो है धनुष ॥ झूमि २ उठि दौरि महल ते केशरि रँग कुंकुमा कनक । खेलत राम जानकी के संग होति मधुर पिच्च कारि कि सनक ॥ कोइ कहै रँग डारो लखन पै कोइ कहै या खिलारि पै तनक। कोइ उमगि मुख मलत लाल के कोइ हँसत दै दै तारिकि ठनक ॥ अति आनन्द होत यहि पुर में उड़त गुलाल अगर कि सलक। तुलसिदाश धनि २ राजा दशरथ धनि २ हैं मिथिलेश जनक ॥

अनुजन संग लिये होरी खेलत राम उदार ॥ गृह २ ते बनिता वनि आई कीन्हे विविध श्रृंगार ॥ कुम २ अगर अबीर गुलालन संगलिये बहु भार ॥ उत रघुबीर सखा वनि आये रंग भरे पिच-कार ॥ एक ओर मिथिलेश कुमारी उत अवधेश कुमार ॥ खेलहि फाग झुमुटि दोउ दिशि ते काहुहि सुधि न सम्हार। वर्षहि रंग अवीर गगन धुनि बाजन गान अपार ॥ एक सखी होइ सखा रामढिग आइ, 'सुनहु मत सार'। रामचरन मुख चूमि परानी हँसि रहे राज कुमार ॥

डफबाजी जनक दुलारी की ॥ डफ बा० ॥ नवसतसातसजी सब सखियाँ नव योवन मतवारी की ॥ ड० ॥ झपटि लपटि सब सखा भगाये धूम मचाई गारी की ॥ ड० ॥ राजकुँकार को पकड़ि मगाई जीत लिखाई प्यारी की ॥ ड० ॥ कृपानिवाश रसीली अँखियाँ रसिकजनन रसकारी की ॥

परीं मेरो स्याम सनेही मेरे बश अनुराग। अधरामृत दै गल भुज मेलो खेलोंगी सँगफाग॥ कुचनि गुलाल लालपर डारों उरझौं मनमथ जाग॥ नैनन की शैनन सौं छिरकौं प्रगट करौं सब लाग॥ पिय के शीश उढाउब चूंदरि मैं जुधरों शिर पाग। लाल नचाऊं अपने आगे में गाऊँ हँसि राग॥ जोइ जोइ कह्यों कियो सिय प्यारी भारी भरि है सुहाग। कृपा निवास महासुख निरखत सखियाँ सराहत भाग॥

सँइयाँ जाने न पै हौ डारो न मो पर रंग। श्री मिथिलेश ललौ जु कि अलि सब, आनि जुरी यक संग॥ सुनि सँकु-चाय रँसाय दृगन दृग बोलत बचन उमंग। काह करेगी बिपुल नारि लगि जाओ हमारे अंग॥ कण्ठ लगाय भिजाय भिजे रंग बाढ्यो परस्पर जंग। युगल प्रिया यह पाग अनोखी लखि रति पति मद भंग॥

स्याम मुख रंग कि बूंद ढरी। मानहु काम कसौटी ऊपर कंचन की कस परी॥ अलकें चुवें मनो घन माला रस अनुराग भरी। कृपा निवास अली गण अँखिया सियवर रूप अरी॥

खम्माच--होरि के खिलारि रंग डारो न रसिया॥ चुनरि भिजोइ मोरि चटक छबीलि किय कहां लों सहूँगि तेरी नित नई हँसिया॥ धरि झकझोरि मोरि मोति लर तोरि प्यारे। ऐसि बरजोरि रोरि भरत दृगन मोरि, ताहूँपै मारत तकि चिल-

बनि गँसिया ॥ शुभगा सलोनि चारुशिला अतिशीला अलीं। सौज तयारि सारि कियो है सुन्यारी न्यारी ॥ तहाँ जीत पावो तब जानू में तुम्हारो बल, ज्ञाना अली खैलैं पिय प्यारी छबि लशिया ॥

———

मोसों नाहक करि बरजोरी लालन होरी खेलींहो ॥ में कोउ हेतु अकेलि गलि गइधरि कर करहि मरोरी हो । विनय बरजि तरजो नहि मानैसान्यो मुख में रोरी हो ॥ लाज नहीगुरु जन पुर जन तोहि अवमें काह करौंरी हो । कोविद कवि ढवि होरि नहीं यह २ है भोरा भोरी हो ॥

———

होरि के दिनन में रोष नकरिये मानो जि मानो मेरि बात । लखि न सुनी यह रीति अली हम खेलत में खुनसात । बिनय करत रघुलाल सँवरो पद गहि हाहा खात । सींचिय सुघर शिरोमनि सियजू पिय पादप कुमिलहात । मृदु हँसि हेरनि वंक बिलोकनि शंकनि पिय कदरात । सनमुख आवत हमसों अलियुग जोरत कर जलजात । सखि मुख पिय की विनय सुनत सिय मृदु वच करि मुसुकात । रसिक अली रस रंगभरी पिचकारि दई पिय गात ।

———

सखीरी काह कहूमें अवधकेछैला छली । जात रही सयू जल भरने मिलि गये बीच गलीं । लैकर कंज गुलाल मजे से मेरे मुख में मली । मधुर अली महबूब वली सों कछु नहि जोर चली ॥

सारी भीज गई पिय डारों न मोपर रंग । सींतभरी कम्पत तन मेरो दीजै गल भुज संग ॥ लखि ललचाय ललकि लै प्यारी

खेलत नवल उमंग । रसिक अली सुन्दर मनि रघुवर बाजत मृदु रव चंग ॥

री वह पीरो न जानत अँखियन भरत अबीर ॥ मुसुकावत धरि नरम कलाई खेंचत धरि २ चीर ॥ झकझोरत मोहि पकरि २ अँग मारत तकि दृग तीर ॥ मोहनि छिन २ अंक भरत है कसि कसि के बेपीर ॥

खेलैं राघोजि तियन विच होरी हो । लाल गुलाल भरे तन सोहत मरकत शैल अरुन परस्योरी ॥ बिथुरे कच आनन छबि राजत चन्द चहूं दिशि राहु फिरयोरी । कर कंचन पिचका अस सोहत जनु अहि मनि मुख लै निकस्योरी ॥ पकरि तियन मुख रंग मेलत जनु राहु अतन लै शशि झगरयोरी । रसिक अली यह रूप सुधानिधि जानि अछै मन मीन फँस्योरी ॥

साँबरो होरी खेलन आवै । रँग पिचकारि छिपाय बसन में औचक आनि भिजावैं ॥ या अबधेश को छयल नयो सखि कर गहि कम्प बढ़ावैं । रसिक पिया भरि आँख अबीरन अट पट बैन सुनावैं ॥

पिचकारि तिहारि रंगदार लला जू जनि डारो मोपै । सी उपजावत कम्प बढ़ावत रहत न देह सम्हार ॥ अमित हजारा से छवि छूटत कसकत हृदय हमार । रसिक पिया दृग चोट चलावैं सुन्दर राजकुमार ॥

1864

॥ इति श्री अग्र स्वामी जी कृत पदावली सम्पूर्णम् ॥